15वां अंक

# अभिव्यक्ति

वार्षिक हिंदी पत्रिका

अंतर्राष्ट्रीय
श्री अन्न वर्ष
2023

## भोजन में पौषक(मोटे)अनाज अपनाएं
## सदैव स्वस्थ तंदरुस्त तन-मन पाएं

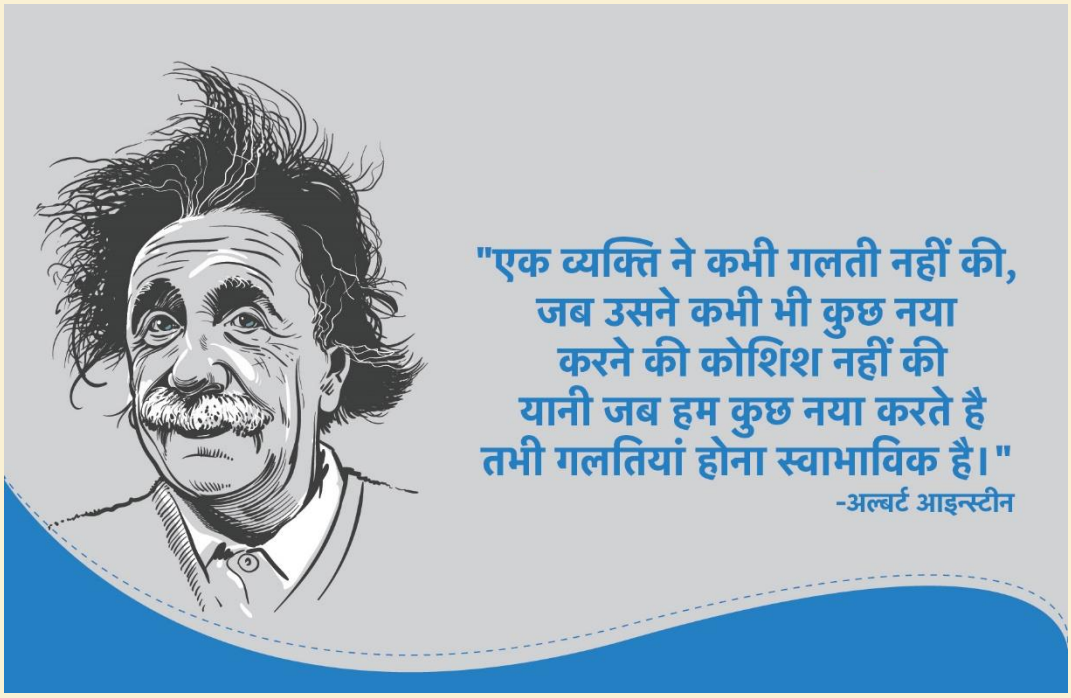
"एक व्यक्ति ने कभी गलती नहीं की,
जब उसने कभी भी कुछ नया
करने की कोशिश नहीं की
यानी जब हम कुछ नया करते है
तभी गलतियां होना स्वाभाविक है।"
-अल्बर्ट आइन्स्टीन

# अभिव्यक्ति

**अंक- पंद्रहवां, वर्ष- 2023**

**संरक्षक**

विवेक खनेजा

**संपादक**

डॉ. करूणेश अरोड़ा

डॉ. आरती नूर

सुनीता अरोड़ा

**सह संपादक**

ओम प्रकाश शर्मा

**कवर डिजाइन**

मुकुंद कुमार रॉय

**विशेष सहयोग**

नवीन चन्द्र

**प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं, उनसे सी-डैक, नोएडा और संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।**

**प्रगत संगणन विकास केन्द्र (सी-डैक)**

अनुसंधान भवन, सी-56/1, सैक्टर-62, नोएडा- 201309

फोन: 0120-2210800, ई-मेलः hindicellnoida@cdac.in

# इस अंक में


**विशेषांक लेख**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1 | अंतरराष्ट्रीय श्री अन्न वर्ष 2023 | : | मुकुंद कुमार रॉय | 8 |

**तकनीकी लेख**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 2 | डार्क पैटर्न | : | वी. के. शर्मा, डॉ. आरती नूर | 12 |
| 3 | ई-रक्तकोश | : | आस्था राय, डॉ. मधुरेन्द्र कुमार | 19 |
| 4 | परियोजना प्रबंधन प्रणाली | : | शालू गुप्ता | 26 |
| 5 | सेमीकंडक्टर पारिस्थितिकी तंत्र: चुनौतियाँ और पहल | : | सौरिश बेहेरा | 32 |
| 6 | जेनरेटिव एआई और उसके अनुप्रयोग | : | बबिता | 39 |
| 7 | ग्राफिक डिज़ाइन | : | रितेश कुमार सिंह | 43 |
| 8 | स्प्रिंग और स्प्रिंग बूट में अंतर | : | हिमानी गर्ग | 47 |
| 9 | वेबसाइट डिजाइनिंग | : | रितेश कुमार सिंह | 49 |
| 10 | प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण | : | तुषार अग्रवाल | 52 |

**गैर-तकनीकी लेख/कहानी**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 11 | एच.एम.वी. के ग्रामोफोन पर रिकॉर्ड किए गए पहले शब्द कौन से थे? | : | प्रीति राज़दान | 53 |
| 12 | 12वां विश्व हिन्दी सम्मेलन | : | ओम प्रकाश शर्मा | 56 |
| 13 | आधुनिक भारत | : | रवि कुमार सिंह | 58 |
| 14 | दही की कीमत | : | अनिल कुमार | 60 |
| 15 | कर्मो का फल | : | ललिता रावत | 61 |
| 16 | भारत की सुन्दरता एवं लेखक रस्किन बॉन्ड | : | राजेश नेगी | 63 |
| 17 | महिलाओं की समाज में भूमिका | : | प्रियांशी | 67 |
| 18 | बहुभाषी शिक्षा के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग चुनौतियां और अवसर | : | ओम प्रकाश शर्मा | 70 |
| 19 | सामाजिक मीडिया का युवाओं पर नकारात्मक प्रभाव | : | नितेश कुमार | 72 |
| 20 | भारतीय संस्कृति | : | संजय कुमार | 76 |
| 21 | जीवन का संदेश | : | राज | 77 |

**कविता**


| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 22 | एक देवी | : | एडमिरल के. एस. नूर | 78 |
| 23 | योग का महत्व | : | राजेन्द्र सिंह भंडारी | 79 |
| 24 | अनमोल वचन | : | सुदेश शर्मा | 80 |
| 25 | माँ | : | अनिल कुमार | 81 |
| 26 | उसकी अहमियत बताना भी ज़रूरी है | : | संजय कुमार | 81 |
| 27 | असहनशीलता का राग | : | सुदेश शर्मा | 82 |
| 28 | चंद्रयान | : | चन्द्र मोहन | 83 |
| 29 | सफलता की आधारशिला | : | नवीन चन्द्र | 84 |
| 30 | नारी सशक्तिकरण | : | राम बिलास चौधरी | 85 |


**श्रद्धांजलि**


| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 31 | बिरजू महाराज | : | ओम प्रकाश शर्मा | 86 |
| 32 | राजू श्रीवास्तव | : | सुनीता अरोड़ा | 88 |


**राजभाषा कॉर्नर**


| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 33 | सी-डैक, नोएडा में राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन संबंधी रिपोर्ट- वर्ष 2022-23 | : | नवीन चन्द्र | 90 |
| 34 | विभिन्न गतिविधियों की चित्रमय झलकियां | : | - | 93 |
| 35 | बच्चों की किलकारियां | : | - | 96 |


♦♦♦

## संरक्षक की कलम से

# संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हिन्दी पखवाड़ा 2023 के अवसर पर सी-डैक, नोएडा द्वारा गृह पत्रिका "अभिव्यक्ति" के 15वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह कथन अतिशयोक्ति नहीं कि किसी भी संस्थान की गृह पत्रिका वहां पर कार्यरत कर्मचारियों की रचनात्मकता को प्रदर्शित करने का एक सशक्त मंच एवं प्रभावी माध्यम होती है। हिन्दी में मौलिक लेखन को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से इस केन्द्र द्वारा वर्ष 2009 से निरंतर वार्षिक हिन्दी पत्रिका "अभिव्यक्ति" का प्रकाशन किया जा रहा है।

भारत अनेकता में एकता एवं अनेकों समृद्ध भाषाओं वाला देश है, परन्तु राजभाषा हिन्दी इन सभी भाषा-भाषियों, जनता और सरकार के बीच एक संपर्क भाषा के रूप में कार्य करती है। स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान भी आम जन मानस को एक साथ जुड़ने में हिन्दी भाषा ने एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी। भाषा की लोकप्रियता व सम्मान उसके निरंतर प्रयोग से बढ़ता है। इसके लिए हमें आसान एवं आम बोलचाल के शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। राष्ट्रीयता का बोध कराने में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भाषा हमारी अस्मिता से भी जुड़ी होती है। यह हमारे भावों, हमारी अभिव्यक्तियों और संवेदनाओं को प्रकट करने का एक सशक्त माध्यम भी है।

मैं, गृह पत्रिका "अभिव्यक्ति" के 15वें अंक के प्रकाशन पर इसके संपादन एवं प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को उनके सराहनीय प्रयास के लिए बधाई देता हूँ और आशा करता हूं कि "अभिव्यक्ति" का यह अंक पिछले अंकों की तरह रोचक और ज्ञानपरक होगा और कर्मचारियों को मूल हिन्दी लेखन के लिए प्रेरित करेगा।

शुभकामनाओं सहित,

विवेक खनेजा
कार्यकारी निदेशक
सी-डैक, नोएडा

♦♦♦

# संपादकीय

राष्ट्रीयता का बोध कराने में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भाषा हमारी अस्मिता से जुडी होती है। यह हमारे भावों, हमारी अभिव्यक्तियों और संवेदनाओं को प्रकट करने का एक सशक्त माध्यम भी होता  है। आज जब हम "एक भारत - श्रेष्ट भारत" की बात करते हैं तो इसके पीछे वे समस्त कारक कार्य करते हैं जिनका योगदान भारत को श्रेष्ठ एवं उन्नत बनाने में है और इसमें कोई संदेह नहीं कि भाषा भी उनमें एक कारक है। जब तक हम भाषाई शीत युद्ध लड़ते रहेंगे तब तक श्रेष्ठता की ऊंचाई को हासिल नहीं कर सकते। इसके लिए हमें भाषाई रूप से एक होना पड़ेगा तभी हम श्रेष्ठता की सीढियों पर चढने में सक्षम हो पाएंगे। इसकी शुरुआत हमारे सरकारी प्रशासन तन्त्र में शामिल हमारे अधिकारी और कर्मचारी कर सकते हैं और इस बात का संदेश दे सकते हैं कि हमारे अंदर भाषा को लेकर किसी प्रकार का अंतरद्वंद नहीं हैं। यह कार्य थोड़ा कठिन अवश्य है किन्तु असंभव नहीं है, क्योंकि सदियों की औपनिवेशिक मानसिकता आज भी हमारे मानस पटल पर हावी है। यह प्रकृति का नियम भी है कि लंबे समय तक यदि हम किसी चीज के अभ्यस्त को जाते हैं तो उस चीज या अभ्यास को छोड़ पाना आसान कार्य नहीं होता है।

हमारे देश का संघीय ढांचा संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल सभी 22 भाषाओं का सम्मान करता है। एक भाषा को राष्ट्रव्यापी स्वरूप प्रदान करना किसी दूसरी भाषा का असम्मान करना बिल्कुल नहीं है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम राजभाषा के महत्व को समझें क्योंकि एक भाषा तो ऐसी अवश्य होनी चाहिए जो संपूर्ण देश को एक सूत्र में बांध सके।

सी-डैक, नोएडा एक वैज्ञानिक संस्था होने के साथ एक प्रगतिशील एवं विकासोन्मुख संस्था है, जिसने मानवीय भावनाओं को सांस्कृतिक एवं भाषाई प्रयासों द्वारा संपदन शील रखा है। इस पत्रिका के माध्यम से व्यक्तित्व का विकास करना हमारा प्रयास रहा है। हमें आशा है कि आपको यह अंक पसंद आएगा। इस अंक में शामिल रचनाओं द्वारा इस केन्द्र के कर्मचारियों ने अपनी रचनात्मक प्रतिभा को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। हमारा मानना है कि नए उभरते रचनाकारों के प्रयासों से यह पत्रिका अपने उद्देश्यों को हासिल करने में अवश्य सफल होगी।

आपसे यह भी आग्रह है कि इस अंक के बारे में अपने सुझावों और प्रतिक्रियाओं से हमें अवश्य अवगत कराएं ताकि हम इस पत्रिका के आगामी अंकों को आपकी अपेक्षाओं के अनुरूप बना सकें।

शुभकामनाओं सहित,

- संपादक

♦♦♦

# अंतरराष्ट्रीय श्री अन्न वर्ष 2023

- मुकुंद कुमार रॉय,
प्रधान तकनीकी अधिकारी

खाद्य सुरक्षा चुनौतियों, जलवायु परिवर्तन और टिकाऊ कृषि पद्धतियों की बढ़ती आवश्यकता से जूझ रही दुनिया में, "अंतरराष्ट्रीय श्री अन्न वर्ष" की घोषणा इन मुद्दों पर विचार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। श्री अन्न, जो कि छोटे बीज वाले अनाजों का एक समूह है, सदियों से दुनिया भर के कई समुदायों के आहार में मुख्य भोजन रहा है। उनकी क्षमता को पहचानते हुए, संयुक्त राष्ट्र ने 2023 को अंतरराष्ट्रीय श्री अन्न वर्ष (International year of Millets) घोषित किया, जिसमें इन अनाजों से हमारे भोजन और हमारे भूमंडल को होने वाले अनगिनत लाभों पर प्रकाश डाला गया।

**श्री अन्न क्या है?**

श्री अन्न अत्यधिक पौष्टिक अनाजों के समूह के लिए एक सामान्य शब्द है जिसमें पर्ल मिलेट (बाजरा), फिंगर मिलेट (रागी), बार्नयार्ड मिलेट (सामा), सोरघम (ज्वार), कोदो मिलेट (केद्रव), लिटिल मिलेट (कुटकी), प्रोसो मिलेट (चीना), फॉक्सटेल मिलेट (कंगनी) और कई अन्य शामिल हैं। ये अनाज विभिन्न जलवायु परिस्थितियों के लिए अपनी उल्लेखनीय अनुकूलन क्षमता के लिए जाने जाते हैं, जो उन्हें शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में खेती के लिए उपयुक्त बनाता है, जहां अन्य फसलों का उत्पादन नहीं होता है।

सदियों से, श्री अन्न अफ्रीका, एशिया और यूरोप के कुछ हिस्सों में आहार का मुख्य भाग रहा है। उनके लचीलेपन, तेजी से विकास और न्यूनतम पानी की आवश्यकताओं ने उन्हें "स्मार्ट फसलें" और "जलवायु-स्मार्ट अनाज" का खिताब दिलाया है। दुनिया में जहां जलवायु परिवर्तन तेजी से कृषि उत्पादकता को प्रभावित कर रहा है, “श्री अन्न” खाद्य सुरक्षा के लिए आशा की किरण बनकर आया है।

**पोषण पावर हाउस**

अंतरराष्ट्रीय श्री अन्न वर्ष के पीछे प्रमुख कारणों में से एक इन अनाजों की प्रभावशाली पोषण प्रोफ़ाइल है। श्री अन्न प्रोटीन, फाइबर, विटामिन और खनिज सहित आवश्यक पोषक तत्वों से

भरपूर है। वे ग्लूटेन-मुक्त हैं, जो उन्हें सीलिएक रोग या ग्लूटेन संवेदनशीलता वाले लोगों के लिए उपयुक्त बनाता है। इसके अतिरिक्त, श्री अन्न में ग्लाइसेमिक इंडेक्स कम होता है, जो उन्हें रक्त शर्करा के स्तर को प्रबंधित करने के लिए एक उत्कृष्ट विकल्प बनाता है।

उनकी पोषण संरचना कई स्वास्थ्य लाभ प्रदान करती है। उदाहरण के लिए, श्री अन्न मधुमेह, हृदय रोग और मोटापे जैसी पुरानी बीमारियों के जोखिम को कम करने में सहायता कर सकता है। इसके अलावा, उनकी उच्च फाइबर सामग्री पाचन में सहायता करती है और तृप्ति की भावना को बढ़ावा देती है, जो स्वस्थ वजन प्रबंधन में योगदान करती है।

**पर्ल मिलेट (बाजरा)**

**बार्नयार्ड मिलेट(समा)**

**लिटिल मिलेट (कुटकी)**

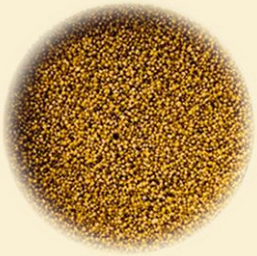

**फॉक्सटेल मिलेट (कंगनी)**

**सोरघम (ज्वार)**

**कोदो मिलेट (केद्रव)**

**प्रोसो मिलेट (चीना)**

**फिंगर मिलेट (रागी)**

**श्री अन्न की खेती के लाभ**

श्री अन्न कई कारणों से एक स्थायी विकल्प है:

- **कम जल निर्भरता:** चावल और गेहूं जैसी प्रमुख मुख्य फसलों की तुलना में श्री अन्न को काफी कम पानी की आवश्यकता होती है। यह विशेषता पानी की कमी का सामना करने वाले क्षेत्रों में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।
- **जलवायु परिवर्तन के प्रति लचीलापन:** श्री अन्न कठोर फसलें हैं जो सूखे और उच्च तापमान सहित कठोर पर्यावरणीय परिस्थितियों का सामना कर सकती हैं। यह अनुकूलनशीलता उन्हें बदलते माहौल में एक आदर्श विकल्प बनाती हैं।
- **जैव विविधता संरक्षण:** श्री अन्न की खेती पारंपरिक फसल किस्मों और स्थानीय पारिस्थितिकी प्रणालियों को संरक्षित करके जैव विविधता को बढ़ावा देती है। यह मोनोकल्चर खेती पर दबाव को भी कम करता है, जो अक्सर कीटनाशकों और उर्वरकों के उपयोग से जुड़ा होता है।
- **मृदा स्वास्थ्य:** श्री अन्न मिट्टी उर्वरता को बढ़ाकर और सिंथेटिक उर्वरकों की आवश्यकता को कम करके मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार करता है।

**अंतरराष्ट्रीय श्री अन्न वर्ष**

2023 को अंतरराष्ट्रीय श्री अन्न वर्ष के रूप में घोषित करना दुनिया भर की सरकारों, नीति निर्माताओं, किसानों और उपभोक्ताओं के लिए उपयुक्त बढ़ावा देने के लिए आह्वान है। इसका उद्देश्य श्री अन्न के पोषण और पर्यावरणीय लाभों के बारे में जागरूकता बढ़ाना और उनके उत्पादन और खपत को प्रोत्साहित करना है।

**सरकारों और नीति निर्माताओं के लिए:**

- **अनुसंधान और विकास को बढ़ावा दें:** अधिक पैदावार और पोषण सामग्री के लिए श्री अन्न की किस्मों को बेहतर बनाने के लिए अनुसंधान में निवेश करें।
- **सब्सिडी और प्रोत्साहन:** श्री अन्न की खेती को प्रोत्साहित करने के लिए किसानों को वित्तीय प्रोत्साहन और सब्सिडी प्रदान करें।

- **शिक्षा और जागरूकता:** उपभोक्ताओं को श्री अन्न के पोषण मूल्य और टिकाऊ कृषि में उनकी भूमिका के बारे में सूचित करने के लिए शैक्षिक अभियान विकसित करना।

**किसानों के लिए:**

- **फसल विविधीकरण:** मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार और कीटों के दबाव को कम करने के लिए श्री अन्न को फसल चक्र में एकीकृत करने पर विचार करें।
- **प्रशिक्षण और सहायता:** किसानों को श्री अन्न की खेती के अनुकूल बनाने में सहायता करने के लिए प्रशिक्षण और संसाधन प्रदान करें।

**उपभोक्ताओं के लिए:**

- **आहार विकल्प:** श्री अन्न के पोषण मूल्य का लाभ उठाने और टिकाऊ कृषि में योगदान देने के लिए इसे अपने आहार में शामिल करना चाहिए।
- **स्थानीय बाज़ारों को सपोर्ट करें:** छोटे पैमाने के किसानों की सहायता देने और टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देने के लिए स्थानीय बाज़ारों से पोषक अनाज-आधारित उत्पाद खरीदें।

अंत में, अंतरराष्ट्रीय श्री अन्न वर्ष खाद्य सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन और सार्वजनिक स्वास्थ्य सहित दुनिया की कुछ सबसे गंभीर चुनौतियों का समाधान करने का एक अनूठा अवसर प्रदान करता है। पोषक अनाज, अपनी पोषण समृद्धिता से न केवल उपभोक्ताओं को अपितु कृषि एवं पर्यावरण को भी समृद्ध करने की क्षमता रखता है। हमारे आहार और कृषि पद्धतियों में श्री अन्न को शामिल करना न केवल एक स्वस्थ भविष्य की दिशा में एक कदम है, बल्कि एक अधिक टिकाऊ और लचीले विश्व के प्रति प्रतिबद्धता को भी दर्शाता है।

♦♦♦

**हिन्दी हमारी मातृभाषा है, मात्र एक भाषा नहीं।**

# डार्क पैटर्न

- वी. के. शर्मा, वरिष्ठ निदेशक
- डॉ. आरती नूर, वरिष्ठ निदेशक

आज साइबर सिक्यूरिटी के बारे में सिर्फ जानना ही जरुरी नहीं रह गया है बल्कि ये हमारे जीवन में अब दैनिक कार्यो की तरह जुड़ गई है। अपने आप को साइबर अटैक से सुरक्षित रखने के लिए साइबर सिक्यूरिटी दिशा-निर्देशों या नियमों का पालन करना अनिवार्य हो गया हैं, चाहे वो हमारे मोबाइल या उन पर चलने वाली ऐप्स, कंप्यूटर डेस्कटॉप या लैपटॉप हो। सायबर अटैक से बचने के लिए सरकार की तरफ से समय समय पर विभिन्नं दिशा-निर्देश दिए जा रहे हैं, परन्तु हम जितनी अधिक सावधानी बरत रहे हैं, उतना ही सायबर अटैकर (Cyber attacker) नई-नई विधियां ढूंढ़ते जा रहे हैं। आजकल साइबर हमले का एक नया तरीका काफी प्रसिद्ध हो रहा है जिसे हम डार्क पैटर्न कहते हैं।

**क्या है डार्क पैटर्न**

डार्क पैटर्न एक यूजर इंटरफेस है जो जान बुझकर सावधानी के साथ इस तरह बनाया या तैयार किया जाता हैं ताकि यूजर उसे प्रयोग करने के लिए बाध्य हो जाएं। उदाहरण के तौर पर ढका या छिपा हुआ विज्ञापन, जबरन निरंतरता, छिपी हुई लागत (Hidden Cost), मूल्य तुलना पर रोकथाम, गलत दिशा में ले जाना आदि।

कुछ कंपनिंया डार्क पैटर्न का उपयोग ग्राहकों को लुभाकर, उन सामान या सेवाओं के भुगतान करने के लिए अनैतिक रूप से प्रेरित करती हैं जिनके लिए वो आमतौर पर पैसे खर्च नहीं करना चाहते! यानि डार्क पैटर्न कुछ इस तरह से डिजाईन किया जाता हैं जो उपयोगकर्ता को गुमराह करने या उन्हें कुछ ऐसा करने के लिए प्रेरित करते हैं जो वो नहीं करना चाहते तथा बदले में डिजाईन नियोजित करने वाली  कम्पनी या प्लेटफार्म को लाभ पहुंचाता हैं।

डार्क पैटर्न इंटरनेट उपयोगकर्ता के अनुभव को खतरे में डालता है, उन्हें बड़ी फर्म के द्वारा वित्तीय और डाटा शोषण के लिए अधिक संवेदनशील बनाता है। यह यूजर (user) को भर्मित करता है, ऑनलाइन (online) बाधाएं लाता हैं, सरल कार्यो को समय लेने वाला बनाना, अवांछित

सेवा या उत्पादों को लेने के लिए जबरन साइन-अप (Sign-up) करता हैं, उन्हें अधिक पैसा देने या उनकी इच्छा के विरुद्ध अधिक वैयक्तिगत जानकारी देने के लिए विवश करता है।

**उदाहरण**

ऑनलाइन खरीददारी के लिए आधारित उलटी गिनती, बारीक़ प्रिंट में शर्ते जो लागत में वृद्धि करती हैं, रद्करण (Cancelation) बटन को देखना या क्लिक करना कठिन बनाना, विज्ञापन को समाचार रिपोर्ट या सेलिबिरिटी के रूप में दिखाना, वीडियो को ऑटोप्ले करना, नि:शुल्क परीक्षण पर हस्ताक्षर करने के लिए उपयोगकर्ता को खाता बनाने के लिए विवश करना, और उसके बाद चुपचाप क्रेडिट कार्ड से चार्ज करना और जिन सूचनाओ को यूजर को पता होना चाहिए उन्हें फीके रंग का उपयोग करके छुपाना आदि।

**कंपनियों द्वारा डार्क पैटर्न का उपयोग**

अमेज़न प्राइम सब्सक्राइबर को भ्रामक बहु चरणीय रद्दीकरण प्रक्रिया (Multi step cancelling process) के लिए यूरोप में आलोचना का सामना करना पड़ा तथा बाद में वर्ष 2022 में, Amazon ने उपभोक्ता विनियमन से बात करके रद्द करने की प्रक्रिया को आसन बनाया। सोशल मीडिया में यूजर को प्रभावशाली लोगो से अकसर अनचाहे प्रायोजित संदेश प्राप्त होते हैं।

YouTube, user के popup साथ you tube प्रक्रिया के लिए signup करने को बाध्य करता है।

डार्क पैटर्न कई प्रकार के होते हैं। जैसे:

**1. प्रलोभन और स्विच (Bait and Switch)**

जब नकली डेटा या जानकारी सामने रखी जाती है, तो वह उपयोगकर्ता के हित की बात करता है। जब उपयोगकर्ता रुचि दिखाता है और क्लिक करके आगे बढ़ता है - तो जानकारी या डेटा पूरी तरह से बदल जाता है। बैट और स्विच एक ऐसी युक्ति है जिसका उपयोग व्यवसाय आमतौर पर अधिक क्लिक प्राप्त करने के लिए करते हैं। बैट और स्विच डार्क UX (User Experience) का एक उदाहरण विंडोज-10 डायलॉग बॉक्स है, जहां एक्स (X) पर क्लिक करने से अपग्रेड शुरू हो जाता है।

**2. छुपी कीमत (Hidden Costs)**

जब किसी उत्पाद या सेवा के लिए एक विशिष्ट कीमत प्रदर्शित की जाती है, और उपयोगकर्ता द्वारा चेकआउट के साथ आगे बढ़ने पर कीमत आश्चर्यजनक रूप से बढ़ जाती है (कर और वितरण शुल्क)।

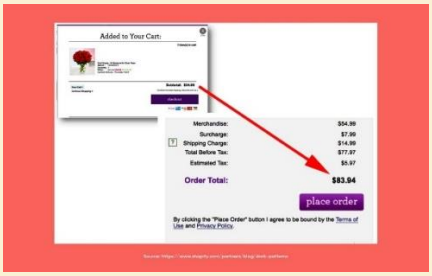


**3. जबरन निरंतरता (Forced Continuity)**

जब आपको, अपने कार्ड का विवरण जोड़कर, अपना निःशुल्क परीक्षण (Free Trail) शुरू करना होता है, या किसी वेबसाइट या ऐप का उपयोग जारी रखने के लिए, आपको अपना ईमेल दर्ज करना होता है। जबरन निरंतरता में इन स्वार्थी हथकंडों को छोड़ने का कोई विकल्प नहीं है।

**4. कन्फर्म शेमिंग (Confirm Shaming)**

जब पॉप-अप प्रतियां किसी उपयोगकर्ता के साथ छेड़छाड़ करने और उसके दिमाग के साथ खेलने की कोशिश करती हैं - तो परिणाम कन्फर्म शेमिंग होता है। उदाहरण के लिए

**5. प्रच्छन्न विज्ञापन (Disguised Ads)**

प्रच्छन्न विज्ञापन एक काला पैटर्न है, जहां वेबसाइट या ऐप पर एक विज्ञापन बैनर उपयोगी सामग्री के समान दिखता है जिसे उपयोगकर्ता ढूंढ रहा है और बाद में गलत तरीके से क्लिक कराकर यह महसूस कराता है कि उन्हें स्पैम किया गया है।

चालीस प्रतिशत उपयोगकर्ता किसी विज्ञापन पर इसलिए क्लिक करते हैं क्योंकि वह दिलचस्प लगता है, जबकि 34 प्रतिशत उपयोगकर्ता गलती से किसी विज्ञापन पर क्लिक कर देते हैं। - हबस्पॉट

इस तरह की झूठी प्रथा का सबसे बड़ा डार्क पैटर्न उदाहरण सॉफ्टपीडिया द्वारा अपनाया गया था, जहां विज्ञापन सॉफ़्टवेयर डाउनलोड करने के लिए कॉल-टू-एक्शन बटन के समान दिखते थे। ऐसे गलत बटनों पर क्लिक करना आम बात थी, जिससे उपयोगकर्ता भ्रमित और डरकर घबरा जाते हैं।

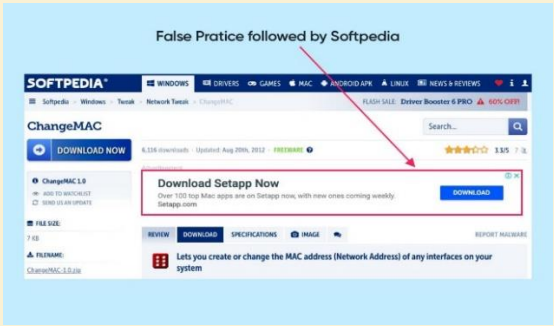


**6. रोच मोटल (Roach Motel)**

किसी भी एप्प के लिये आपका प्रवेश एक-दो चरणों वाली आसान प्रक्रिया है, जो इसे सार्थक बनाती है। हालाँकि, बाहर निकलना श्रमसाध्य और असंभव है। उदाहरण के लिए, सदस्यता लेना

आसान है, लेकिन जब सदस्यता रद्द करने की बात आती है - तो विकल्प न तो मिलते हैं और न ही खोजने योग्य होते हैं।

**7. इरादे से ज्यादा मांगना**

किसी उपयोगकर्ता से उसके बताने के इरादे से अधिक व्यक्तिगत जानकारी मांगना इस वर्ग में आती हैं। यह डार्क यूएक्स (UX) पैटर्न मे "अपने उपयोगकर्ताओं को जानने" “knowing your users” के नाम से ऑनलाइन मौजूद है।

**8. भय उत्पन्न करना**

इस प्रकार के डार्क डिज़ाइन पैटर्न में, उपयोगकर्ता को सदस्यता या फीचर चयन से ऑप्ट-आउट न करने का सुझाव दिया जाता है यह कहकर कि क्योंकि इससे नकारात्मक परिणाम हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, फेसबुक “INTRUSIVE DEFAULT SETTINGS” और "भ्रामक शब्दों" “MISLEADING WORDINGS.” पर निर्भर करता है। उदाहरण : FACEBOOK उपयोगकर्ताओं को "चेहरे की पहचान" (FACIAL RECOGNITION) सुविधा को अक्षम (DISABLE) न करने की चेतावनी देता है क्योंकि इससे कोई अन्य उपयोगकर्ता आपका प्रतिरूपण (IMPERSONATING) कर सकता है।

**9. सामाजिक प्रमाण**

जब आप उपयोगकर्ता के कार्यों और व्यवहार को अन्य समान उपयोगकर्ताओं (भुगतान किए गए या इन-हाउस सदस्यों) की सफलता की कहानी बताकर प्रभावित करते हैं जिन्होंने उसी तर्ज पर काम किया। अधिक विज़िटर्स लाने और खरीदारी बढ़ाने के लिए ब्रांड अक्सर वेबसाइटों और सोशल मीडिया पर ऐसी सामग्री का प्रचार करते देखे जाते हैं।

**10. छूट जाने का डर Triggering Fomo (Fear of Missing Out)**

यह ई-कॉमर्स वेबसाइटों पर अधिक प्रचलित है जहां उपयोगकर्ता को खरीदारी कार्रवाई शुरू करने के लिए "केवल कुछ ही बचे हैं" बताया जाता है। ऑर्डर वॉल्यूम बढ़ाने के लिए आज लगभग हर ई-कॉमर्स ऐसा व्यवसाय करता है।

## डार्क पैटर्न अवैध हैं

अमेरिका में विधान मंडल के नेताओं ने ऑनलाइन व्यवसायों द्वारा "डार्क पैटर्न" के उपयोग पर प्रतिबंध लगाने के लिए एक बिल्कुल नए कानून का खुलासा किया है। यह एक ऐसा कानून है जो 100 मिलियन से अधिक उपयोगकर्ताओं वाले ऑनलाइन व्यवसायों के लिए मान्य है। Warner's DETOUR ऑनलाइन उपयोगकर्ताओं को कम करने के लिए भ्रामक अनुभव (Deceptive Experiences To Online Users Reduction) ACT के अनुसार इसको एक अवैध प्रैक्टिस बताया हैं, जो निम्न करने का प्रयास करते हैं:

"उपयोगकर्ता की स्वायत्तता, निर्णय लेने या सहमति या उपयोगकर्ता डेटा प्राप्त करने के विकल्प को अस्पष्ट करना, विकृत करना या ख़राब करना।"

हाल ही की एक रिपोर्ट (Recent Report) के अनुसार, कैलिफ़ोर्निया में, जो व्यवसाय डार्क पैटर्न का उपयोग करना जारी रखते हैं, उन्हें अपनी वेबसाइट का डिज़ाइन बदलने या आगे की सजा का जोखिम उठाने के लिए 30 दिन की विंडो मिलेगी। यदि कोई कंपनी अनुपालन नहीं करती है, तो कानून कहता है कि वह "अटॉर्नी जनरल द्वारा लाई जाने वाली कार्रवाई में अनुचित प्रतिस्पर्धा से संबंधित कानूनों के तहत नागरिक दंड के लिए उत्तरदायी होगी।"

darkpattern.org वेबसाइट है जो "हॉल ऑफ शेम" (Hall of Shame) नामक एक अलग अनुभाग को सपोर्ट करती है, जहां वे ट्वीट के रूप में कई ब्रांडों द्वारा डार्क पैटर्न गतिविधियों को सूचीबद्ध करते हैं।

## डार्क पैटर्न को कैसे पहचाने व इससे बचें

सामान्यतः डार्क पैटर्न का डिजाईन ऐसा होता है कि उन्हें आसानी से नहीं पहचाना जा सकता हैं इसलिए हमेशा इंटरनेट का प्रयोग करते हुए सावधान रहना पड़ता हैं।

- कभी भी आपको ऐसा लगे की Signup करना आसान हैं बनस्पत रद्द करने के तो यह एक डार्क पैटर्न हो सकता हैं इसलिए आप उसे उसी वक्त छोड़ दें।

- पॉप अप के लिए सावधान निर्देशों का सावधानी से पढ़े खासकर जो फीके रंग या बहुत छोटे लिखे हैं।
- भारतीय विज्ञापन मानक परिषद (Advertising Standareds Council of India (ASCI) ने जून, 2023 में डार्क पैटर्न उपयोग के लिए दिशानिर्देश जारी किए हैं जो 01 सितंबर, 2023 से लागू होगें।
- केंद्र सरकार ने ऑनलाइन कंपनियों से डार्क पैटर्न का उपयोग न करने का आग्रह किया। यह पत्र Amazon, Flipkart, Paytm Mall, Snapdeal, Reliance Retail Ltd. (AJIO), TataCliq, BigBasket, Urban Ladder, Grofers, Swiggy, Nykaa, 1mg.com, Jio Platforms Ltd, IndiaMart, PharmEasy,UrbanClap, Zomato सहित 26 ई-कॉमर्स कंपनियों को भेजा गया है।

यदि किसी उपभोक्ता को डार्क पैटर्न का सामना करना पड़ता है, तो वे राष्ट्रीय उपभोक्ता हेल्पलाइन (NCH) 1915 पर कॉल करके या 8800001915 पर व्हाट्सएप संदेश के माध्यम से सूचित कर सकते हैं। पर सबसे अधिक आवश्यकता इंटरनेट उपयोग करते समय सावधान रहने की है।

स्रोत:https://www.netsolutions.com/insights/dark-patterns-in-ux-disadvantages/

♦♦♦

जिस देश को अपनी भाषा और अपने साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।

- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

# ई-रक्तकोश

## (हम हर किसी तक पहुंच बनाने और जीवन बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं)

- आस्था राय, संयुक्त निदेशक
- डॉ. मधुरेन्द्र कुमार, परियोजना प्रबंधक

ई-रक्तकोश का उद्घाटन 7 अप्रैल 2016 को तत्कालीन माननीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री, श्री जे. पी. नड्डा द्वारा किया गया। ई-रक्तकोश पोर्टल की सहायता से 'रक्तदान अमृत महोत्सव' प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन 17 सितंबर, 2022 पर शुरू हुआ जहा एक लाख से अधिक लोगों ने रक्तदान किया, जिसके फलस्वरूप यह एक दिन के दान का "विश्व रिकॉर्ड" बन गया।

ई-रक्तकोश राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार की पहल के अंतर्गत सी-डैक द्वारा विकसित किया गया है। यह केंद्रीकृत प्रणाली भारत में रक्त संबंधी सभी सेवाओं के लिए आधिकारिक पोर्टल और एप है। यह एक व्यापक मंच के रूप में कार्य करता है जिसका उद्देश्य पूरे देश में रक्तदान, संग्रह, परीक्षण, भंडारण और वितरण की पूरी प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करना है। इसे दान किए गए रक्त के कुशल उपयोग को सुनिश्चित करने और जरूरतमंद रोगियों के लिए सुरक्षित रक्त की उपलब्धता बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह प्रणाली विभिन्न ब्लड बैंकों, अस्पतालों और स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं को एक नेटवर्क में एक साथ जोड़ती है, नागरिकों को निकटतम रक्त बैंक पूछताछ, रक्त बैंक स्टॉक पूछताछ, शिविर अनुसूची पूछताछ जैसी निर्बाध संचार और समन्वय की सुविधा मिलती है।

ई-रक्तकोश से जुड़ने के बाद ब्लड बैंक की सारी सूचनाएं पारदर्शी हो गई है। अभी तक ब्लड बैंक का सभी कार्य मैनुअली ही होता था। इसमें लापरवाही की आशंका ज्यादा रहती थी। इसके अलावा रिकार्ड में गड़बड़ी होने की भी आशंका बनी रहती थी, लेकिन अब ऐसा नहीं हो पाएगा। ई-रक्तकोश से जुड़ने के बाद कोई भी व्यक्ति कहीं भी जाकर रक्तदान कर सकता है और कोई भी जरूरतमंद शीघ्रता से जल्द और सही समय पर उपलब्ध ब्लड (खून) की जानकरी हासिल कर सकता है।

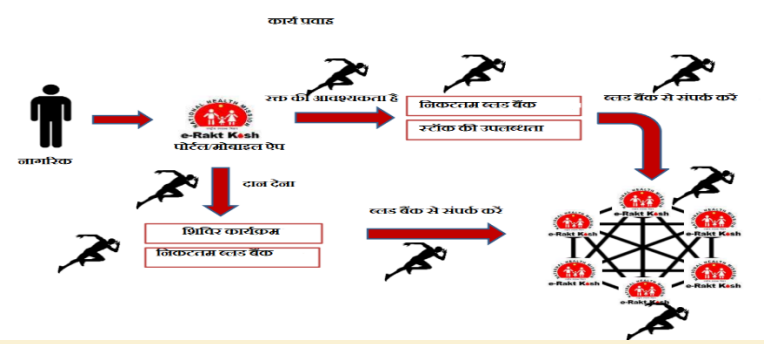


कार्य प्रवाह आरेख का उपयोग करते हुए ई-रक्तकोश

ई-रक्त कोश ड्रग एंड कॉस्मेटिक एक्ट, राष्ट्रीय रक्त नीति मानकों और दिशानिर्देशों को उचित संग्रह और दान सुनिश्चित करता है, प्रभावी प्रबंधन और राष्ट्र की आवश्यकता के लिए दान किए गए रक्त की गुणवत्ता और मात्रा की निगरानी करना जो देश के लोगों को महत्वपूर्ण स्वास्थ्य स्थिति में जीवन बचाने में मदद करता है।

यह मुख्य उद्देश्यों में सुरक्षित और पर्याप्त रक्त की आपूर्ति सुनिश्चित करना, टर्नअराउंड समय कम करना, रक्त के अपव्यय को रोकना, पेशेवर दाताओं को प्रतिबंधित करना, रक्त बैंकों की नेटवर्किंग और दाता डिपॉजिटरी शामिल हैं।

ई-रक्तकोश में रक्त दान जीवन चक्र के प्रबंधन के लिए छह प्रमुख घटक हैं, जिसमें दाता के स्वास्थ्य के आधार पर दाताओं की पहचान, ट्रैकिंग और अवरुद्ध करने के लिए जैव मीट्रिक दाता प्रबंधन प्रणाली, डोनर हिस्ट्री आदि शामिल है।

यह परिभाषित प्रक्रियाओं और नियमों के अनुसार रक्त समूहीकरण, टीटीआई स्क्रीनिंग, एंटीबॉडी स्क्रीनिंग, घटक तैयारी आदि जैसी सुविधाएँ प्रदान करता है।

यह कई रक्त बैंकों में रक्त स्टॉक पर नज़र रखने के लिए एक केंद्रीकृत रक्त सूची प्रबंधन प्रणाली के रूप में कार्य करता है।

यह दुर्लभ रक्त समूह दाता रजिस्ट्रियों की पीढ़ी और नियमित रूप से दोहराने वाले दाताओं की पीढ़ी में भी मदद कर सकता है।

आज कल ई-रक्तकोश दाता और रोगी जीवन को प्रभावित कर रहा है क्योंकि इस नए डिजिटल चैनल के साथ संचार आसान है, जिससे दाता और रोगियों के बीच पुल अंतर को कम करने में सहायता मिलती है। अब ये दृष्टिकोण अधिक से अधिक महत्वपूर्ण रोगी जीवन की रक्षा कर रहा हैं।

**ई-रक्तकोश महत्वपूर्ण सेवा विवरण**

**1. ब्लड बैंकों में ब्लडस्टॉक**

ब्लड बैंकों में उपलब्ध ब्लड स्टॉक की स्थिति के बारे में यहां से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। यहां आप राज्यवार, जिलेवार, ब्लडग्रुप, रक्तघटक जैसे प्लेटलेट्स आदि की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इसमें आप सरकारी ब्लड बैंक के बारे में भी जानकारी हासिल कर सकते हैं।

**2. रक्तदान शिविर**

रक्तदान शिविरों के लिए देखें और पंजीकरण करें।

**3. ब्लड बैंकों से संपर्क**

इसके माध्यम से आप निकटतम ब्लड बैंकों से संपर्क कर सकते हैं। साथ ही ब्लड स्टोरेज यूनिट के बारे में पता कर सकते हैं। यही नहीं आप ब्लड बैंक या अस्पताल के बारे में भी पता कर सकते हैं।

**4. रक्तदान के लिए ई-पास**

केन्द्र सरकार ने रक्त दान करने वालों के लिए ई-पास बनवाने का विकल्प दिया है। यदि आपको कभी जरूरत पड़े तो रक्त दान के लिए ई-पास बनवा सकते हैं। इससे अस्पताल या ब्लड बैंक जाकर जरूरतमंदों को रक्तदान कर सकते हैं। रक्तदान के लिए बने ई-पास इस्तेमाल दूसरे कार्यों के लिए नहीं किया जा सकता है।

**5. दाता प्रबंधन**

दाता प्रबंधन सेवा दाता के समग्र कार्यप्रवाह को संभालती है यानी दाता पंजीकरण, शारीरिक परीक्षण, दान, जलपान विवरण, दाता प्रतिकूल प्रतिक्रिया, दाता जनसांख्यिकीय संशोधन, बार कोडित लेबल जनरेशन आदि।

6. **रक्त भंडार प्रबंधन**

यह सेवा घटक पृथक्करण, लेबलिंग और स्थानांतरण, बैग रद्द करना और उनके कारणों के साथ त्यागना, रक्त आरक्षित करने का प्रावधान, अपशिष्ट उत्पादन आदि को संभालती है।

7. **रिपोर्ट**

इस सेवा का उपयोग सिस्टम से डोनर मास्टर रजिस्टर, इश्यू रजिस्टर, कैंप विवरण, क्रॉस मैच रजिस्टर आदि जैसी विभिन्न रिपोर्ट तैयार करने के लिए किया जाता है।

**ई-रक्तकोश का हमारे दैनिक जीवन में प्रभाव**

1. **केंद्रीकृत डेटाबेस:** ई-रक्तकोश रक्त दाताओं, रक्त बैंकों और विभिन्न रक्त प्रकारों की उपलब्धता के बारे में जानकारी के केंद्रीकृत भंडार के रूप में कार्य करता है। यह सटीक और अद्यतन डेटा बनाए रखने में मदद करता है, जिससे उपलब्ध दाताओं के साथ रक्त आवश्यकताओं का मिलान करना आसान हो जाता है।
2. **बेहतर पहुंच:** ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म अस्पतालों और रोगियों के लिए वास्तविक समय में रक्त की उपलब्धता के बारे में जानकारी प्राप्त करना आसान बनाता है। यह आपात स्थिति होने पर त्वरित प्रतिक्रिया और रक्त इकाइयों का कुशल आवंटन सुनिश्चित करता है।
3. **रक्त की बर्बादी में कमी:** ई-रक्तकोश की मदद से, ब्लड बैंक अपनी रक्त सूची को बेहतर ढंग से प्रबंधित कर सकते हैं, रक्त की बर्बादी को कम कर सकते हैं और यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि रक्त इकाइयों का उपयोग उनकी समाप्ति से पहले किया जाता है।
4. **उन्नत दाता प्रबंधन:** यह प्रणाली स्वैच्छिक और नियमित रक्त दाताओं का एक डेटाबेस बनाने में मदद करती है, जिसका उपयोग समय पर दान के लिए उन तक पहुंचने के लिए किया जा सकता है। यह अधिक संख्या में लोगों को स्वैच्छिक रक्तदान अभियान में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करता है।

5. **पारदर्शिता और जवाबदेही:** ई-रक्तकोश वास्तविक समय डेटा प्रदान करके रक्तदान और वितरण की प्रक्रिया में पारदर्शिता लाता है। यह कदाचार की संभावना को कम करता है और रक्त बैंकों और दान केंद्रों के बीच जवाबदेही सुनिश्चित करता है।
6. **तेज़ और कुशल रक्त अनुरोध:** जब किसी अस्पताल को रक्त की आवश्यकता होती है, तो सिस्टम मेल खाने वाले दाताओं या रक्त इकाइयों की त्वरित और आसान पहचान करने में सक्षम बनाता है। इससे देरी कम होती है और आपात स्थिति के दौरान जीवन को बचाने में मदद मिलती है।
7. **स्वास्थ्य देखभाल लागत बचत:** रक्त सूची को अनुकूलित करके और बर्बादी को कम करके, स्वास्थ्य सेवा संस्थान रक्त आपूर्ति के प्रबंधन से जुड़ी लागत को कम कर सकते हैं।

**ई-रक्तकोश तक पहुंच के लिए भारत सरकार की पहल**

**1. डिजिटल इंडिया अभियान:** भारत सरकार द्वारा शुरू किए गए डिजिटल इंडिया अभियान का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि ऑनलाइन बुनियादी ढांचे में सुधार और इंटरनेट कनेक्टिविटी को बढ़ाकर सरकारी सेवाएं नागरिकों को इलेक्ट्रॉनिक रूप से उपलब्ध कराई जाएं। यह पहल डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देकर और वंचित क्षेत्रों में इंटरनेट पहुंच का विस्तार करके ई-रक्तकोश जैसे प्लेटफार्मों की पहुंच को सुविधाजनक बनती है।

**2. अभिगम्यता दिशानिर्देश:** सरकार ने अभिगम्यता दिशानिर्देश या मानक स्थापित किए है जिनका ई-रक्तकोश सहित डिजिटल प्लेटफार्मों को पालन करना होगा। इन दिशानिर्देशों में उपयोगकर्ता इंटरफ़ेस डिज़ाइन, सहायक प्रौद्योगिकियों के साथ संगतता और कई भाषाओं के लिए सपोर्ट करना जैसे पहलू शामिल है।

**3. प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण:** सरकार स्वास्थ्य पेशेवरों, रक्त बैंक कर्मचारियों और संभावित दाताओं को ई-रक्तकोश का प्रभावी ढंग से उपयोग करने के बारे में शिक्षित करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम और कार्यशालाएं आयोजित कर सकती है। ये कार्यक्रम डिजिटल कौशल बढ़ाने और मंच के लाभों के बारे में जागरूकता बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करती है ।

**4. स्थानीय आउटरीच:** यह सुनिश्चित करने के लिए कि ई-रक्तकोश ग्रामीण या दूरदराज के क्षेत्रों में व्यक्तियों के लिए सुलभ है, सरकार ने मंच का उपयोग करने के लिए व्यावहारिक सहायता और मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए स्थानीय सामुदायिक संगठनों, गैर सरकारी संगठनों और स्वास्थ्य केंद्रों के साथ साझेदारी करती है।

**5. मोबाइल ऐप विकास:** ई-रक्तकोश का एक मोबाइल ऐप संस्करण उपलब्ध है, क्योंकि मोबाइल डिवाइस अधिक व्यापक रूप से उपयोग किए जाते हैं और आबादी के एक बड़े हिस्से के लिए अधिक सुलभ हैं।

**6. अनुवाद और स्थानीयकरण:** सरकार देश भर में विविध भाषाई आबादी की जरूरतों को पूरा करने के लिए ई-रक्तकोश प्लेटफॉर्म को विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद करने में निवेश कर करती है।

**7. जन जागरूकता अभियान:** सरकार ने नागरिकों को ई-रक्तकोश मंच, इसके लाभों और इस तक पहुंचने के तरीके के बारे में सूचित करने के लिए जन जागरूकता अभियान शुरू किया है। ये अभियान विभिन्न मीडिया चैनलों के माध्यम से चलाए जा रहा है।

**8. मौजूदा स्वास्थ्य देखभाल पहल के साथ एकीकरण:** ई-रक्तकोश को मौजूदा स्वास्थ्य देखभाल पहल या कार्यक्रमों में एकीकृत किया जाता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि यह स्थापित स्वास्थ्य देखभाल नेटवर्क के माध्यम से व्यापक जनसाधारण तक पहुंचे।

**9. प्रोत्साहन और मान्यता:** सरकार रक्त दाताओं और स्वास्थ्य देखभाल पेशेवरों को ई-रक्तकोश मंच में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए प्रोत्साहन या मान्यता कार्यक्रम शुरू किए है।

**ई-रक्तकोश भविष्य का दायरा**

**1. उन्नत डेटा एनालिटिक्स और पूर्वानुमानित मॉडलिंग:** प्लेटफ़ॉर्म उन्नत डेटा एनालिटिक्स और पूर्वानुमानित मॉडलिंग क्षमताओं को शामिल करने के लिए विकसित हो सकता है। ऐतिहासिक डेटा और रुझानों का विश्लेषण करके, ई-रक्तकोश रक्त आपूर्ति और मांग पैटर्न की भविष्यवाणी करने में मदद कर सकता है, जिससे आपात स्थिति और चरम मांग अवधि के दौरान बेहतर तैयारी संभव हो सकेगी।

**2. कृत्रिम बुद्धिमत्ता और स्वचालन:** कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) का एकीकरण रक्त इकाइयों के आवंटन को अनुकूलित करने, कमी की भविष्यवाणी करने और दाता अनुस्मारक, नियुक्ति शेड्यूलिंग और इन्वेंट्री प्रबंधन जैसी कुछ प्रक्रियाओं को स्वचालित करने में सहायता कर सकता है।

**3. सार्वजनिक जागरूकता और शिक्षा:** मंच रक्तदान के महत्व के बारे में सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाने और एक स्वस्थ दाता आधार बनाए रखने में भूमिका निभा सकता है। अधिक लोगों को स्वैच्छिक रक्तदान में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए शैक्षिक अभियान और आउटरीच प्रयासों को एकीकृत किया जा सकता है।

**4. वैश्विक सहयोग:** डिजिटल रक्त प्रबंधन प्रणाली की अवधारणा अन्य देशों में भी इसी तरह की पहल को प्रेरित कर सकती है। सहयोगात्मक प्रयासों और ज्ञान साझा करने से रक्तदान और वितरण के लिए अंतरराष्ट्रीय मंचों का विकास हो सकता है।

**ई-रक्तकोश से कैसे जुड़ें**

**https://www.eraktkosh.in / Download Mobile App - eraktkosh**

**1. Blood Donate**

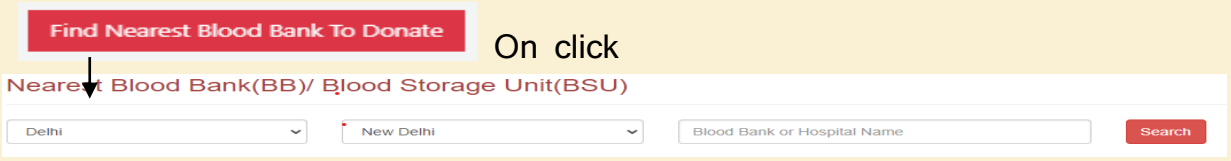


**2. Blood Storage**

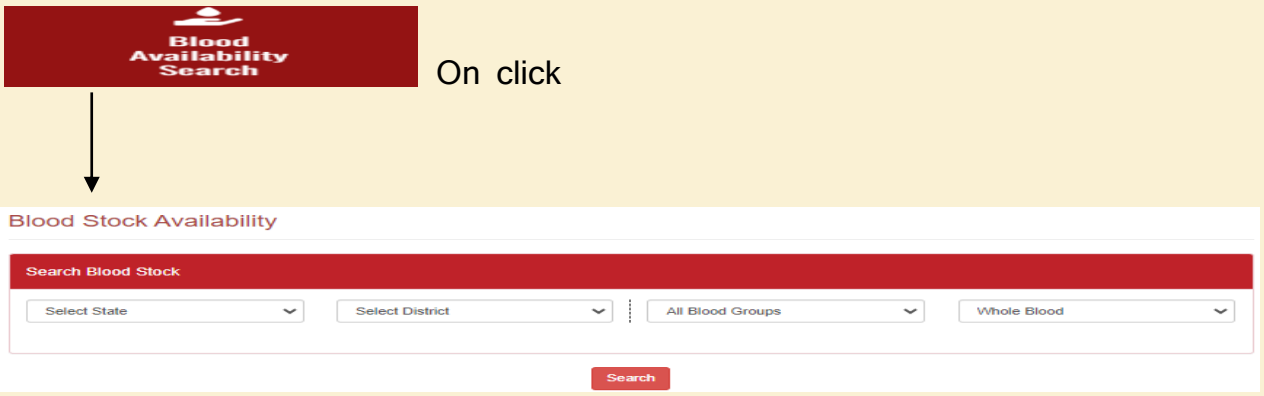


"मानव सेवा हर जीवन का हिस्सा होता है सही समय पर रक्तदान और रक्त भंडारण की जानकारी की सहायता से हम अधिक से अधिक जीवन बचा सकते हैं इसके लिए ई-रक्तकोश एप्लिकेशन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।"

♦♦♦

# परियोजना प्रबंधन प्रणाली

- शालू गुप्ता
संयुक्त निदेशक

परियोजना प्रबंधन संस्थान (पी.एम.आई.) परियोजना प्रबंधन को "परियोजना की आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु परियोजना गतिविधियों के लिए ज्ञान, कौशल, उपकरण और तकनीकों के अनुप्रयोग" के रूप में परिभाषित करता है। एक बुनियादी परियोजना प्रबंधन जीवनचक्र में चार चरण शामिल होते हैं:-

- प्रारंभ करना
- योजना बनाना
- कार्यान्वित करना
- समापन

परियोजना प्रबंधन का मुख्य उद्देश्य किसी परियोजना को सफलतापूर्वक पूर्ण करने और गुणवत्तापूर्ण उत्पाद वितरित करने के लिए योजना बनाना और प्रबंधित करना है। इसमें संसाधनों की पहचान करना और उनका प्रबंधन करना, बजट बनाना और समग्र परियोजना प्रगति के लिए वरिष्ठ प्रबंधन को स्पष्ट या वास्तविक स्थिति से अवगत करना शामिल है।

**परियोजना प्रबंधन में चुनौतियाँ**

जटिल परियोजनाओं को प्रबंधित करने का कार्य कठिन हो सकता है, विशेषकर परियोजना प्रबंधन सॉफ़्टवेयर की सहायता के बिना। परियोजना की प्रगति, समय सीमा और संसाधनों पर निगरानी रखने के लिए एक केंद्रीकृत मंच की कमी जटिल परियोजनाओं के प्रबंधन में एक बड़ी बाधा है। किसी उपकरण के बिना बाधाओं की पहचान करना, समय सीमा को समायोजित करना और संसाधनों को कुशलतापूर्वक आवंटित करना एक कठिन कार्य हो सकता है।

उपर्युक्त चुनौतियों का समाधान करने हेतु परियोजना प्रबंधन प्रणाली डिज़ाइन की गई है। पी.एम.एस. प्रणाली विभिन्न परियोजना प्रबंधन पहलुओं की योजना, आयोजन और प्रबंधन करके परियोजनाओं के प्रबंधन पर केंद्रित है।

उपर्युक्त चुनौतियों पर काबू पाने के लिए, परियोजना प्रबंधन प्रणाली डिज़ाइन की गई है। पी.एम.एस. प्रणाली विभिन्न परियोजना प्रबंधन के पहलुओं की योजना बनाने, आयोजित करने और प्रबंधित करके परियोजनाओं के प्रबंधन पर केंद्रित है। इसमें शामिल है:-

- परियोजना प्रस्ताव और परियोजना निर्माण एवं निगरानी
- संसाधनों का आवंटन
- शेड्यूलिंग
- आय और व्यय

**<u>परियोजना प्रबंधन प्रणाली की मुख्य विशेषताओं में निम्नलिखित शामिल हैं:</u>**

- ◆ प्रस्ताव और परियोजना निर्माण: यह प्रणाली परियोजना प्रबंधकों को नए प्रस्ताव, परियोजनाएं बनाने और परियोजना विवरण जैसे परियोजना का कार्यक्षेत्र, समयसीमा, बजट, संसाधन और संबंधित दस्तावेजों को अपलोड करने की सुविधा प्रदान करता है।
- ◆ संसाधन प्रबंधन: यह सिस्टम परियोजना प्रबंधकों को टीम के सदस्यों जैसे परियोजना संसाधनों का प्रबंधन करने की अनुमति देगा। वे संसाधन आवंटित करने और प्रगति की निगरानी करने में सक्षम होंगे।
- ◆ प्रगति ट्रैकिंग: यह सिस्टम परियोजना प्रबंधकों को परियोजना की प्रगति के बारे में जानकारी प्रदान करेगा, जिसमें निर्धारित माइलस्टोन को हासिल करना, भुगतान अनुसूची और भुगतान रसीद शामिल हैं।
- ◆ रिपोर्टिंग: सिस्टम परियोजना के प्रदर्शन पर रिपोर्ट तैयार करेगा, जिसमें संसाधन उपयोग, निर्धारित माइलस्टोन को हासिल करने में नियत समय सीमा से अधिक समय लगाना, और परियोजना पूर्णता की स्थिति शामिल है।

**आंतरिक उपयोग के लिए पीएमएस लिंक**

**https://pms.dcservices.in/PMS/Homepage**

**पी.एम.एस. में मुख्य भूमिका उपलब्ध है**

1. कार्यकारी निदेशक
2. ग्रुप समन्वयक (पी.एम.ओ.)
3. संबंधित ग्रुप समन्वयक
4. ग्रुप समन्वयक (वित्त)
5. ग्रुप समन्वयक (मानव संसाधन)
6. विभागाध्यक्ष (एच.ओ.डी.)
7. परियोजना प्रभारी
8. परियोजना प्रबंधक

**परियोजना प्रबंधन प्रणाली कार्यप्रवाहः**

पी.एम.एस. सिस्टम का वर्कफ़्लो प्रस्ताव प्रविष्टि से प्रारंभ होता है। प्रस्ताव प्रविष्टि संबंधित परियोजना प्रबंधक/विभागाध्यक्ष/ग्रुप समन्वयक द्वारा की जाएगी। प्रस्ताव प्रविष्टि के दौरान प्रस्ताव से संबंधित जानकारी जैसे समूह, थ्रस्ट एरिया, परियोजना प्रकार, श्रेणी, कुल परिव्यय, सी-डैक परिव्यय, वित्त पोषण करने वाला संगठन, ग्राहक, प्रस्ताव प्रस्तुत करने की तिथि और प्रस्ताव दस्तावेज अपलोड करने आदि की जानकारी दी जा सकती है। ग्राहक को प्रस्तुत संशोधित प्रस्ताव के अनुसार प्रस्ताव की प्रवृष्टि को कई बार संपादित किया जा सकता है। प्रस्ताव को अंतिम रूप से प्रस्तुत करने के पश्चात, प्रस्ताव कोड पीएमएस सिस्टम द्वारा स्वतः जनरेट किया जाता है, जो कैलेंडर वर्ष पर आधारित होता है।

समझौता ज्ञापन (एम.ओ.यू.) पर हस्ताक्षर करने/ग्राहक से कार्य आदेश प्राप्त करने के बाद, प्रस्ताव को एक परियोजना में परिवर्तित कर दिया जाता है। परियोजना की बुनियादी जानकारी भरी जाती है जैसे परियोजना का उद्देश्य, अवधि, प्रारंभ तिथि, समाप्ति तिथि, कुल और सी-डैक परिव्यय। प्रोजेक्ट बेसलाइन प्रविष्टि भी की जाती है जैसे कि जनशक्ति की आवश्यकता, माइलस्टोन, भुगतान अनुसूची और परियोजना से संबंधित दस्तावेजों को अपलोड करना। परियोजना प्रविष्टि विभागाध्यक्ष/ग्रुप समन्वयक के अनुमोदन के लिए की जाती है। इस स्तर पर

प्रोजेक्ट कोडीकरण योजना का उपयोग करके सिस्टम द्वारा एक प्रोजेक्ट कोड जनरेट किया जाता है जो कैलेंडर वर्ष, ग्रुप, प्रोजेक्ट के प्रकार और श्रेणी एवं अनुक्रम संख्या पर आधारित होता है।

परियोजना प्रविष्टि को संबंधित ग्रुप समन्वयक द्वारा अनुमोदित किए जाने के पश्चात इसको प्रोजेक्ट प्रबंधन आफिस को भेजा जाता है। प्रोजेक्ट प्रबंधन आफिस इस परियोजना को चालू परियोजना में परिवर्तित करता है और किसी भी आपत्ति की स्थिति में इसको संबंधित ग्रुप समन्वयक/एच.ओ.डी./पी.एल. को वापस भेज देता है।

परियोजना प्रविष्टि को एक बार संबंधित ग्रुप समन्वयक द्वारा अनुमोदित किए जाने पर प्रोजेक्ट प्रबंधन आफिस (पी.एम.ओ) को भेजा जाता है। पी.एम.ओ. द्वारा परियोजना को चालू परियोजना में परिवर्तित किया जाएगा और किसी भी आपत्ति की स्थिति में संबंधित ग्रुप समन्वयक./एच.ओ.डी./पी.एल. को वापस भेज दिया जाएगा।

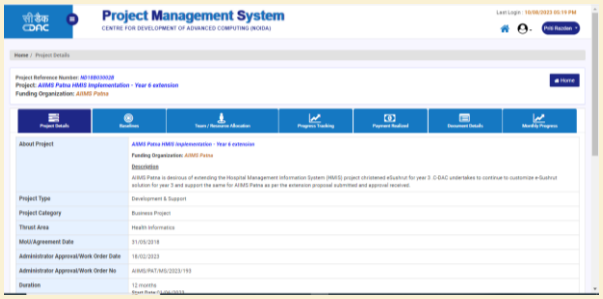


परियोजना निष्पादन चरण के दौरान, जनशक्ति की आवश्यकता के अनुरूप परियोजना का वास्तविक संसाधन मानचित्रण किया जाता है। माइलस्टोन और भुगतान माइलस्टोन प्रगति की निगरानी की जाती है।

निर्धारित समय-सीमा के अनुसार परियोजना से संबंधित सभी गतिविधियाँ पूरी होने के बाद, परियोजना प्रबंधक द्वारा सिस्टम के माध्यम से परियोजना को बंद करने की प्रक्रिया शुरू की जाती है। प्रोजेक्ट मैनेजर प्रोजेक्ट क्लोजर से संबंधित प्रासंगिक दस्तावेज अपलोड करता है और संबंधित ग्रुप समन्वयक  को समापन रिपोर्ट प्रस्तुत करता है। संबंधित ग्रुप समन्वयक प्रोजेक्ट क्लोजर अनुरोध की समीक्षा करता है और अनुरोध को मंजूरी देता है। किसी आपत्ति की स्थिति में प्रोजेक्ट मैनेजर को वापस लौटा देता है। जब ग्रुप समन्वयक ने परियोजना को बंद करने की मंजूरी दे दी और प्रोजेक्ट प्रबंधन आफिस को भेज दिया है। इसके बाद प्रोजेक्ट प्रबंधन आफिस

द्वारा तकनीकी रूप से परियोजना को बंद करने के बाद इसे और वित्तीय समापन के लिए भेजा जाता है।

यदि परियोजना का सारा भुगतान प्राप्त हो गया है तो ग्रुप समन्वयक (वित्त) द्वारा वित्तीय समापन के लिए  अपेक्षित कार्रवाई की जाएगी।

कर्मचारी से संबंधित सभी डेटा जैसे कर्मचारी विवरण, ज्वाइनिंग, त्याग पत्र संबंधी प्रविष्टि मानव संसाधन टीम द्वारा की जाती है।

पी.एम.एस. सिस्टम में भूमिका के अनुसार विभिन्न प्रकार के डैशबोर्ड होते हैं।

**कार्यकारी निदेशक/प्रोजेक्ट प्रबंधन ऑफिस/ग्रुप समन्वयक डैशबोर्ड**

- संबंधित ग्रुप  में परियोजनाओं की संख्या (डाउनलोड करने योग्य विवरण उपलब्ध)
- संबंधित ग्रुप में कर्मचारियों की संख्या।
- नया प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया।
- नया प्रोजेक्ट प्राप्त हुआ।
- फण्ड/निधि प्राप्त हुई।
- देय भुगतान/लंबित भुगतान।
- मासिक प्रगति रिपोर्ट - पी.एल. द्वारा भेजी गई / प्रोजेक्ट प्रबंधन ऑफिस द्वारा वापस लौटाई गई/सभी रिपोर्ट देखें।
- माइल स्टोन - अगले महीने में देय / माइल स्टोन की सीमा पार हो गई है।
- कर्मचारी- नए शामिल हुए व्यक्ति / त्याग पत्र दिया/फिर से शामिल हुए।
- इनवॉइस का विवरण।
- समापन लंबित/समापन अनुरोध / बंद (क्लोज्ड) की गई परियोजनाएं।

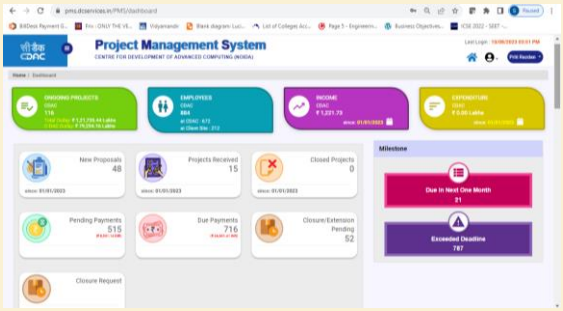

**अन्य डैशबोर्ड**

- प्रोजेक्ट लीडर
- प्रोजेक्ट प्रभारी
- ग्रुप समन्वयक (वित्त)
- ग्रुप समन्वयक (मानव संसाधन)

संक्षेप में, परियोजना प्रबंधन प्रणाली वरिष्ठ प्रबंधन के लिए परियोजना के विवरण को प्रबंधित करने, माइलस्टोन, संसाधन ट्रैकिंग और आय आदि के संदर्भ में परियोजना की प्रगति की स्थिति उपलब्ध करने के लिए एक कुशल और प्रभावी समाधान प्रदान करेगी।

♦♦♦

---

## क्या आपको हिन्दी आती है

| | | |
|---|---|---|
| Cricket | : | गोल गुत्तम कलड़ बदटम देदनादन प्रतियोगिता / लम्ब दण्ड गोल पिण्ड पकड़ प्रतियोगिता |
| Light Bulb | : | विद्युत प्रकाशित कांच गोलक |
| Tea | : | दूध जल मिश्रित शर्करा युक्त पर्वतेय बूटी |
| Train | : | सहस्त्र चक्र लौह पथ गामिनी / अग्नि पथ |
| Mosquito | : | गुंजहारी मानव रक्त पिवासु जीव / मच्छा |
| Cigarette | : | धूम्र शलाका / धूम दण्डिका |
| Tie | : | कंठ भूषण |
| Match Box | : | अग्नि उत्पादन पेटिका |

- अनुष्का
कक्षा- दसवीं
सुपुत्री नवीन चन्द्र

♦♦♦

# सेमीकंडक्टर पारिस्थितिकी तंत्र: चुनौतियाँ और पहल

- सौरिश बेहेरा
सह निदेशक

**सारांश (Abstract)**

देश के भीतर सेमीकंडक्टर डिज़ाइन भारत का एक लंबे समय से लंबित मुद्दा है। इसके अलावा सेमीकंडक्टर उद्योग में उनका लघुकरण हमेशा एक चुनौती बना रहता है। कोविड-19 महामारी और डिजिटलीकरण कार्यक्रमों के बाद सरकार द्वारा ऑनलाइन अनुप्रयोगों में वृद्धि और ग्राहकों की आदतों में बदलाव के कारण सेमीकंडक्टर डिजाइन और विनिर्माण के लिए वैश्विक केंद्र बनने पर बल दिया गया है। हालाँकि, सेमीकंडक्टर चिप्स की कमी सेमीकंडक्टर आपूर्ति श्रृंखला में एक बड़ी बाधा है, जिसने घरेलू विनिर्माण क्षमता की आवश्यकता को बल दिया है। डिजिटल सक्षमता का यह अभियान भारत को राष्ट्रीय सुरक्षा, वैश्विक अर्थव्यवस्था, आत्म निर्भरता हासिल करने, आयात कम करने और आत्मनिर्भर भारत की स्थापना में अग्रसर होने में सहायता करेगा।

## I. प्रस्तावना

सेमीकंडक्टर वे सामग्रियां हैं जिनके विद्युत गुण या चालकता कंडक्टर और इंसुलेटर के बीच होती है। वे सिलिकॉन या जर्मेनियम जैसे शुद्ध तत्व या उनके यौगिक हो सकते हैं। हालाँकि सिलिकॉन का उद्योग में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है और यह बुनियादी निर्माण खंड है। इस सिलिकॉन को चिप या सिस्टम-ऑन-चिप (SoC) या एप्लिकेशन स्पेसिफिक इंटीग्रेटेड सर्किट (ASIC) में परिवर्तित किया जाता है, जिसका उपयोग सभी इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों और आईटी उपकरणों में किया जाता है।

ये चिप्स या एसओसी पीसी, स्मार्ट फोन, लैपटॉप, टीवी, घरेलू उपकरणों से लेकर अन्य कंप्यूटिंग, संचार और चिकित्सा उपकरणों जैसे उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स उत्पादों की विस्तृत श्रृंखला में उपयोग किए जाने के कारण सर्वव्यापी हैं। हालाँकि सेमीकंडक्टर उद्योग में उनकी उच्च माँग और विभिन्न अन्य वैश्विक कारणों से एक वैश्विक चिप संकट पैदा हो गया है।

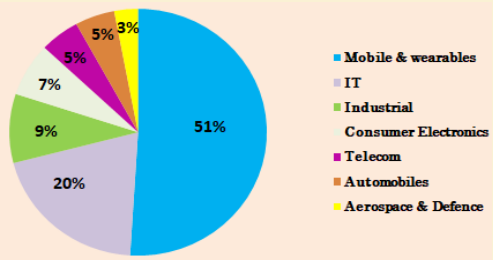


चित्र 1: भारत के सेमीकंडक्टर बाजार की क्षेत्रवार हिस्सेदारी (स्रोत काउंटरप्वाइंट रिसर्च और आईईएसए)

**II. लोकाचार (Trends)**

सेमी कंडक्टर इको सिस्टम भारत में उपलब्ध नहीं है। इसका रोडमैप काफी विलंबित है। सेमीकंडक्टर के लिए जटिल विनिर्माण और प्रक्रियाओं की आवश्यकता होती है। जबकि घटकों (कंपोनेंट्स) की अत्यधिक आवश्यकता है,

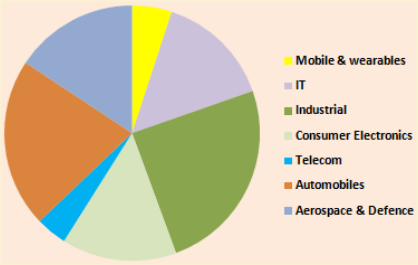


चित्र 2: भारत ने सेक्टर 2026 द्वारा स्थानीय स्तर पर सेमीकंडक्टर घटकों का सोर्स किया (स्रोत काउंटरप्वाइंट रिसर्च और आईईएसए)

उनमें से अधिकांश का आयात किया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप बहुत अधिक विदेशी मुद्रा और सीमा शुल्क का भुगतान करना पड़ता है। वर्तमान में, इस सेमीकंडक्टर आवश्यकता का केवल 9 प्रतिशत स्थानीय स्तर पर पूरा किया जाता है और 91 प्रतिशत आयात किया जाता है।

देश के भीतर स्थानीय विनिर्माण को प्रोत्साहित करने के लिए, इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने पिछले दो वर्षों में उत्पादन से जुड़े प्रोत्साहन (PLI) और डिजाइन से जुड़े प्रोत्साहन (DLI) जैसी योजनाएं प्रारंभ की हैं। स्टार्टअप और घरेलू कंपनियों के साथ एक बड़ी समस्या डिजाइन बुनियादी ढांचे की कमी है। डीएलआई (DLI) वित्तीय प्रोत्साहन भी प्रदान करता है। सेमीकंडक्टर की घरेलू खपत 2026 तक 80 बिलियन अमेरिकी डॉलर को पार करने की आशा है और वर्ष 2030 तक यह 110 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो जाएगी।

## III. प्रमुख चुनौतियाँ एवं समाधान

### चिप जनरेशन (Chip Generation)

इस उद्योग पर वर्तमान में संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन, ताइवान, दक्षिण कोरिया, जापान और नीदरलैंड का कब्जा है। यदि किसी चिप का ईओएल है, तो हमें सपोर्ट के लिए उसी चिप विक्रेता से संपर्क करना होता है। सॉफ़्टवेयर एप्लिकेशन के लिए आवश्यक क्रिप्टो लाइब्रेरी भी चिप बिक्रेता पर निर्भर हैं।

चिप बनाना कठिन कार्य है। इसमें बड़े निवेश की आवश्यकता होती है। वर्तमान में भारत में किसी भी चिप का निर्माण नहीं किया जाता है और इन्हें दूसरे देशों से आयात किया जाता है। पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण के लिए कुशल जनशक्ति, निर्बाध बिजली और स्वच्छ जल आपूर्ति की आवश्यकता होती है। इलेक्ट्रानिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने भारत सेमीकंडक्टर मिशन (ISM) कार्यक्रम के अंतर्गत भारत में सेमीकंडक्टर वेफर फैब्स की स्थापना के लिए कई कदम उठाए हैं। चिप निर्माण के तीन प्रमुख चरण हैं:-

- डिज़ाइन;
- निर्माण;
- असेंबली, परीक्षण और पैकेजिंग (एटीपी)

चिप का चयन स्वदेशीकरण उत्पाद डिजाइन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। चिप डिज़ाइन के लिए कुशल जनशक्ति की कमी है। इसलिए, सरकार ने सेमीकंडक्टर मिशन को बढ़ावा देने के लिए डिजाइन और क्षमता निर्माण क्षेत्र में स्टार्टअप्स की सहायता के लिए लगभग 200 मिलियन डॉलर के बजट का प्रावधान किया है। कई स्टार्टअप ने इसके लिए आवेदन किया है और इसकी संख्या बढ़ेगी। इलेक्ट्रानिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय का ESDM प्रभाग "मेक इन इंडिया" और "डिजिटल इंडिया" में परिभाषित उद्देश्यों के अनुसार कार्य करता है।

चिप्स टू स्टार्ट-अप (C2S) कार्यक्रम का लक्ष्य EDA (इलेक्ट्रॉनिक डिज़ाइन ऑटोमेशन) टूल का उपयोग करके चिप डिजाइनिंग के क्षेत्र में वर्ष 2027 तक 85,000 से अधिक कुशल जनशक्ति तैयार करना है। लाभार्थियों में व्यक्ति, शिक्षाविद, स्टार्टअप, एमएसएमई या अन्य कई संगठन

शामिल हैं। महंगे डिज़ाइन टूल्स के कारण अधिकतर व्यावहारिक अनुभव उपलब्ध नहीं होता है। सी-डैक, नोएडा भी C2S प्रोग्राम के अंतर्गत स्टार्टअप के साथ कार्य कर रहा है।

**साइबर सुरक्षा संबंधी खतरे**

सुरक्षा और गोपनीयता प्रमुख खतरे हैं। सुरक्षा कवरेज दो आयामों में किया जाता है: डेटा-ऑन-रेस्ट और डेटा-ऑन-ट्रांजिट। हमले की सतह बढ़ने के कारण हमलावर भेद्यता (Vulnerability) का फायदा उठाता रहता है। भेद्यता नेटवर्किंग डिवाइस, नेटवर्क, एंड पॉइंट डिवाइस, ओपन सोर्स सॉफ़्टवेयर या चिप में बैक डोर एंट्री में हो सकती है। सेमीकंडक्टर डिज़ाइन प्रक्रिया स्तर पर अज्ञात भेद्यता के कारण साइबर हमला हो सकता है जिसके परिणामस्वरूप चिप में खराबी, सेवा से इनकार और संवेदनशील जानकारी का उल्लंघन हो सकता है। कई बार सभी हार्डवेयर भेद्यताओं का पता लगाना संभव नहीं हो सकता है।

मानकों का अनुपालन बहुत महत्वपूर्ण है। एनआईएसटी द्वारा एफआईपीएस 140-2 में क्रिप्टोग्राफ़िक मॉड्यूल और परीक्षण है जो साइड चैनल अटैक, पावर मॉनिटरिंग अटैक आदि को कवर करता है। यह मानक सुरक्षा आवश्यकताओं को निर्दिष्ट करता है जो डेटा की गोपनीयता, अखंडता और प्रामाणिकता सुनिश्चित करने के लिए क्रिप्टोग्राफ़िक मॉड्यूल द्वारा पूर्ण किए जा सकते हैं। सुरक्षा स्तरों की कठोरता के आधार पर इसमें 4 स्तर हैं और FIPS 140-3 इसका उत्तराधिकारी (successor) है।

हार्डवेयर सुरक्षा पहलुओं को भी कार्यान्वित किए जाने की आवश्यकता है। भरोसे का हार्डवेयर रूट वह आधार है जिस पर कंप्यूटिंग सिस्टम के सभी सुरक्षित संचालन निर्भर करते हैं। इसमें क्रिप्टोग्राफ़िक कार्यों के लिए उपयोग की जाने वाली कुंजियाँ (keys) शामिल हैं और यह एक सुरक्षित बूट प्रक्रिया और हस्ताक्षर को सक्षम बनाता है। यह स्वाभाविक रूप से विश्वसनीय है, और इसलिए डिज़ाइन द्वारा सुरक्षित होना चाहिए। टीपीएम (TPM) इस श्रेणी में एक उदाहरण है। टीपीएम होस्ट सिस्टम को सुरक्षित कुंजी भंडारण और एक अलग छेड़छाड़ प्रतिरोधी हार्डवेयर मॉड्यूल में विभिन्न क्रिप्टोग्राफ़िक एल्गोरिदम के सुरक्षित कार्यान्वयन प्रदान कर सकता है।

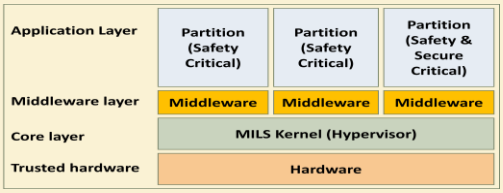


चित्र 3: डिजाइन के अनुसार सुरक्षा में चार परतें

चित्र 4: डिजाइन अप्रोच द्वारा सुरक्षा

जहां तक सुरक्षा का सवाल है तो हमें आत्मनिर्भर होना चाहिए। यह एक अनिवार्य आवश्यकता है. इसे शुरुआत से ही सिस्टम में शामिल किया जाना चाहिए। यह सदैव एक सतत विकसित होने वाली प्रक्रिया है। डिज़ाइन द्वारा सुरक्षा के सिद्धांत का सपोर्ट करने वाले उद्योग विशिष्ट मानकों का पालन किया जाना चाहिए। प्रारंभिक चरण में भेद्यताओं (vulnerabilities) की पहचान करने और उन्हें अलग करने के लिए एलडीआरए जैसे सुरक्षित कोडिंग प्रैक्टिसेज और परीक्षण उपकरणों का भी उपयोग किया जाना चाहिए।

वर्तमान में हम क्रोम, एज इत्यादि जैसे ब्राउज़रों की भेद्यताओं (vulnerabilities) को नहीं जानते हैं। यदि कोई भेद्यता पाई जाती है तो OEM पैच जारी करता है। इसलिए ब्राउज़र का नवीनतम संस्करण डाउनलोड करना महत्वपूर्ण है। ये ब्राउज़र रिमोट सर्वर के साथ SSL कनेक्टिविटी का उपयोग करते हैं। मूलतः एसएसएल प्रमाणपत्र एक विश्वसनीय पथ स्थापित करता है। वेब ब्राउज़र सर्वर प्रमाणपत्र को सत्यापित करता है और डेटा एक्सचेंज के लिए क्लाइंट-सर्वर के बीच एक सत्र क्रिएट किया  जाता है। वर्तमान में ट्रस्ट का आधार के लिए अन्य देशों पर निर्भर करते हैं और हमें एसएसएल की खरीद और रखरखाव के लिए बहुत धनराशि व्यय करनी पडती है। सी-डैक की भारत वेब ब्राउज़र पहल का अपना ट्रस्ट स्टोर और सी-डैक का एक इनबिल्ट रूट सर्टिफिकेट होगा।

### डेटा सुरक्षा एवं गोपनीयता

प्रमाणीकरण का उपयोग व्यक्ति या उपकरण की पहचान को मान्य (validate) करने के लिए किया जाता है। इसका उपयोग डेटा-ऑन-ट्रांजिट के लिए सुरक्षित चैनल स्थापना के लिए भी किया जाता है। वित्तीय अनुप्रयोग (एप्लीकेशनस) बहु-कारक प्रमाणीकरण का उपयोग करते हैं।

इसलिए किसी भी डेटा ब्रीच, अनधिकृत पहुंच या डेटा चोरी को रोकने के लिए मजबूत डेटा सुरक्षा उपायों को कार्यान्वित करने पर हमेशा बल दिया जाता है। डेटा सुरक्षा विधियों में क्रिप्टोग्राफी, प्रमाणीकरण, डेटा एन्क्रिप्शन, बैकअप, रिकवरी और एक्सेस कंट्रोल तंत्र शामिल हैं। उपयोग की जाने वाली एल्गोरिथम कुंजियाँ (क्रीस) उच्च आकार की होनी चाहिए।

सरकार की नीतियों के अनुपालन के साथ उपयोगकर्ता डेटा का उच्चतम स्तर पर ध्यान रखा जाना चाहिए। नीतियाँ. जैसे डिजी यात्रा मोबाइल ऐप चेहरे की पहचान प्रणाली के आधार पर हवाई अड्डों पर यात्रियों का संपर्क रहित प्रमाणीकरण प्रदान करता है। यात्री का व्यक्तिगत डेटा एन्क्रिप्टेड रूप में उनके स्मार्ट फोन के वॉलेट में संग्रहीत किया जाता है। डिजी यात्रा आईडी को यात्रा के मूल हवाई अड्डे पर मान्य (validate) करना अपेक्षित होता है और यह डेटा केवल यात्री और मूल हवाई अड्डे के बीच साझा किया जाता है। यात्री की पहचान और यात्रा विवरण को मध्यवर्ती चौकियों पर संपर्क रहित मोड में मान्य (validate) किया जाता है। यात्री द्वारा डेटा तभी साझा किया जाता है जब वे मूल (orgin) हवाई अड्डे पर यात्रा करते हैं। उड़ान के प्रस्थान के 24 घंटे के भीतर हवाई अड्डा सिस्टम से डेटा हटा दिया जाता है।

कई डेटा चोरी की घटनाएं हो चुकी हैं। जैसे Xiaomi मोबाइल फ़ोन के प्रोसेसर से उपयोगकर्ता डेटा को चीन में सर्वर पर रूट किया गया था। बिग बास्केट ग्राहक डेटा से छेड़छाड़ की गई और बाद में इसे डार्क वेब में बेच दिया गया। Redmi Note 8 पर Mi ब्राउज़र उपयोगकर्ता डेटा एकत्र कर रहा था। ऐसी खबरें बताती हैं कि कोई सिस्टम कितना भेद्या (Vulnerable) हो सकता है। अधिकांश ओईएम एकीकरण के लिए आंतरिक विवरण प्रदान नहीं करते हैं। वे इंटरफ़ेसिंग के लिए एपीआई या लाइब्रेरी प्रदान करते हैं। अंतिम उपयोगकर्ता को भी जागरूक होने की आवश्यकता है क्योंकि उनके व्यक्तिगत डेटा का हैकर्स द्वारा गलत उपयोग किया जा सकता है।

अब संसद ने "डिजिटल डेटा संरक्षण विधेयक 2023" पारित कर दिया है जो संसद के दोनों सदनों में पारित हो चुका है। इसके अनुसार गोपनीयता के उल्लंघन के लिए 250 करोड़ रुपए तक का जुर्माना निर्धारित किया गया है। इससे देश का पहला डेटा गोपनीयता कानून कार्यान्वित होगा। यह विधेयक सुनिश्चित करता है कि नागरिकों को जानकारी तक पहुंचने का अधिकार, व्यक्तिगत डेटा को सही करने और मिटाने का अधिकार और शिकायतों को सुधारने का अधिकार होगा। इससे विश्वास कायम करने में सहायता मिलेगी।

**IV. आगामी योजनाएं (Way forward)**

हाल ही में, जुलाई 2023 में आयोजित सेमीकंडक्टर इंडिया कॉन्फ्रेंस के दौरान सी-डैक ने आर्म फ्लेक्सिबल एक्सेस फॉर स्टार्टअप प्रोग्राम के माध्यम से भारत में सेमीकंडक्टर स्टार्टअप को

सशक्त बनाने के लिए एआरएम (ARM) के साथ साझेदारी की घोषणा की है। इलेक्ट्रानिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने भारतीय विश्वविद्यालयों के लिए सेमीकंडक्टर फैब्रिकेशन टेक्नोलॉजी पाठ्यक्रम के संयुक्त विकास के लिए भारतीय विज्ञानं संस्थान (IISc), बैंगलुरु और एलएएम (LAM) रिसर्च इंडिया के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं। इससे नैनो फैब्रिकेशन में कुशल जनशक्ति तैयार करने में सहायता मिलेगी। इलेक्ट्रानिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय की डीएलआई (DLI) योजना के अंतर्गत अहीशा डिजिटल इनोवेशनस नामक एक नया स्टार्टअप सी-डैक के वेगा प्रोसेसर कोर RISC V आर्किटेक्चर पर आधारित अपना पहला संस्करण रिलीज़ करेगा।

**v. सारांश**

सेमीकंडक्टर डिजिटल परिवर्तन के कारण उच्च मांग वाले सभी इलेक्ट्रॉनिक्स वस्तुओं की है। इसलिए भारत को मौजूदा क्षमताओं का आकलन करना, क्षमता निर्माण स्थापित करना और स्टार्ट अप को उनके सुरक्षा उपायों के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने होगा। सरकार ने विभिन्न योजनाओं, नीतियों के माध्यम से प्रत्येक हितधारक के हितों की रक्षा के लिए सराहनीय प्रयास किया है और शिक्षा जगत और उद्योग के बीच तालमेल स्थापित किया है। यह प्रयास सेमीकंडक्टर पारिस्थितिकी तंत्र को कार्यात्मक बनाने और बेहतर वितरण करने के लिए सभी तत्वों (Elements) को जोड़ने में सक्षम बनाएगा। इसके परिणामस्वरूप सेमीकंडक्टर उद्योग, वैश्विक अर्थव्यवस्था का विकास होगा और भारत को सेमीकंडक्टर उद्योग में एक ग्लोबल लीडर के रूप में स्थापित करेगा।

**संदर्भ (REFERENCES):**


[1] www.simplelearn.com
[2] Wikipedia
[3] https://government.economictimes.indiatimes.com/news/digital-india/
[4] https://www.statista.com/outlook/tmo/semiconductors/india
[5] https://electronicsmaker.com/
[6] https://insider.finology.in/economy/semiconductor-industry-in-india
[7] https://www.nielit.gov.in/calicut/


♦♦♦

# जेनरेटिव एआई और उसके अनुप्रयोग

- बबिता
प्रधान तकनीकी अधिकारी

**जेनरेटिव एआई क्या है?**

जेनरेटिव एआई एक प्रकार की कृत्रिम बुद्धिमत्ता है जिसमें मशीन लर्निंग एल्गोरिदम_का उपयोग करके नए, मूल कंटेंट या डेटा का सृजन करना शामिल है। इसका उपयोग टेक्स्ट, इमेज़, संगीत या अन्य प्रकार के मीडिया के सृजन के लिए किया जा सकता है। जेनरेटिव एआई एक बड़े डेटासेट पर एक मॉडल को प्रशिक्षित करने और फिर उस मॉडल का उपयोग ऐसे प्रशिक्षण डेटा जैसे नए, अब तक अनदेखे कंटेंट के सृजन करने के रूप में कार्य करता है। यह न्यूरल मशीन अनुवाद (Neural Machine Translation), छवि निर्माण (image generation) और संगीत निर्माण जैसी तकनीकों के माध्यम से किया जा सकता है। जेनरेटिव एआई में कंटेंट के सृजन को स्वचालित करके और नए विचारों एवं अवधारणाओं का निर्माण कर विभिन्न उद्योगों में क्रांति लाने की क्षमता है।

**जेनरेटिव एआई कैसे काम करता है?**

जेनरेटिव एआई एक प्रांप्ट से शुरू होता है जो एक टेक्स्ट, एक छवि, एक वीडियो, एक डिज़ाइन, संगीत नोट्स या किसी भी इनपुट के रूप में हो सकता है जिसे एआई सिस्टम संसाधित कर सकता है। विभिन्न एआई एल्गोरिदम फिर संकेत के जवाब में नए कंटेंट प्रस्तुत करते हैं। कंटेंट में, निबंध, समस्याओं का समाधान, या किसी व्यक्ति के चित्रों या ऑडियो से बनाई गई यथार्थवादी नकली कंटेंट शामिल हो सकती हैं।

जेनरेटिव एआई के शुरुआती संस्करणों के लिए एपीआई या अन्यथा जटिल प्रक्रिया के माध्यम से डेटा सबमिट करना आवश्यक था। डेवलपर्स को विशेष उपकरणों से परिचित होना पड़ा और पायथन जैसी भाषाओं का उपयोग करके एप्लिकेशन लिखना पड़ा।

अब, जेनरेटिव एआई में अग्रणी बेहतर उपयोगकर्ता अनुभव विकसित कर रहे हैं जो आपको सरल भाषा में अनुरोध (Request) का वर्णन करने देता है। प्रारंभिक प्रतिक्रिया के बाद, आप शैली,

टोन और अन्य तत्वों के बारे में प्रतिक्रिया के साथ परिणामों को अनुकूलित भी कर सकते हैं जिन्हें आप उत्पन्न कंटेंट में शामिल करना चाहते हैं।

**जनरेटिव एआई मॉडल**

जेनरेटिव एआई मॉडल कंटेंट को प्रस्तुत और संसाधित करने के लिए विभिन्न एआई एल्गोरिदम को जोड़ते हैं। उदाहरण के लिए, पाठ उत्पन्न करने के लिए, विभिन्न प्राकृतिक भाषा प्रोसेसिंग तकनीकें वर्णों (जैसे, अक्षर, विराम चिह्न और शब्द) को वाक्यों, भाषण के हिस्सों, संस्थाओं और कार्यों में परिवर्तित कर देती हैं, जिन्हें कई एन्कोडिंग तकनीकों का उपयोग करके वैक्टर के रूप में दर्शाया जाता है। इसी तरह, इमेजेज (Images) विभिन्न दृश्य तत्वों (visual elements) में बदल जाती हैं, जिन्हें वैक्टर के रूप में व्यक्त किया जाता है। यह भी ध्यान में रखा जाना चाहिए कि ये तकनीकें प्रशिक्षण डेटा में निहित पूर्वाग्रहों (biases), नस्लवाद (racism), धोखे (deception) और अहंकार (puffery) को भी कूटबद्ध (encode) कर सकती हैं।

जब एक बार जब डेवलपर्स दुनिया को प्रस्तुत करने का तरीका तय कर लेते हैं, तो वे किसी क्वेरी या संकेत के जवाब में नई कंटेंट उत्पन्न करने के लिए एक विशेष न्यूरल नेटवर्क (neural network) अप्लाई करते हैं। जीएएन (GAN) और वैरिएबल ऑटोएनकोडर (वीएई) जैसी तकनीकें - एक डिकोडर और एनकोडर के साथ न्यूरल नेटवर्क - यथार्थवादी (realistic) मानव चेहरे, एआई प्रशिक्षण के लिए सिंथेटिक डेटा या यहां तक कि विशेष मनुष्यों की प्रतिकृतियां उत्पन्न करने के लिए उपयुक्त हैं।

ट्रांसफार्मर में हाल की प्रगति जैसे कि Google के बाईडाइरेक्शनल एनकोडर रिप्रेजेंटेशन फ्रॉम ट्रांसफॉर्मर्स (BERT), OpenAI के GPT और Google AlphaFold के परिणामस्वरूप न्यूरल नेटवर्क भी बने हैं जो न केवल भाषा, छवियों और Proteins को एनकोड कर सकते हैं बल्कि नए कंटेंट भी जनरेट कर सकते हैं।

**Dall-E और ChatGPT क्या हैं?**

ChatGPT, Dall-E और Bard लोकप्रिय जेनरेटिव AI इंटरफ़ेस हैं।

**Dall-ई** छवियों और उनके संबंधित पाठ विवरणों के एक बड़े डेटा सेट पर प्रशिक्षित मल्टीमॉडल AI एप्लिकेशन का उदाहरण है जो दृष्टि, पाठ और ऑडियो जैसे कई मीडिया में कनेक्शन की

पहचान करता है। इस मामले में, यह शब्दों के अर्थ को दृश्य तत्वों से जोड़ता है। इसे 2021 में OpenAI के GPT कार्यान्वयन का उपयोग करके बनाया गया था। Dall-E 2, एक दूसरा, अधिक सक्षम संस्करण, 2022 में जारी किया गया था। यह उपयोगकर्ताओं को उपयोगकर्ता संकेतों द्वारा संचालित कई शैलियों में इमेजरी उत्पन्न (Generate) करने में सक्षम बनाता है।

ChatGPT - नवंबर 2022 में दुनिया में तहलका मचाने वाला एआई-संचालित चैटबॉट ओपनएआई के जीपीटी-3.5 इंप्लीमेंटेशन पर बनाया गया था। ओपनएआई ने इंटरैक्टिव फीडबैक के साथ चैट इंटरफ़ेस के माध्यम से टेक्स्ट प्रतिक्रियाओं को इंटरैक्ट करने और बेहतर बनाने का एक तरीका प्रदान किया है। GPT के पुराने संस्करण केवल API के माध्यम से ही पहुंच योग्य (accessible) थे। GPT-4 को 14 मार्च, 2023 को रिलीज किया किया गया था। ChatGPT एक वास्तविक बातचीत का अनुकरण करते हुए, उपयोगकर्ता के साथ अपनी बातचीत के इतिहास को अपने परिणामों में शामिल करता है। नए GPT इंटरफ़ेस की अविश्वसनीय लोकप्रियता के बाद, Microsoft ने OpenAI में एक महत्वपूर्ण नए निवेश की घोषणा की और GPT के एक संस्करण को अपने बिंग सर्च इंजन में एकीकृत किया।

**जेनरेटिव एआई के उपयोग/फायदे**

जेनरेटिव एआई को व्यवसाय के कई क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर अप्लाई किया जा सकता है। यह मौजूदा कंटेंट की व्याख्या करना और समझना आसान बना सकता है और स्वचालित रूप से नए कंटेंट बना सकता है। डेवलपर्स ऐसे तरीकों पर अनुसंधान रहे हैं जेनेरेटिव एआई मौजूदा वर्कफ़्लो को बेहतर बना सके, जिसका उद्देश्य पूरी तरह से प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने के लिए वर्कफ़्लो को अनुकूलित करना है। जेनेरिक एआई को कार्यान्वित करने के कुछ संभावित लाभों में निम्नलिखित शामिल हैं:

- कंटेंट लिखने की मैन्युअल प्रक्रिया को स्वचालित करना।
- ईमेल का उत्तर देने के प्रयास (effort) को कम करना।
- विशिष्ट तकनीकी प्रश्नों की प्रतिक्रिया में सुधार करना।
- लोगो (Logo) का यथार्थवादी प्रतिनिधित्व बनाना।
- जटिल जानकारी को एक सुसंगत कथा में सारांशित करना।
- किसी विशेष शैली में कंटेंट बनाने की प्रक्रिया को सरल बनाना।

## जेनरेटिव AI के अनुप्रयोग

- **कंप्यूटर ग्राफिक्स:** जेनेरेटिव एआई का उपयोग वास्तविक छवियों और एनिमेशन के निर्माण के लिए किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, शोधकर्ताओं ने चेहरों एवं पशुओं की फोटोरियलिस्टिक छवियाँ बनाने और रियल टाइम में आभासी पात्रों को एनिमेट करने के लिए जेनरेटिव मॉडल का उपयोग किया है।

- **संगीत और कला:** संगीत और कला के सृजन के लिए जेनरेटिव एआई का उपयोग किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, शोधकर्ताओं ने संगीत के नए अंशों के निर्माण के लिये जेनरेटिव मॉडल का उपयोग किया है जो चयनित कलाकार की ही शैली के समान है। इसके साथ ही, कई स्टार्ट-अप कंपनियों द्वारा अपने ब्रांड लोगो के निर्माण के लिए और इसे जेनरेटिव एआई टेक्स्ट मैसेजिंग के साथ संरेखित करने के लिए DALL.E2, बिंग इमेज़ क्रिएट, स्टेबल डिफ्यूजन और मिड-जर्नी जैसी सेवाओं की सहायता ली गई है।

- **भाषा और कंटेंट:** जेनरेटिव एआई का उपयोग नैसर्गिक भाषा पाठ्य (टेक्स्ट) के सृजन के लिए किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, शोधकर्ता समाचार लेख, कविता और यहाँ तक कि कोड के सृजन के लिये 'ChatGPT' का उपयोग कर रहे हैं। इन मॉडलों को एक विशिष्ट लेखन शैली का उपयोग करने के लिए या किसी विशिष्ट विषय या थीम के आधार पर टेक्स्ट के सृजन के लिए अनुकूल बनाया जा सकता है।

- **उपचार और दवा की खोज:** एआई के सहयोग से दवा खोज प्रक्रिया को उल्लेखनीय रूप से तेज़ करने की क्षमता है। जेनरेटिव AI मॉडल का उपयोग नए यौगिकों के गुणों का अनुमान लगाने और दवाओं के रूप में उनकी संभावित प्रभावकारिता का आकलन करने के लिए किया जा सकता है।

- **रोबोटिक्स:** रोबोटिक प्रणाली को डिज़ाइन एवं नियंत्रित करने के लिए जेनरेटिव एआई का उपयोग किया जा सकता है। रोबोट के व्यवहार का अनुकरण करने के लिए और रोबोट को एक विशिष्ट कार्य करने में सक्षम बनाने वाले नियंत्रण निर्देशों के निर्माण के लिए जेनरेटिव मॉडल का उपयोग किया जा सकता है।

♦♦♦

# ग्राफिक डिज़ाइन

- रितेश कुमार सिंह
सीनियर प्रोजेक्ट इंजीनियर

जैसे-जैसे दुनिया डिजिटल होती जा रही है वैसे - वैसे लोगों के लिए करियर के अनेक विकल्प खुलते जा रहे हैं, एक समय था जब लोग समुदाय के तौर पर डॉक्टर, इंजिनियर, सरकारी नौकरी आदि के समुदाय को चुनते थे। लेकिन आज का समय बहुत अधिक प्रगतिशील है लोग यूट्यूब, ब्लॉगिंग, कोडिंग, वेब डिजाइनिंग, ग्राफिक डिजाइनिंग, डिजिटल मार्केटिंग आदि को करियर विकल्प के रूप में अपनाते हैं।

ऐसे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म जिनके द्वारा आप सरकारी नौकरी से भी अधिक पैसा कमा सकते हैं। बहुत सारे लोग आज इन समुदायों के दम पर बहुत प्रसिद्ध हैं और लाखों-करोड़ों महीने की कमाई कर रहे हैं।

हम दैनिक जीवन में अपने आस-पास की छवि, लोगो (Logo), बैनर, सिंबल आदि प्रकार की चीजें देखते हैं यह सब ग्राफिक के अंतर्गत आता है। ग्राफिक डिजाईन तेजी से बढ़ने वाले कई उद्योग में से एक हैं क्योकि लोग रचनात्मक छवि की ओर अधिक आकर्षित होते हैं, जिसका उपयोग व्यवसायी अपने उत्पाद को अधिक से अधिक बिक्री प्राप्त करने के लिए करते हैं। ग्राफिक डिजाइन में अगर आप करियर बनाने के बारे में सोच रहे हैं तो यह आपके लिए अच्छा निर्णय साबित हो सकता है।

**ग्राफ़िक डिजाईन क्या है**

ग्राफ़िक डिज़ाइनिंग एक प्रकार की कला होती है जिसमें टेक्स्ट और ग्राफ़िक की मदद से लोगों को आकर्षित किया जाता है। यह संदेश ग्राफिक, छवि, लोगो, न्यूज लेटर, पोस्टर आदि किसी भी रूप में हो सकते हैं। यह एक ग्राफिक डिज़ाइनर बनाता है।

ग्राफिक डिजाइनिंग को विजुअल कम्युनिकेशन भी कहा जाता है, क्योकि इसकी सहायता से ऐसे मैसेज बनाए जाते हैं जिन्हें लोग आसानी से

समझ सकते हैं। इसका इस्तेमाल आमतौर पर मार्केटिंग, सेल्स, बिजनेस प्रमोशन आदि के लिए किया जाता है। इसलिए ग्राफिक का उपयोग आधुनिक समय में बहुत सारी कंपनियां करती हैं।

**ग्राफ़िक डिज़ाइनर क्या होता है**

ग्राफिक को कंप्यूटर की मदद से डिजाइन करने वाले पेशेवरों को "ग्राफिक डिजाइनर" कहते हैं। वह प्रोफेशनल तरीके से इमेज, टाइपोग्राफी, मोशन और जिफ जैसे बेहतरीन ग्राफिक डिजाइन करता है। ग्राफिक डिजाइनर किसी भी छवि को इस प्रकार बनाता है कि उस छवि में एक सही संदेश के बीच सही तरीके से पहुंचने का काम हो जाता है।

**ग्राफिक डिज़ाइनर के कार्य**

**1. लोगो डिजाइनर**
इस व्यवसाय के माध्यम से हम कई संस्थाओं, दुकानों, वेबसाइटों आदि क्षेत्रों के ब्रांड से संबंधित अपनी पहचान बनाने का कार्य करते हैं। इसके माध्यम से हम किसी व्यवसाय की पहचान का निर्माण करते हैं।

**2. मार्केटिंग डिजाइनर**
यह किसी क्षेत्र से संबंधित वस्तुओं का प्रचार-प्रसार करने का माध्यम है। इसके माध्यम से ग्राफिक डिजाइन का उपयोग बिक्री बढ़ाने या ब्रांड को प्रसिद्ध करने के लिए किया जाता है।

**3. वीडियो और फिल्म डिजाइनर**
यह एक ऐसा व्यवसाय है जिसमें किसी चलती हुई दृश्य सामग्री (वीडियो) की पृष्ठभूमि, रंग, आकार या किसी अन्य प्रकार की सामग्री को जोड़ने आदि का कार्य करता है। यह ग्राफ़िक डिज़ाइन से संबंधित एक बेहतरीन व्यवसाय का क्षेत्र है, जिसमें आपके कौशल और शिक्षा का उपयोग किसी भी स्टिचिंग दृश्य सामग्री को ऑडियो और विज़ुअल रूप में परिवर्तन करने के लिए किए जाते हैं।

**4. रचनात्मक कला डिजाइनर**
यह व्यवसाय पूर्ण रूप से आपकी रुचि पर निर्भर करता है। इसकी सहायता से व्यक्ति अपने खर्च के आधार पर किसी दृश्य सामग्री का उपयोग कर सकते हैं जिसे आपके द्वारा निर्धारित मूल्य पर पहचाना जाता है।

**5. पैकेजिंग डिजाइनर**

इस ग्राफ़िक डिज़ाइन के माध्यम से वस्तु के रूप में सुरक्षा प्रदान करने के लिए लेबल का निर्माण किया जाता है। इस प्रकार के व्यवसाय में कार्य करने के लिए ग्राफ़िक डिज़ाइनरों को कैड सॉफ़्टवेयर की आवश्यकता होती है। वह किसकी सहायता से दृश्य की संरचना में अपनी आवश्यकता के अनुसार परिवर्तन करता है।

**6. वेब डिजाइनर**

यह व्यवसाय ग्राफिक डिज़ाइनर को घर बैठे अपने कौशल का उपयोग करने की अनुमति देता है। इसकी सहायता से वह विभिन्न प्रकार की वेबसाइटों के पेज, लोगो और उसकी संरचना में परिवर्तन करने का कार्य करते हैं।

**7. मल्टीमीडिया डिजाइनर**

इसे व्यवसाय, उद्योग और विज्ञापन से जुड़े क्षेत्रों के लिए उपयोग किया जाता है। इसमे एनिमेशन की सहायता से दृश्य सामग्री की संरचना में बदलाव कर उसे ड्रू बनाने का काम किया जाता है।

**8. विज्ञापन डिजाइनर**

इसमें डिज़ाइनर अपनी कला का उपयोग किसी कंपनी से जुड़े उत्पादों का प्रचार-प्रसार करने वाला उन्हें बेचने एवं लोगों का उस वस्तु की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए करते हैं। यह ग्राफिक डिजाइन में सबसे अधिक आय का स्रोत प्रदान करने वाला मुख्य साधन हैं। इस व्यवसाय की मांग भी बाजार में अत्यधिक मात्रा में है।

**कौशल**

रचनात्मक कौशल (Creative skill), तकनीकी कौशल (Technical skill), संचार कौशल (Communication skill), फोटोग्राफी (Photography, योजना (Planning), समस्या-समाधान कौशल (Problem solving skill), अनुभव कौशल (Experience skill), फोटोशॉप, इलस्ट्रेटर और इन-डिजाइन कौशल (Photoshop, Illustrator & In Design skill) - यह सभी कौशल ग्राफ़िक डिज़ाइनर का कार्य उत्तम तरीके से करने का साधन हैं। इनकी सहायता से आप दृश्य सामग्री के रंग, आकार, संरचना, रेखा, पृष्ठभूमि, प्रभावोत्पादकता (Background, Effeteness) एवं अपने विचारों को द्रश्य रूप प्रदान करने में सहायक हैं।

## ग्राफ़िक डिजाइनिंग कैसे करें

ग्राफ़िक डिजाइनिंग करने के लिए आपका रचनात्मक होना बहुत जरुरी है. अगर आप एक रचनात्मक इंसान है तो ग्राफ़िक डिजाइनिंग के क्षेत्र में आपका भविष्य उज्जवल हो सकता है। एक इंसान की रचना उसे बेहतरीन ग्राफ़िक डिज़ाइनर बनाती है।

जब आपके अन्दर रचनात्मकता है तो आप ग्राफ़िक डिजाइनिंग के कोर्स कर सकते हैं और इसके लिए आवश्यक टूल का इस्तेमाल करना सीख सकते हैं। जब आप टूल का इस्तेमाल करना सीख जाते हैं तो आप आसानी से ग्राफ़िक डिजाइनिंग कर सकते हैं।

अगर संपेक्ष में कहें तो ग्राफ़िक डिजाइनिंग सीखने के लिए आपको टूल का इस्तेमाल करने के साथ - साथ रचनात्मक भी होना चाहिए तभी आप अच्छे ग्राफ़िक डिजाइन कर सकते हैं।

## ग्राफ़िक डिजाइनिंग के उपयोग

ग्राफिक डिजाइनिंग का उपयोग आज व्यापक रूप से किया जाता है। इसका उपयोग कई प्रकार के कामों के लिए किया जाता है -

1. प्राधिकरण के लोगो बैनर बनाने में ग्राफिक डिजाइनिंग काम करता है।
2. विजिटिंग कार्ड को बनाने के लिए ग्राफिक डिजाइन का उपयोग किया जाता है।
3. अखबार, पत्रिका, किताबें आदि में ग्राफिक डिजाइनिंग का इस्तेमाल किया जाता है।
4. प्रोडक्ट्स पैक्स में ग्राफिक डिजाइनिंग का उपयोग होता है।
5. आप प्रतिदिन अपने आस-पास या सोशल मीडिया में अनेक प्रकार के ग्राफिक देखते होंगे ये सभी ग्राफिक डिज़ाइनर बनाते हैं।
6. कपड़ों को डिजाइन करने के लिए भी ग्राफिक डिजाइन का उपयोग किया जाता है।

♦♦♦

# स्प्रिंग और स्प्रिंग बूट में अंतर

-हिमानी गर्ग
परियोजना अभियंता

स्प्रिंग एक ओपन-सोर्स लाइटवेट फ्रेमवर्क है जो जावा ईई 7 डेवलपर्स को सरल, विश्वसनीय और स्केलेबल एंटरप्राइज़ एप्लिकेशन बनाने में सक्षम बनाता है। यह ढांचा मुख्य रूप से आपके व्यावसायिक वस्तुओं को प्रबंधित करने में आपकी सहायता करने के लिए विभिन्न तरीके प्रदान करने पर केंद्रित है। इसने जावा डेटाबेस कनेक्टिविटी (JDBC), JavaServer Pages (JSP) और Java Servlet जैसे क्लासिक जावा फ्रेमवर्क और एप्लिकेशन प्रोग्रामिंग इंटरफेस (API) की तुलना में वेब एप्लिकेशन के विकास को बहुत आसान बना दिया है। यह ढांचा उद्यम एप्लिकेशन को विकसित करने के लिए विभिन्न नई तकनीकों जैसे पहलू-उन्मुख प्रोग्रामिंग (एओपी), सादा पुराना जावा ऑब्जेक्ट (पीओजेओ) और निर्भरता इंजेक्शन (डीआई) का उपयोग करता है।

स्प्रिंग बूट पारंपरिक स्प्रिंग फ्रेमवर्क के ऊपर डिजाइन किया गया है। इसलिए यह स्प्रिंग की सभी विशेषताएं प्रदान करता है और स्प्रिंग की तुलना में उपयोग करना अभी भी आसान है। स्प्रिंग बूट एक माइक्रोसर्विस आधारित ढांचा है और बहुत कम समय में-प्रोडक्ट तैयार करके एप्लिकेशन बनाता है। स्प्रिंग बूट में सब कुछ स्वतः कॉन्फ़िगर किया गया है। हमें केवल एक विशेष कार्यक्षमता का उपयोग करने के लिए उचित कॉन्फ़िगरेशन का उपयोग करने की आवश्यकता होती है। यदि हम रेस्ट एपीआई विकसित करना चाहते हैं तो स्प्रिंग बूट बहुत उपयोगी है।

**स्प्रिंग और स्प्रिंग बूट में अंतर:**

| क्र.सं | स्प्रिंग | स्प्रिंग बूट |
|---|---|---|
| 1. | स्प्रिंग एक ओपन-सोर्स लाइटवेट फ्रेमवर्क है जिसका व्यापक रूप से उद्यम एप्लिकेशन को विकसित करने के लिए उपयोग किया जाता है। | स्प्रिंग बूट पारंपरिक स्प्रिंग फ्रेमवर्क के टॉप पर बनाया गया है, जिसका व्यापक रूप से रेस्ट एपीआई विकसित करने के लिए उपयोग किया जाता है। |
| 2. | स्प्रिंग फ्रेमवर्क की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता डिपेंडेंसी इंजेक्शन है। | स्प्रिंग बूट की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता ऑटोकॉन्फ़िगरेशन है। |
| 3. | यह एक शिथिल युग्मित एप्लिकेशन | यह स्टैंड-अलोन एप्लिकेशन बनाने में |

| | | |
|---|---|---|
| | बनाने में सहायता करता है। | सहायता करता है। |
| 4. | स्प्रिंग एप्लिकेशन को चलाने के लिए, हमें सर्वर को स्पष्ट रूप से सेट करना होगा। | स्प्रिंग बूट टॉमकैट और जेट्टी आदि जैसे एम्बेडेड सर्वर प्रदान करता है। |
| 5. | डेवलपर्स को pom.xml फ़ाइल में मैन्युअल रूप से निर्भरताओं को परिभाषित करना अपेक्षित होता है। | pom.xml फ़ाइल आंतरिक रूप से आवश्यक निर्भरताओं को संभालती है। |
| 6. | डेवलपर्स को छोटे कार्यों के लिए बॉयलरप्लेट कोड लिखने की आवश्यकता होती है। | स्प्रिंग बूट में, बॉयलरप्लेट कोड में कमी होती है। |
| 7. | यह इन-मेमोरी डेटाबेस के लिए सपोर्ट प्रदान नहीं करता है। | यह एम्बेडेड और इन-मेमोरी डेटाबेस जैसे H2 के साथ कार्य करने के लिए कई प्लगइन्स प्रदान करता है। |

♦♦♦

आप जिस तरह बोलते है, बातचीत करते है, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए।

- महावीर प्रसाद द्विवेदी

अपने देश की आजादी की रक्षा करना केवल सैनिकों का काम नहीं, बल्कि ये पूरे देश का कर्तव्य है।

- लाल बहादुर शास्त्री

# वेबसाइट डिजाइनिंग

- रितेश कुमार सिंह
सीनियर प्रोजेक्ट इंजीनियर

"वेबसाइट डिजाइनिंग" उन वेबसाइटों के एक्सटेंशन विन्यास (लेआउट) का वर्णन करता है जो ऑनलाइन देखे जाते हैं। प्रक्रिया सामग्री (सॉफ्टवेयर) विकास के बजाए, यह आम तौर पर वेबसाइट विकास के उपयोगकर्ता अनुभव को संदर्भित करता है।

**वेबसाइट डिजाइनिंग क्या है?**

वेबसाइट डिजाइनिंग बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि आपके दर्शकों के लिए अच्छा वेबसाइट डिजाइन (Website Design) यह है कि यह उन्हें साइट को आसानी से किसी भी जगह जाने के लिए मदद (Navigate) करता है।

वेबसाइट डिजाइनिंग से अभिप्राय वेबसाइटों की योजना बनाना और अपडेट करना होता है। मुख्य रूप से, वेब डिजाइनिंग इस बात की योजना है कि वेबसाइट कैसी दिखनी चाहिए। मतलब वेब डिज़ाइनिंग कंपनी को अपने व्यवसाय के लिए एक स्पष्ट ब्रांड बनाने या बनाए रखने में मदद करता है।

दूसरे शब्दों में, यह इलेक्ट्रॉनिक दस्तावेज के संग्रह की अवधारणा, योजना और निर्माण और हस्ताक्षर (लेआउट), फ़ॉन्ट, रंग, पाठ, शैली, सामग्री उत्पादन, संरचना, ग्राफ से चित्र बनाने की कला (ग्राफिक्स), दस्तावेज के रूप और वेबसाइट संपूर्ण व्यक्तित्व को बनाने के लिए संपूर्ण सुविधाओं का उपयोग करने की एक प्रक्रिया है। जो आपकी साइट के विज़िटर्स को पेज डिलीवर करते हैं।

शब्द "वेब डिज़ाइन" आमतौर पर वेबसाइट के प्रारंभिक भाग के (फ्रंट-एंड) डिज़ाइन से संबंधित डिज़ाइन प्रक्रिया का वर्णन करने के लिए उपयोग किया जाता है। मूल रूप से, वेब डिज़ाइन वह है जो किसी वेबसाइट का उपयोग करते समय उपयोगकर्ता की वहां तक पहुंच बना सकें।

वेब डिज़ाइन एक बहु-विषयक कार्य है, जहाँ आपको न केवल डिज़ाइन (टाइपोग्राफी, रंग सिद्धांत) में ज्ञान की आवश्यकता होती है, बल्कि एक वेबसाइट (एच.टी.एम.एल., सी.एस.एस., जावास्क्रिप्ट) विकसित करने के लिए फंड की भी आवश्यकता होती है।

**वेबसाइट डिजाइन के प्रकार**

यहां छह (6) सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले वेब या वेबसाइट डिज़ाइन के प्रकार दिए गए हैं:

1. सिंगल पेज डिजाइन (Single page)
2. स्थिर वेबसाइट डिजाइन (Static website)
3. गतिशील वेबसाइट डिजाइन (Dynamic website)
4. प्रभावी डिजाइन (Responsive Design)
5. तरल डिजाइन (Liquid Design)
6. निश्चित डिजाइन (Fixed Design)

एक वेब डिज़ाइनर एक आईटी पेशेवर होता है जो किसी वेबसाइट के लेआउट, दृश्य रूप और प्रभाव को डिज़ाइन करने के लिए ज़िम्मेदार होता है। मूल रूप से, एक वेब डिज़ाइनर एक वेबसाइट का लेआउट और डिज़ाइन बनाता है।

सरल शब्दों में, एक वेबसाइट डिज़ाइनर किसी वेबसाइट को अच्छा बनाता है। वे दृश्य तत्वों (तत्वों) को बनाने के लिए कोडिंग और प्रोग्रामिंग भाषा और ग्राफिक उपकरण का उपयोग करते हैं। वेबसाइट डिज़ाइनर्स के पास आम तौर पर प्रत्यक्षीकरण (यूआई) में विशिष्टीकरण होता है, जिसका अर्थ है कि वे रणनीतिक रूप से ऐसा वेब डिज़ाइन करते हैं जो संसाधनों के लिए सहज और किसी भी जगह जाने के लिए (नेविगेट) सरल हो।

एक वेबसाइट डिजाइन करने के लिए आपको यह जानना होगा कि आपको किस प्रकार के टूल्स की जानकारी आ रही है। यहां कुछ सबसे महत्वपूर्ण उपकरण के नाम दिए गए हैं जिनमें आपका वेब पेज या वेबसाइट डिजाइन करना सीखना चाहिए:

1. स्केच टूल: एडोब फोटोशॉप, स्केच और नामांकन (एडोब इलस्ट्रेटर)।
2. स्थिति: वेबसाइट की संरचना के लिए एचटीएमएल का उपयोग करें।
3. सीएसएस: वेबसाइट या एचटीएमएल तत्वों को स्टाइल करने के लिए।
4. जावास्क्रिप्ट: वेबसाइट डिजाइन को साइट बनाने के लिए।
5. बूटस्ट्रैप: मोबाइल में भी अच्छा दिखने के लिए।

यदि आप वेब डिजाइनिंग सीखना शुरू करना चाहते हैं, तो एचटीएमएल से शुरुआत करें।

**वेब डिजाइनिंग से आप क्या समझते हैं?**

वेब डिजाइनिंग एक वेबसाइट बनाने और बनाए रखने की प्रक्रिया है। वेब डिजाइनिंग में विभिन्न पहलू शामिल होते हैं जैसे कि फ्रंट और कोडिंग, वेबसाइट वायर फ्रेम, लेआउट डिजाइन, रंग संयोजन, फॉन्ट चयन, ग्राफिक डिजाइन, वेबपेज लेटर, यूएक्स और यूआई, एनीमेशन, आदि।

**वेब डिजाइनिंग कैसे सीखें?**

वेब डिजाइनिंग सीखने के लिए आपको ग्राफिक सॉफ़्टवेयर जैसे एडोब फोटोशॉप या एडोब इलस्ट्रेटर सीखना होगा और कुछ कोडिंग भाषाओं जैसे एचटीएमएल, सीएसएस, बूटस्ट्रैप और जावास्क्रिप्ट का उपयोग करके वेबसाइट डिजाइनिंग करना होगा।

बूटस्ट्रैप एचटीएमएल और सीएसएस को मिलाकर बनाई गई लाइब्रेरी है।

**निष्कर्ष**

वेब इंटरनेट डिजाइन के लिए एक वेबसाइट डिजाइन और विकसित करने का कार्य है। मूल रूप से, वेब डिजाइनिंग फ्रंटएंड का एक हिस्सा है। इसमें तीन वेब प्रौद्योगिकियां, दृश्य, सीएसएस और जावास्क्रिप्ट, और ओवरव्यू (Overview) शामिल है।

मूल रूप से, वेब डिज़ाइनर कई तकनीकों का उपयोग करते हैं, लेकिन आमतौर पर एचटीएमएल, सीएसएस, जावास्क्रिप्ट, बूटस्ट्रैप और अतिरिक्त वेब डिज़ाइन टूल सहित हाइपरटेक्स्ट और हाइपरमीडिया वरीयता पर भरोसा करते हैं। एक पेशेवर वेब डिज़ाइन आपके व्यवसाय को एक समान रूप से प्रदर्शित करने में सहायता करता है।

♦♦♦

# प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण

- तुषार अग्रवाल,
ट्रेनी

भाषाई प्रक्रिया न्यूरल नेटवर्क का एक उपयोग है जिनसे प्राकृतिक भाषाओं की समझ और प्रशिक्षु करने के लिए बनाया गया है, प्राकृतिक भाषा संसाधन कहलाता है। प्राकृत भाषा संसाधन (एन.एल.पी.) का उद्देश्य, मानव भाषा को समझने और उसे कंप्यूटर प्रोग्रामों द्वारा संसाधित करने की क्षमता प्रदान करना है। यह क्षेत्र विशेष रूप से भाषा के साथ जुड़ी मशीन संचालन, भाषा समझने, भाषा उत्पादन और मशीनों के बीच कम्यूनिकेशन के लिए अल्गावचक नियमों और तकनीकों का अध्ययन करता है।

एन.एल.पी. के कई उपयोग है जो हमारे दैनिक जीवन में प्रभावशाली हैं। एक महत्वपूर्ण उपयोग शब्दकोश और मशीनों में अनुवाद करने की क्षमता है। नवीनतम सिस्टम अब उत्पाद सेवाओं और जानकारी को विभिन्न भाषाओं में प्रदान करने में सहायता करते है। उदाहरण के लिए यदि आप अंग्रेजी में लिखा हुआ एक ई-मेल हिन्दी में अनुवाद करना चाहते हैं, तो आप एन.एल.पी. उपयोग करके इसे आसानी से कर सकते हैं। ऐसे अनुवाद सिस्टम आपको दो भाषाओं के बीच करने में सहायता करते हैं, जो लोगों की बीच संचार को आसान बनाते है और समृद्ध सांस्कृतिक विनियोग को बढ़ावा देते है।

एन.एल.पी. का और एक महत्वपूर्ण उपयोग है, सामाजिक मीडिया विश्लेषण। विभिन्न प्लेटफार्मों पर लोग दैनिक जीवन के विषयों पर टिप्पणी करते हैं और विभिन्न विषयों पर बातचीत करते हैं। एन.एल.पी. के उपयोग से हम सामाजिक मीडिया पोस्ट, टीट्स टिक-टिक वीडियो आदि का विश्लेषण कर सकते हैं और जान सकते हैं कि लोग क्या सोच रहे हैं और कैसे उनकी प्रतिक्रियाएं हो रही हैं। इसे व्यापार, राजनीति और सामाजिक अध्ययन के क्षेत्र में उपयोगी जानकारी का स्रोत बनाया जा सकता हैं।

एन.एल.पी. के अन्य उपयोगों में मशीन अनुभाषण, वॉयस रिकग्निशन, स्वर और वाक्य संशोधन, वाक्य संरचना विश्लेषण और स्रोत ही विचारों का प्रबंधन शामिल है। यह सुविधाएं हम अपने स्मार्टफोन पर भी प्राप्त कर सकते हैं।

♦♦♦

# एच.एम.वी. के ग्रामोफोन पर रिकॉर्ड किए गए पहले शब्द कौन से थे?

- प्रीति राज़दान,
वरिष्ठ निदेशक

हिज मास्टर्स वॉयस' (एच.एम.वी.) ने एक बार ग्रामोफोन रिकॉर्ड का इतिहास बताते हुए एक पुस्तिका प्रकाशित की थी। ग्रामोफोन का आविष्कार थॉमस अल्वा एडिसन ने 19वीं सदी में किया था। इलेक्ट्रिक लाइट और मोशन पिक्चर कैमरा जैसे कई अन्य उपकरणों का आविष्कार करने वाले एडिसन अपने समय में भी एक किंवदंती बन गए थे। जब उन्होंने ग्रामोफोन रिकॉर्ड का आविष्कार किया, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए सामान्य मानव की आवाज को रिकॉर्ड कर सकता था, इसलिए सबसे पहले एक प्रतिष्ठित विद्वान की आवाज रिकॉर्ड करना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने इंग्लैंड के प्रोफेसर मैक्स मूलर (राष्ट्रीयता जर्मन) को चुना, जो 19वीं सदी के एक और महान व्यक्तित्व थे।

उन्होंने मैक्स मूलर को पत्र लिखकर कहा, “मैं आपसे मिलना चाहता हूं और आपकी आवाज रिकॉर्ड करना चाहता हूं, कब आ सकता हूँ?" क्योंकि मैक्स मूलर एडिसन का बहुत सम्मान करते थे, इसलिए उन्हें उपयुक्त समय पर आने के लिए कहा जब यूरोप के अधिकांश विद्वान इंग्लैंड में एकत्रित होंगे। तदनुसार, एडिसन समुद्री जहाज द्वारा इंग्लैंड चले गये। वहां पर उनका विद्वानों से परिचय कराया गया। सभी ने एडिसन की उपस्थिति की सराहना की।

बाद में एडिसन के अनुरोध पर मैक्स मूलर मंच पर आये और उन्होंने ग्रामोफोन के सामने भाषण दिया। फिर एडिसन अपनी प्रयोगशाला में वापस चले गए और दोपहर बाद एक डिस्क लेकर वापस आए और उसे ग्रामोफोन पर बजाया। ग्रामोफोन से मैक्स मूलर की आवाज सुनकर दर्शक रोमांचित हो गए। उन्हें ख़ुशी थी कि मैक्स मूलर जैसे महान व्यक्ति की आवाज़ को भावी पीढ़ी के लाभ के लिए संगृहीत किया जा सकता है। कई बार तालियों की गड़गड़ाहट और थॉमस एडिसन को बधाई देने के बाद मैक्स मूलर मंच पर आए और विद्वानों को संबोधित करते हुए उनसे पूछा, “आपने सुबह मेरी मूल आवाज़ सुनी। फिर दोपहर के समय आपने वही आवाज इस यंत्र से निकलती हुई सुनी। क्या आप समझते हैं कि मैंने सुबह क्या कहा या आपने दोपहर को क्या सुना?”

दर्शक चुप हो गए क्योंकि वे उस भाषा को समझ नहीं पाए जिसमें मैक्स मूलर ने बात की थी। जैसा कि वे कहते हैं, यह उनके लिए 'ग्रीक और लैटिन' था। लेकिन अगर यह ग्रीक या लैटिन होता, तो वे निश्चित रूप से समझ जाते क्योंकि वे यूरोप के विभिन्न हिस्सों से संबंध रखते थे। यह आवाज एक ऐसी भाषा में थी जिसे यूरोपीय विद्वानों ने कभी नहीं सुनी थी। फिर मैक्स मूलर ने अपनी बात बताई। उन्होंने कहा कि वह जिस भाषा में बोले थे वह संस्कृत थी और उसमें ऋग्वेद का पहला श्लोक था, जिसमें कहा गया है "अग्नि मीले पुरोहितम्"।

यह ग्रामोफोन प्लेट पर पहला रिकॉर्ड किया गया सार्वजनिक संस्करण था।

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवं रत्वीजम।
होतारं रत्नधातमम।। (Rig Veda 1.001.01)

मैक्स मूलर ने दर्शकों को संबोधित करते हुए कहा, “वेद मानव जाति का सबसे प्राचीन ग्रंथ हैं। और "अग्नि मीले पुरोहितम्" ऋग्वेद का पहला श्लोक है।

पहले आदिम समय में, जब लोग यह भी नहीं जानते थे कि कैसे अपने शरीर को ढँकना है, और शिकार करके जीवन यापन करते थे और गुफाओं में रहते थे, उस समय भारतीयों ने उच्च सभ्यता प्राप्त की थी और उन्होंने विश्व को वेदों के रूप में सार्वभौमिक दर्शन दिया।” जब "अग्नि मीले पुरोहितम" को पुन: दोहराया गया, तो सभी दर्शक सम्मान के प्रतीक के रूप में मौन खड़े हो गए।

**श्लोक का अर्थ है**: “हे अग्नि स्वरूप परमात्मा, इस यज्ञ के द्वारा मैं आपकी आराधना करता /करती हूं। सृष्टि के पूर्व भी आप थे और आपके अग्निरूप से ही सृष्टि की रचना हुई। हे अग्निरूप परमात्मा, आप सब कुछ देने वाले हैं। आप प्रत्येक समय एवं ऋतु में पूज्य हैं। आप ही अपने अग्निरूप से जगत् के सब जीवों को सब पदार्थ देने वाले हैं एवं वर्तमान और प्रलय में सबको समाहित करने वाले हैं। हे अग्निरूप परमात्मा आप ही सब उत्तम पदार्थों को धारण करने एवं कराने वाले हैं।”

बाद में जब सभी लोग विद्वान के चारों ओर एकत्रित हुए तब उन्हें यह ज्ञात हुआ कि सभी श्लोक हजारों वर्षों से चले आ रहे हैं, ध्वन्यात्मक तरीके से, प्रत्येक पीढ़ी ठीक वही बोलती है जो पिछली पीढ़ी द्वारा उसके कान में  बताया गया था।

वास्तविक घटना का उल्लेख “Autobiography Memories and Experiences of Moncure Daniel Conway -Volume 2 “ नामक पुस्तक में मिलता है।

पुस्तक से प्रासंगिक उद्धरण नीचे प्रस्तुत किया गया है-

When the phonograph was invented, one of its first appearances was at the house of J. Fletcher Moulton, Q.C. (now M.P.). A fashionable company, among them men eminent in science and letters, gathered around the novelty, and Max Müller was the first called on to utter something in the phonograph. We presently heard issuing from it these sounds: *Agnim ile purohitam yagnasm yadevam ritvigam hotâram ratnadhâtamam.*

There was a burst of merriment at these queer sounds, but a deep silence when Max Müller explained that we had heard words from the oldest hymn in the world—the first in the Vedas: “Agni I worship—the chief priest of the sacrifice—the divine priest—the invoker—conferring the greatest wealth.” And then

वास्तव में हमें प्राचीन गौरवशाली भारतीय सभ्यता का हिस्सा होने पर गर्व की अनुभूति होनी चाहिए।

♦♦♦

**जरा सोचिए**

हिन्दी हमारी राजभाषा है
हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है
हिन्दी हमारी राज्यभाषा है

फिर हिन्दी के कार्य में संकोच क्यों?

हिन्दी में कार्य करें, राष्ट्र का निर्माण करें।

# 12वां विश्व हिन्दी सम्मेलन

**(15 से 17 फरवरी, 2023)**

- ओम प्रकाश शर्मा,
हिन्दी परामर्शकार

विश्व हिन्दी सम्मेलन की परिकल्पना राष्ट्र भाषा प्रचार समिति, वार्धा द्वारा 1973 में की गई थी। इसके परिणामस्वरूप पहला विश्व हिन्दी सम्मेलन साढ़े चार दशक पहले 10 से 12 जनवरी, 1975 को नागपुर, भारत में आयोजित किया गया था। अब तक 12 विश्व हिन्दी सम्मेलन विश्व के विभिन्न भागों में आयोजित किए जा चुके हैं। वर्ष 2018 में मारीशस में आयोजित 11वें विश्व हिन्दी सम्मेलन के दौरान अगला विश्व हिन्दी सम्मेलन फिजी में आयोजित करने की अनुशंसा की गई थी। विश्व हिन्दी सम्मेलन में दुनियाभर के हिन्दी प्रेमी, शोधकर्ता, साहित्याकार, भाषा विज्ञानी, विषय विशेषज्ञ और पत्रकार इस आयोजन में शामिल होते हैं। शुरुआत में यह हर 4 साल में आयोजित किया जाता है लेकिन अब यह हर 3 साल में आयोजित किया जाता है।

12 वें विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन विदेश मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा फिजी सरकार के सहयोग से 15 से 17 फरवरी, 2023 तक फिजी देश के नांदी शहर में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन का आयोजन स्थल देनाराउ आईलैंड कन्वेंशन सेंटर नांदी, फिजी में था। सम्मेलन का मुख्य विषय "हिन्दी - पारंपरिक ज्ञान से कृत्रिम बुद्धिमत्ता तक" था।

अपने अद्भुत उदबोधन भाषण में भारत सरकार के विदेश मंत्री श्री एस जयशंकर ने हिन्दी की महत्ता पर प्रकाश डाला एवं फिजी सरकार को धन्यवाद ज्ञापित किया। फिजी के राष्ट्रपति श्री रातू विल्यम मैवलीलीकाटोनिवेरे ने अपने उद्बोधन संबोधन में भारत का धन्यवाद अदा किया और

कहा कि संभवतः यह फिजी में किसी भी स्तर पर आयोजित होने वाला सबसे बड़ा अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन है। 12वें विश्व हिन्दी सम्मेलन में 30 से अधिक देशों के प्रतिनिधि शामिल हुए और कुल प्रतिनिधियों की संख्या लगभग 1400 थी। सम्मेलन में भारत और फिजी के प्रतिनिधियों के अतिरिक्त जापान, श्रीलंका, मॉरीशस, त्रिनिदाद एवं टोबैगो, ब्रिटेन, सूरीनाम, अमेरिका, दक्षिण अफ्रीका, उज्बेकिस्तान, मलेशिया, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड आदि देशों के प्रतिनिधि भी शामिल हुए।

इस सम्मेलन में निम्न विषयों पर सत्र आयोजित किए गए:

1. गिरमिटिया देशों में हिन्दी
2. फिजी और प्रशांत क्षेत्र में हिन्दी
3. सूचना प्रौद्योगिकी और 21वीं सदी की हिन्दी
4. मीडिया और हिन्दी का विश्वबोध
5. भारतीय ज्ञान परं पराकावैश्विक संदर्भ और हिन्दी
6. भाषाई समन्वय और हिन्दी अनुवाद
7. हिन्दी सिनेमा के विविध रूप : वैश्विकपरिदृश्य
8. विश्व बाजार और हिन्दी
9. बदलते परिदृश्य में प्रवासी हिन्दी साहित्य
10. देश विदेश में हिन्दी शिक्षण : चुनौतियां और समाधान

सम्मेलन स्थल पर हिन्दी भाषा के विकास से जुडी कई प्रदर्शनियों का आयोजन भी किया गया। सम्मेलन के दौरान सांस्कृतिक संबंध परिषद नई दिल्ली द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम और कवि सम्मेलन भी आयोजित किए गए।

हिन्दी को विश्व मंच पर स्थापित करने के लिए भारत के अलावा विश्व की विभिन्न हिन्दी संस्थाओं द्वारा इस लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए निरंतर प्रयास जारी हैं कि आने वाले समय में विश्व स्तर पर हिन्दी को उसका विनिर्दिष्ट स्थान अवश्य प्राप्त होगा। इसी कड़ी में 13वां विश्व हिन्दी सम्मेलन इंडोनेशिया के बाली में आयोजित किया जाएगा।

♦♦♦

# आधुनिक भारत

- रवि कुमार सिंह,
पी.एस.एस.

हमारा देश भारत 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र हुआ था। आज हमारे देश भारत को आजाद हुए 75 साल पूरे हो गए है। इतने सालो में हमने क्या अर्जित किया है इसकी समीक्षा करे तो पाएंगे कि आधुनिक शब्द कई मायनों में भारत के लिए बहुत बड़ा है।

हमारा भारत कितना आधुनिक हुआ है इससे समझने के लिए हमें अपने पड़ोसी देश चीन की तरफ रूख करना चाहिए। आज उसकी गिनती विश्व के विकसित देशों में की जाती है। इसकी तुलना में हमारा आधुनिक भारत महज एक बड़े बाजार के रूप में देखा जाता है। 7 दशकों में हम गरीबी को 25 प्रतिशत से 15 प्रतिशत तक ला पाए है। लोगों को रोजगार मिल रहा है। सड़के, कृषि, टेलिफोन आदि सुकून देने वाले क्षेत्र है। पर आज भी 30 करोड़ लोग गरीबी रेखा के नीचे जीवन जीने को मजबूर हैं। उनका जीवन संघर्ष की तरह बीत रहा है। स्वतंत्रता मिलने के बाद हमने कपड़ा टेक्सटाइल, कृषि उद्योग, परिवहन तथा संचार के क्षेत्र में बहुत तरक्की की है। आज हमारा देश पूर्ण रूप से कृषि में आत्मनिर्भर होने के साथ ही उत्पादनों का निर्यात भी करता है।

नरेन्द्र मोदी सरकार की मेड इन इंडिया, फास्ट इंडिया, डिजिटल इंडिया जैसे कदमों से भारत की आवश्यकता की गई चीजे अब देश में ही निर्मित हो रही है। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन भारत की रक्षा एवं अन्य उपकरणों का निर्माण स्वदेश में ही कर रहा है। इसरो आए दिन अंतरिक्ष में भारत की सफलता के नए कीर्तिमान रच रहा है।

विश्व के बाजर में भी भारत ने अपने उत्पादों की विश्वसनीयता तथा गुणवत्ता का लोहा मनवाया है। सरकार आयात को कम करने तथा निर्यात को बढ़ाने का प्रयास कर रही है। पर्यटन के लिहाज से स्टेच्यू ऑफ यूनिटी, अयोध्या, राम सेतु, बुद्ध सर्किट जैसी नई पर्यटन योजनाओं पर काम चल रहा है। देश में तीन तलाक, धारा 370 का हटना, राम मंदिर, नागरिकता बिल, वेशभूषा कोड जैसे कानून आए है। भारतीय समाज में धर्म के नाम पर खोदी गई खाई को भरने में ये सारे कानून मदद करेंगे। भारतीय समाज सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में उन्नति कर रहा है।

देश की विकास दर बहुत तेजी से बढ़ रही है। प्रत्येक भारतीय को बिजली, शौचालय, पेयजल, चिकित्सा, शिक्षा के सुलभ अवसर प्रदान करने की योजनाओं पर तेजी से काम चल रहा है। देश में जहां लोग अपनी संस्कृति को अपनाने से दूरी बना रहे हैं वही विदेशो में भारतीयों तथा भारत की संस्कृति को सम्मान मिल रहा है। योग को विश्वभर में अपनाया जाना प्रगतिशील भारत के बढ़ते प्रभाव की निशानी है।

जब हम आधुनिक भारत की बात कर रहे है तो हमें अपनी उपलब्धियों के साथ-साथ समस्याओं को ध्यान में रखना होगा। आज भारत की सबसे बड़ी समस्या बेरोजगारी है। करोड़ों युवा उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी उन्हें कोई काम नहीं मिल रहा है। जिससे उनके अंदर आक्रोश भर गया है। युवा नशाखोरी की प्रवृति में लिप्त हो रहे हैं।

आधुनिक भारत की दूसरी बड़ी समस्या शिक्षा है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम को लागू हुए एक दशक से अधिक समय हो गया है पर इसके बाद भी निम्न वर्ग के बच्चे शिक्षा से वंचित हैं। हमारी शिक्षा का स्वरूप रोजगारोन्मुख नहीं है और न ही जीवन के लिए उपयोगी है जिससे युवाओं में कौशल विकसित किया जाए। हाल ही में भारत सरकार ने नई शिक्षा नीति जारी की है जिससे शिक्षा को सार्थक एवं जीवन उपयोगी बनाने में मदद मिलेगी।

देश की तीसरी बढ़ी समस्या गरीबी और महंगाई है। गरीब आए दिन गरीब होता जा रहा है और अमीर निरंतर अमीर होता जा रहा है। देश के मध्यम वर्ग को अपनी कमाई का एक बड़ा हिस्सा कर के रूप में देता है वह भी महंगाई की समस्या से त्रस्त नजर आता है। यदि सरकार युवाओं को प्रशिक्षण देकर उत्पादन के कार्य में लगाए तो निश्चय ही तीनों बड़ी समस्याओं का समाधान किया जा सकेगा।

भ्रष्टाचार भारत की एक विकराल समस्या है जो देश को उंचे पदाधिकारियों से लेकर चपरासी तक सभी लोगों में है। भ्रष्टाचार के कारण ही देश का अपार धन दूसरे देश के बैंको में जमा है। यदि सरकार इस दिशा में कोई सार्थक कदम उठाएं तो न केवल भारत के लोगों के जीवन स्तर में बल्कि देश की अर्थव्यवस्था में सुधार आ सकता है।

भ्रष्टाचार को जड़ से मिटाने के लिए जरूरी नहीं है कि सरकार कोई कानून बनाए बल्कि समाज भी स्वेच्छा से पहल करे और इस समस्या का खात्मा करे तभी भारत भ्रष्टाचार मुक्त हो सकता है। देश की अन्य बड़ी समस्याओं में आतंकवाद एवं नक्सलवाद भी है जिससे हमारे सुरक्षा बल निपट रहे हैं।

♦♦♦

# दही की कीमत

- अनिल कुमार,
पी.पी.एस.

जब एक शख्स लगभग पैंतालीस वर्ष के थे तब उनकी पत्नी का स्वर्गवास हो गया था। लोगों ने दूसरी शादी की सलाह दी परन्तु उन्होंने यह कहकर मना कर दिया कि पुत्र के रूप में पत्नी की दी हुई भेंट मेरे पास हैं, इसी के साथ पूरी जिन्दगी अच्छे से कट जाएगी।

पुत्र जब वयस्क हुआ तो पूरा कारोबार पुत्र के हवाले कर दिया। स्वयं कभी अपने तो कभी दोस्तों के ऑफिस में बैठकर समय व्यतीत करने लगे। पुत्र की शादी के बाद वह और अधिक निश्चित हो गए। पूरा घर बहू को सुपुर्द कर दिया। पुत्र की शादी के लगभग एक वर्ष बाद दोहपर में खाना खा रहे थे, पुत्र भी लंच करने ऑफिस से आ गया था और हाथ-मुँह धोकर खाना खाने की तैयारी कर रहा था। उसने सुना कि पिता जी ने बहू से खाने के साथ दही माँगा और बहू ने जवाब दिया कि आज घर में दही नहीं है। खाना खाकर पिताजी ऑफिस चले गये। थोडी देर बाद पुत्र अपनी पत्नी के साथ खाना खाने बैठा। खाने में प्याला भरा हुआ दही भी था। पुत्र ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी और खाना खाकर स्वयं भी ऑफिस चला गया।

कुछ दिन बाद पुत्र ने अपने पिताजी से कहा- "पापा आज आपको कोर्ट चलना है, आज आपका विवाह होने जा रहा है।" पिता ने आश्चर्य से पुत्र की तरफ देखा और कहा-"बेटा मुझे पत्नी की आवश्यकता नही है और मैं तुझे इतना स्नेह देता हूँ कि शायद तुझे भी माँ की जरूरत नहीं है, फिर दूसरा विवाह क्यों?" पुत्र ने कहा "पिता जी, न तो मै अपने लिए माँ ला रहा हूँ न आपके लिए पत्नी, मैं तो केवल आपके लिये दही का इन्तजाम कर रहा हूँ। कल से मैं किराए के मकान मे आपकी बहू के साथ रहूँगा तथा आपके ऑफिस में एक कर्मचारी की तरह वेतन लूँगा ताकि आपकी बहू को दही की कीमत का पता चले।"

माँ-बाप हमारे लिये ए.टी.एम. कार्ड बन सकते है तो, हम उनके लिए आधार कार्ड तो बन ही सकते हैं।

♦♦♦

# कर्मो का फल

- ललिता रावत,
डाटा इन्ट्री ऑपरेटर

**"कर्म की गठरी बाँध के, जग में फिरे इंसान, जैसा करे वैसा भरे,
विधि का यही विधान।"**

जीवन के दिन रात के रहस्य को हम समझ नहीं पाते सृष्टि के वैज्ञानिक तत्व समझ आते है किन्तु मनो वैज्ञानिक समझ नहीं पाते। प्रत्येक जीव जिसमें सांस चल रही है कहीं सुखीं और कही दुखी है। चाहे मनुष्य हो या पशु पक्षी ऐसा क्यों? क्या कारण हैं क्या रहश्य हैं? अच्छा कर्म करने वाले कष्ट पाते देखें हैं बुरे कर्म करने वाले सुखी है। यह सब कर्मो का फल हैं। सच तो यह हैं कर्मो का फल मिलता जरूर हैं चाहे हमसे छोटा सा अनजाने में ही दोष क्यों ना हो जाये। वह संस्कार सामाजिक, नैतिक मूल्यों से प्रभावित होता ही है यदि प्राश्चित हो जाये तो सुधर भी जाते हैं। किन्तु कभीकभी विपरीत अ-वश्य में असहाय हो जाते हैं। इन परिणामो से परमात्मा भी बच नहीं पाए साधारण मनुष्य की तो बात ही क्या हैं।

महाभारत और रामायण के कुछ उदाहरण हैं जो कर्म के फल को स्पर्श करते हैं। द्रोपती का चीर हरण:- द्रोपती ने श्री कृष्ण को सहायता के लिए पुकारा है प्रभु मेरा इसमें क्या दोष है श्री कृष्ण का प्रतिउत्तर था बहन तुम भूल रही हो दुर्योधन को तुमने अट्हास करके व्यंग किया था कि अंधे का पुत्र अंधा होता है। दुर्योधन ने इसी उपहास का प्रतिशोध लिया था जुए पर हारने पर चीरहरण करवाया था, यह कर्मो का फल ही तो है।

इसी प्रकार महाभारत के युद्ध में भीष्म पितामह सरसैया पर कष्ट भोग रहे थे भीष्म पितामह ने श्री कृष्ण से पूछा प्रभु मेरा क्या दोष है जो मै इतना कष्ट पा रहा हू तो प्रभु ने कहा भूल रहे हो जब तुम पर एक सर्प आकर गिरा था तब तुमने उसे कंटीली झाड़ियों पर फेंक दिया था वह निकल नहीं पाया तो उसी के शाप से तुम यह कष्ट भोग रहे हो।

हमारे दैनिक जीवन में भी बहुत उदाहरण हैं हम समझ नहीं पाते उनके परिणामों के बारे में बिना सोचे आनंद लेना, सुखी अनुभव करना इस प्रकार के कई अदृश्य कार्य है जिनके परिणाम अच्छे और बुरे मिलते हैं कुछ के परिणाम नकारात्मक होते हैं और कुछ के सकारात्मक। आज जो कर्म हम कर रहे हैं परिपक्व होकर उनसे ही हमारे भाग्य की रचना होती है। हमारे भाग्य के निर्माता

हम खुद ही है और प्रत्येक मनुष्य को उसके भाग्य के अनुसार उसे फल या कुफल अवश्य भोगना पड़ेगा ही। इस समय हम जो दुख भुगत रहे है। भगवान् का एक विधान यह है कि हमारे कर्म, विचार और भावना के अनुसार ही हमें सुख या दुःख की प्राप्ति होगी और वह सुख या दुःख हमें खुद ही भोगना पड़ेगा। मनुष्य के कब किए हुए पाप का फल कब मिलेगा इसका कुछ पता नहीं है।

कुछ कर्म तो ऐसे भी है जिनके परिणामो के बारे में जानते हुए भी हम कर रहे है क्योकि इसमें मनुष्य को आनंद की प्राप्ति तो हो रही है पर इसके फल के बारे में हम सोचना नहीं चाहते हैं। जिसका उदाहरण आजकल के खान-पान, आराम दायक वस्तुए, आजकल का रहन सहन है कोई धनी कोई निर्धन तरह के कई उदाहरण हैं। अतः बड़ो का मानना है कि अपने अनुभव से, धार्मिक ग्रंथो से सीखकर हम कुछ अच्छे और बुरे कार्य कर जाते हैं जिसका परिणाम हमको भुगतना पड़ता है। जिस प्रकार आजकल के लोगो का खान-पान बदल गया हैं इसका सीधा असर हमारे स्वस्थ पर पड़ता है इससे इतनी बीमारियाँ हो रही हैं पर फिर भी हमको पिज़ा, बर्गर, चिल्ली पोटैटो आदि ही खाना है कोल्डड्रिंक जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है ये बाते जानते हुए भी हमको वही पीनी है जाने अनजाने में हम वही कार्य करते जा रहे है जिनके परिणाम अंततः घातक साबित होंगे।

जो हम मोबाइल का इतना ज्यादा इस्तेमाल कर रहे है इसका सकारात्मक प्रभाव के साथ साथ नकारात्मक प्रभाव भी पड़ेगा और पड़ भी रहा है मोबाइल के इतने ज्यादा उपयोग से भी कई परिणाम हमको भोगने पड़ सकते हैं और हम भुगत भी रहे हैं। फिर भी हम कर्म करते ही जा रहे है हमारा कर्म की और ध्यान नहीं जाता फल के लिए किसे दोष दें। इसके बारे में मनन करने की आवश्यकता है।

♦♦♦

हिन्दी किसी एक प्रदेश की भाषा नहीं बल्कि देश में सर्वत्र बोली जाने वाली भाषा है।

- विलियम केरी

# भारत की सुन्दरता एवं लेखक रस्किन बॉन्ड

- राजेश नेगी
कार्यालय सहायक

रस्किन बॉन्ड ब्रिटिश मूल के एक विजेता भारतीय लेखक हैं, जो भारत में बच्चों के साहित्य को बढ़ावा देने में उनकी भूमिका के लिए बहुत प्रसिद्ध हैं। उन्होंने 500 से अधिक लघु कथाएँ, निबंध और उपन्यास लिखे हैं। उनका लोकप्रिय उपन्यास "द ब्लू अम्ब्रेला" हैं उसी नाम की एक हिंदी फिल्म भी बनाई गयी थी। जिसे 2007 में सर्वश्रेष्ठ बाल फिल्म के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। रस्किन बॉन्ड बच्चों के लिए 50 से अधिक पुस्तकों और आत्मकथा के दो खंड के लेखक भी हैं। एक ब्रिटिश जोड़ें के बेटे के रूप में जन्मे जब भारत औपनिवेशिक शासन के अधीन था।

उनके काम की प्रेरणा हमेशा हिमालय की तलहटी में स्थित हिल स्टेशन रहे हैं। यहीं पर उन्होंने अपना अधिकांश बचपन बिताया। जब वे युवा थे तब उनके कुछ उपन्यास उस तरह के जीवन और अनुभवों को प्रतिबिंबित करते थे, जब वे देहरादून में रहते थे। वह वहां अपने कुछ दोस्तों के साथ एक छोटे से किराए के मकान में रहता था। "रेन इन द माउंटेन्स" नामक उनकी आत्मकथात्मक कृति में मसूरी में बिताया गया उनका जीवन प्रमुख रूप से शामिल है। "द रूम ऑन द रूफ" नामक पुस्तक तब लिखी गई थी जब वह मात्र 17 वर्ष के थे और इसमें उनके उस समय के अनुभव शामिल थे जब वह इंग्लैंड में रह रहे थे और भारत वापस आने के लिए उत्सुक थे। इसमें उनके माता-पिता कैसे थे और उनके साथ उनके रिश्ते के बारे में भी बहुत सारी जानकारी उपलब्ध है। इस पुस्तक के प्रकाशन के बाद ही उन्होंने अंततः लेखन को अपना पेशा बनाने का निर्णय लिया।

**व्यक्तिगत जीवन (Personal Life)**

एक ब्रिटिश जोड़े के बेटे रस्किन बॉन्ड का जन्म ब्रिटिश भारत के कसौली में 19 मई 1934 को हुआ था तब भारत औपनिवेशिक शासन के अधीन था। रस्किन बॉन्ड ने कभी शादी नहीं की। वह मसूरी में अपने दत्तक परिवार के साथ रहते हैं।

**रस्किन बॉन्ड का कैरियर (Career)**

रस्किन बॉन्ड ने अपने कामों के लिए प्रकाशक खोजने की कोशिश करते हुए एक फोटो स्टूडियो में कुछ समय के लिए काम किया। एक बार जब उन्होंने अपने लेखन से पैसा कमाना शुरू कर दिया, तो वे भारत वापस चले आए और देहरादून में बस गए। उन्होंने अगले कुछ साल स्वतंत्र लेखक के रूप में बिताए, अखबारों और पत्रिकाओं के लिए लघु कथाओं और कविताओं को कलमबद्ध किया। 1963 में, वे मंसूरी में रहने चले गए जहाँ उन्होंने अपने लेखन कैरियर को आगे बढ़ाया।

इस समय तक वह एक लोकप्रिय लेखक थे और उनके निबंध और लेख कई पत्रिकाओं और समाचार पत्रों में प्रकाशित होते थे। जैसे कि 'द पायनियर', 'लीडर', 'द ट्रिब्यून' और 'द टेलीग्राफ'। उन्होंने चार वर्षों तक एक पत्रिका का संपादन भी किया।

1980 में रस्किन बॉन्ड के सबसे लोकप्रिय उपन्यासों में से एक 'द ब्लू अम्ब्रेला' प्रकाशित हुआ था। एक लेखक के रूप में उनकी बढ़ती प्रसिद्धी ने पेंगुइन बुक्स का ध्यान खींचा। प्रकाशकों ने 1980 के दशक में बॉन्ड से संपर्क किया और उन्हें कुछ किताबें लिखने के लिए कहा। उनके पिछले उपन्यासों में से दो, "ऑन द रूम", "ऑन द रूफ" और इसके सीक्वल इन वैगंटेंट्स इन द वैली को 1993 में पेंगुइन इंडिया ने एक खंड में प्रकाशित किया था।

रस्किन बॉन्ड की पुस्तकें (Ruskin Bond Books)

उनकी कई रचनाएँ जिनमें उनके नॉन-फिक्शन लेखन संग्रह में निम्नलिखित पुस्तकें हैः

- हमारे पेड़ ग्रो इन देहरा (Our Trees Still Grow In Dehra)
- द नाइट ट्रेन एट देवली (The Night Train at Deoli)
- टाइम स्टॉप्स इन शामली (Time Stops At Shamli)
- एक चेहरा अंधेरे में और अन्य अड्डा (A Face in the Dark and other Hauntings')
- भूतों का मौसम (A Season of Ghosts)
- राज कृत भूत की कहानियां (Ghost Stories from the Raj)
- द बेस्ट ऑफ रस्किन बॉन्ड

रस्किन बॉन्ड का लेखन कैरियर पांच दशकों से अधिक समय तक फैला रहा है, जिसमें उन्होंने विभिन्न शैलियों के साथ प्रयोग किया, जिसमें कल्पना, निबंध, आत्मकथात्मक, गैर-कल्पना, रोमांस और बच्चों के लिए किताबें शामिल हैं। उन्होंने 500 से अधिक लघु कथाएँ, निबंध और उपन्यास, बच्चों के लिए 50 से अधिक पुस्तकें और दो आत्मकथाएँ (two volumes of autobiography), एक लेखक के जीवन के दृश्य (Scenes from a Writer's Life) और द लैंप इज द लिट (The Lamp is Lit) लिखी हैं। समय-समय पर रस्किन चाइल्ड डेवलपमेंट के लिए भी टिप्स देते रहते हैं।

वे टिप्स जो बच्चों को आगे बढ़ने और सफलता पाने में सहायक हो सकते हैं-

**1. अपनी रुचि के क्षेत्र को पहचानें**

रस्किन मसूरी के लंढौर के आइवी कॉटेज में रहते हैं। वे सप्ताह में एक दिन शाम में लंढौर के एक बुक शॉप पर जाते हैं। वे बच्चों को किताबें पढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं और उन्हें सफलता हासिल करने के लिए टिप्स भी देते हैं। एक बार उन्होंने बच्चों और पेरेंट्स से कहा था, 'आप अपनी रुचि (interest) जानने की कोशिश करें। उस दिशा में बढ़ने का प्रयास करें। सक्सेस पाने के लिए बड़े होने का इंतज़ार न करें। सिर्फ अपने इंटरेस्ट को स्किल के साथ मजबूती देने की कोशिश करें।' खुद रस्किन ने मात्र 17 साल की उम्र में "द रूम ऑन द रूफ" नॉवेल लिखा था। इस किताब को कई पुरस्कार भी मिले हैं।

**2. जुनूनी बनें**

रस्किन को लेखक बनने की धुन सवार थी। लेखक बनने के लिए उन्होंने हर छोटे-बड़े काम किए। छोटे काम को करने में उन्होंने कभी संकोच महसूस नहीं किया। कई बार उनकी कहानियां रिजेक्ट हुईं, पर वे हताश नहीं हुए। वे लेखन के मैदान में डटे रहे। एक इन्टरव्यू के दौरान बच्चों से भी रस्किन ने कुछ ऐसा ही कहा था। उन्होंने कहा, 'यह संभव है कि आप अपने प्रयास में कई बार असफल हों। असफलता से परेशान होकर अपनी फील्ड कभी नहीं बदलें। क्योंकि सक्सेस आपको अपनी रूचि के क्षेत्र में ही मिलेगी। 89 साल की उम्र में भी वे अपने पैशन को फॉलो कर रहे हैं।

### 3. नए आइडियाज को ध्यान में रखें

एक बार एक प्रोग्राम में रस्किन दिल्ली आये थे। उस समय उनकी उम्र लगभग 80 वर्ष थी। प्रोग्राम के दौरान वे एक कागज पर नोट करते जा रहे थे। जब उनसे पूछा गया, तो उन्होंने बेहतरीन जवाब दिया। उन्होंने कहा, 'मैं हमेशा अपने साथ नोटबुक और पेंसिल रखता हूं। जब भी मेरे दिमाग में कुछ आईडिया आता है, तो मैं उन्हें नोट कर लेता हूं। इससे आगे उस पर काम करने में सुविधा होती है। बच्चों को भी उन्होंने संदेश दिया, ' यदि आप तुरंत माइंड में आये आइडियाज को याद नहीं रखते हैं, तो उसे भूल जाने की संभावना बनी रहती है। नोट कर लेने पर आप उस पर काम कर सकते हैं।

### 4. कुछ नया करने से डरें नहीं

उस समय रस्किन बहुत छोटी उम्र के थे। जब भी किसी के पूछने पर वे जवाब देते-मैं बड़ा होकर लेखक बनूंगा। इतना सुनते ही लोग हंसने लगते। उस समय लेखन को करियर के रूप में अपनाना नई बात थी। लोगों के उपहास उड़ाने के बावजूद वे कभी हताश नहीं हुए। अपनी कोशिश जारी रखी। बच्चों और उनके पेरेंट्स को रस्किन टिप्स देते हैं, यदि खुद पर भरोसा है,तो कुछ नया और अलग करने से कभी नहीं डरें।

### 5. प्रयोग से आता है पर्सनैलिटी में परिपक्वता

"पेरेंटस बच्चों को एक्सपेरिमेंट करने से कभी नहीं रोकें। गलतियों से ही व्यक्ति सीखता है। गलतियां कर उन्हें सुधार करना नहीं भूलें। इससे आपका व्यक्तित्व मजबूत बनकर सामने आता है।' यह बात रस्किन की किसी भी बातचीत या उनकी लिखी किताब में आसानी से मिल सकती है।

### पुरस्कार और उपलब्धियां

रस्किन बॉन्ड को 1992 में (Our Trees Still Grow In Dehra) के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। उन्हें 1999 में पद्म श्री और 2014 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था। वह मसूरी में रहते हैं और आप उनसे अपनी किताबों पर हस्ताक्षर करवा सकते हैं और हर शनिवार को मॉल रोड के पास उनके साथ शानदार बातचीत भी कर सकते हैं।

♦♦♦

# महिलाओं की समाज में भूमिका

- प्रियांशी,
एम.सी.ए. छात्रा

**प्रस्तावना**

महिलाओं की समाज में एक महत्वपूर्ण भूमिका है। महिलाएं एक घर को बनाती है, घर परिवार बनाता है, परिवार समाज बनाता है, समाज देश बनाता है। अगर एक महिला शिक्षित होगी तो एक घर शिक्षित होगा और अगर एक घर शिक्षित होगा तो एक परिवार शिक्षित होगा, एक परिवार शिक्षित होगा तो एक समाज शिक्षित होगा, एक समाज शिक्षित होगा तो एक देश शिक्षित होगा। इसलिए महिलाएं एक देश को बनाने में एक अहम भूमिका रखती हैं।

**महिलाएं घर बनाती है, घर परिवार बनाता है।**
**परिवार समाज बनाता है, समाज देश बनाता है।।**

महिलाएं आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, व्यावसायिक सभी क्षेत्रों में लड़कों से आगे है। लेकिन आज भी लड़कियां लड़कों से पीछे हैं। हमारे देश में लड़कियों के लिए कितनी सारी योजनाएं चलाई जाती है। "बेटी बचाओं बेटी बढ़ाओं" लेकिन वास्तव में कुछ लोग आज भी अलग बेटी या बेटे को पढ़ाने की बात आएगी तो एक बेटे की पढ़ाई पर ज्यादा ध्यान देंगे। ऐसे क्यों?

**पढ़ी-लिखी तो क्या हुआ, हो तो तुम लड़की।**
**जांब कर ली तो क्या हुआ, हो तो तुम लड़की।।**

**लड़की ज्यादा पढ़-लिख ली तो अच्छा रिश्ता कहां से आएगा।**
**लड़का ज्यादा पढ़-लिख लिया तो घर दहेज से भर जाएगा।।**

आजकल के माता-पिता इसलिए एक लड़की को ज्यादा पढ़ाने से भी इसलिए डरते हैं कि अगर हमारी बेटी ज्यादा पढ़-लिख ले तो इसके लिए इतना काबिल लड़का कहां से ढूंढेंगे और कहां से इसका विवाह करेंगे। लेकिन अगर एक लड़के को पढ़ाने की बात आए तो नहीं सोचा जाएगा कि कहां से इसके लिए लड़की ढूढेंगे, क्योंकि हमारे समाज में दहेज की कुप्रथा अभी भी चल रही है।

दहेज के कारण न जाने कितनी लड़कियां हिंसा का शिकार होती हैं। घर में जलाई जाती हैं, उत्पीड़न किया जाता है और न जाने कितने अत्याचार जिनका हम अंदाजा भी नहीं लगा सकते। इसलिए हमारे समाज में दहेज से ज्यादा एक लड़की को शिक्षित करने पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि अगर वो शिक्षित होगी तो उसे किसी कार्य को करने के लिए न माता-पिता, भाई-पति इन सबकी सहमति की जरूरत नहीं पड़ेंगी। वह अपने फैसले स्वंय ले सकती है।

**रात का अंधेरा है तुम्हारे लिए खतरनाक,**
**तुमसे ही ऊंची-नीची होती खानदान की नाक।**
**मत भूलों न समाज बदला है न ही हमलोग,**
**बेटियां आज भी हैं बाप के कंधों का बोझ।**
**बेटा जवान है तो बाप का सहारा,**
**बेटी जवान है तो बाप बेचारा।**

कभी कोई लड़की अकेले बाहर नहीं जा सकती। उससे बचपन से ही सिखाया जाता है कि बेटी ऐसा मत करना। इससे तुम्हारे खानदान का सिर झुक जाएगा। लेकिन अगर बेटे को नहीं सिखाया जाएगा तो एक बेटा कभी एक लड़की को बराबर का सम्मान नहीं देगा। और ये समाज आज भी नहीं बदला। आज भी कई घरों में बेटियों को बाप के कंधे का बोझ माना जाता है। अगर हम एक बेटी को पढ़ाते भी हैं तो उसे बेटी को अपने माता-पिता का सहारा बनने के लिए भी उसके ससुराल की सहमति लेनी पड़ेगी। ऐसा क्यों? अगर एक माता-पिता अपने बेटे को पढ़ाते हैं तो, इस उम्मीद में कि बुढ़ापे में वह उसका सहारा बनेगा। लेकिन बेटियां क्यों एक माता-पिता का सहारा नहीं बन सकती। अगर एक लड़की लड़के से ज्यादा पढ़-लिख लेगी तो उसके आत्म-सम्मान पर बात आ जाएगी।

देश में महिलाएं आई.ए.एस. ऑफिसर बनकर कितने महत्वपूर्ण पद संभाल रही हैं। फिर भी प्रतिदिन अखबार में लड़कियों को छेड़े जाने की खबरें छपती रहती हैं, उसमें भी एक लड़की की ही गलती मानी जाती है।

**कभी कोई लड़की छिड़ी तो "दोषी" लड़की ही होगी।**
**जरूर कपड़ें "तंग" होंगे तो रात में निकली होगी।।**
**उसके कपड़े नहीं तुम्हारी मानसिकता "तंग" है।**
**अपने अधिकारों की खातिर लड़नी अब हमें जंग है।।**

**आशाओं की किरण दिखी है, सवेरा होना बाकी है।**
**नई सुवह की एक किरण, अंधेरा चीरने को काफी है।।**

अगर हम अपने घर में लड़के और लड़कियों को बराबरी का दर्जा दें तो शायद संपूर्ण समाज से महिलाओं पर जो अत्याचार हो रहे है, शायद वह कभी होंगे नहीं। उसे रात में निकलने में सोचना नहीं पड़ेगा। उससे एक निर्भय समाज का निर्माण होगा। इसलिए एक लड़के को लड़की का सम्मान करना आना चाहिए। हमारे समाज में नारियां सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। जैसे-

(क) नारी समाज की जननी है।
(ख) नारी चरित्र का निर्माण करती है।
(ग) अगर नारी शिक्षित होगी तो एक देश शिक्षित होगा।
(घ) नारी आर्थिक क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
(ङ) व्यावसायिक क्षेत्र में।
(च) प्रशासनिक क्षेत्र में।

समाज को एक नई दिशा देने वाली एक नारी ही है। कहा जाता है जहां एक नारी की पूजा होती है वहां देवता रमन करते हैं।

**यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः**

**बहुत हुआ सम्मान**
**अब होगी आर-पार की लड़ाई।**
**बराबरी का हक तुम भीख में क्या दोगे,**
**पूरी कायनात है हमारी।।**

**उपसंहार**

हमारे देश में लड़कियों को सम्मान प्राप्त करने के लिए किसी की आवश्यकता नहीं है। आजकल की महिलाएं स्वयं इतनी सक्षम हैं कि वह पूरा समाज चला सकें। किसी भी क्षेत्र में महिलाओं को अपना कर्तव्य निभाने के लिए किसी की सहमति की जरूरत नहीं है।

♦♦♦

# बहुभाषी शिक्षा के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग: चुनौतियां और अवसर

- ओम प्रकाश शर्मा
परामर्शकार (हिन्दी)

आज की तेजी से वैश्वीकृत दुनिया में, बहुभाषावाद का महत्व पहले से कहीं अधिक है। बहुभाषी शिक्षा, जिसमें कई भाषाओं में शिक्षण शामिल है, सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देने, संचार बढ़ाने और संज्ञानात्मक विकास में सुधार करने में सहायता कर सकती है। बहुभाषी शिक्षा को लागू करना चुनौतीपूर्ण कार्य हो सकता है, विशेषकर सीमित संसाधनों वाले क्षेत्रों में। प्रौद्योगिकी बहुभाषी शिक्षा के प्रसार के लिए इन चुनौतियों और अवसरों का समाधान प्रदान करती है।

**बहुभाषी शिक्षा की चुनौतियाँ**

बहुभाषी शिक्षा की मुख्य चुनौती पाठ्यपुस्तकों, प्रशिक्षित शिक्षकों और उपयुक्त शिक्षण सामग्री सहित संसाधनों की कमी है। यह उन क्षेत्रों में विशेष रूप से लागू होता है जहां भाषाओं की काफी ज्यादा विविधता है या जहां निर्देशन के लिए एक आम भाषा की कमी है। परिणामस्वरूप छात्रों की शिक्षा की समान गुणवत्ता तक पहुंच नहीं हो सकती है, जो कि उनकी मूल भाषा में पढ़ाई जाती है।

बहुभाषा शिक्षा के लिए एक और चुनौती मानकीकृत पाठ्यक्रम और आकलन की कमी है। इससे शिक्षकों के लिए यह सुनिश्चित करना मुश्किल हो जाता है कि छात्र समान सीखने के उद्देश्यों को पूरा कर रहे हैं, और यह शिक्षा की गुणवत्ता में असमानता भी पैदा कर सकता है।

अंतिम चुनौती योग्य एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की सीमित उपलब्धता है जो कई भाषाओं में कुशल और प्रशिक्षित हों। छात्रों को प्रभावी रूप से निर्देशन देने के लिए शिक्षकों के पास उन भाषाओं पर मजबूत पकड़ होनी चाहिए, जिनमें वे अध्यापन कर रहे हैं, और यह उन क्षेत्रों में खोजना और भी कठिन हो सकता है जहां कई भाषाएं बोली जाती हैं।

## बहुभाषी शिक्षा में प्रौद्योगिकी के अवसर

प्रौद्योगिकी बहुभाषी शिक्षा की चुनौतियों का सामना पाने के अवसर प्रदान करती है। डिजिटल उपकरणों, इंटरनेट कनेक्टिविटी और सीखने के प्लेटफॉर्म की बढ़ती उपलब्धता के साथ, प्रौद्योगिकी बहुभाषी शिक्षण संसाधनों तक पहुंच प्रदान कर सकती है।

सीखने को सपोर्ट करने के लिए एक अवसर मशीनी अनुवाद का उपयोग है। मशीनी अनुवाद एक ऐसी तकनीक है जो एक भाषा से दूसरी भाषा में पाठ का अनुवाद कर सकती है। जबकि मशीनी अनुवाद सटीक नहीं है, यह छात्रों को उनकी मूल भाषा में शैक्षिक सामग्री तक पहुंच प्रदान कर सकता है, जिससे शिक्षण को और अधिक सुलभ बनाया जा सकता है।

एक अन्य अवसर डिजिटल लर्निंग प्लेटफॉर्म का उपयोग है जो बहुभाषी संसाधन प्रदान करता है। ये प्लेटफॉर्म छात्रों को विभिन्न भाषाओं में वीडियो, पॉडकास्ट और इंटरैक्टिव अभ्यास सहित विभिन्न प्रकार की शिक्षण सामग्री तक पहुंच प्रदान कर सकते हैं। वे मूल्यांकन उपकरण भी प्रदान कर सकते हैं जो शिक्षकों को छात्र प्रगति की निगरानी करने और लक्षित प्रतिक्रिया प्रदान करने की सुविधा प्रदान करते हैं।

अंत में, प्रौद्योगिकी बहुभाषी शिक्षकों के प्रशिक्षण की सुविधा प्रदान कर सकती है। ऑनलाइन व्यावसायिक विकास पाठ्यक्रम और वेबिनार शिक्षकों के लिए बहुभाषी छात्रों को पढ़ाने में सर्वोत्तम अभ्यास सीखने में सहायता कर सकते हैं, और उन्हें उनके निर्देशन को सपोर्ट करने के लिए संसाधन प्रदान कर सकते हैं।

## निष्कर्ष

सांस्कृतिक समझ और संज्ञानात्मक विकास को बढ़ावा देने के लिए बहुभाषी शिक्षा महत्वपूर्ण है। बहुभाषी शिक्षा को लागू करना चुनौतीपूर्ण कार्य हो सकता है, यद्यपि विशेषकर सीमित संसाधनों वाले क्षेत्रों में। प्रौद्योगिकी बहुभाषी शिक्षण के संसाधनों तक पहुंच प्रदान करके और बहुभाषी शिक्षकों के प्रशिक्षण का सपोर्ट करके इन चुनौतियों से निपटने के अवसर प्रदान करती है। जबकि प्रौद्योगिकी एक अचूक अस्त्र नहीं है, परन्तु इसके वाबजूद भी यह बहुभाषी शिक्षा को सपोर्ट करने और सभी छात्रों के लिए समान सीखने के अवसरों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

♦♦♦

# सामाजिक मीडिया का युवाओं पर नकारात्मक प्रभाव

- नितेश कुमार,
कार्यालय सहायक

दुनिया में प्रौद्योगिकी की प्रगति मानव के लिए एक वरदान रही है; और आज कंप्यूटर और मोबाइल उपकरण हमारे दैनिक जीवन का एक हिस्सा बन गए हैं। इंटरनेट भी इन्हीं तकनीकों का एक हिस्सा है जिसकी हम में से कई लोग सराहना भी करते आए हैं। मूल रूप से, इंटरनेट ही है जो इन दिनों दुनिया को मुट्ठी में कर देता है। उदाहरण के लिए, सामाजिक मीडिया, जिसने दुनिया भर में लोगों के बीच बातचीत करने के लिए एक आधार पैदा किया है।

सामाजिक मीडिया के द्वारा हो रहे नकारात्मक प्रभावों पर अगर प्रकाश डाला जाए तो आपको ज्ञात होगा की यह हमारे लिए बड़े ही अफसोस की बात है कि हमारे किशोरों और युवाओं को इस के इस्तेमाल से लेकर उनको विलुप्त होने तक ले जाया गया है। अगर उनकी निगरानी नहीं की गई या प्रतिबंधित नहीं किया गया, तो इससे उनकी भलाई नहीं होगी और गंभीर प्रभाव भी पड़ सकते हैं।युवा सामाजिक मीडिया पर बहुत समय बिताते हैं इस लिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि यह किशोरों को कैसे प्रभावित करता है। किशोरों पर इसका प्रभाव खतरनाक हो सकता है। आइए किशोरों पर सामाजिक मीडिया के नकारात्मक प्रभावों की चर्चा करते हैं।

**किशोरों पर सामाजिक मीडिया का नकारात्मक प्रभाव**

सामाजिक मीडिया किशोरों को कैसे प्रभावित करता है? हमें इस तथ्य को स्वीकार करना चाहिए कि यह किशोर जीवन के विकास और विकासात्मक पहलुओं के लिए बेहद संवेदनशील हैं। और इसलिए, बच्चों पर सामाजिक मीडिया का उपयोग करने वाले प्रभावों का प्रत्येक वयस्क के लिए विशेष महत्व होना चाहिए। बच्चों पर पड़ने वाले इसका नकारात्मक प्रभावों को समय-समय पर देखा जाना चाहिए।

सामाजिक मीडिया एक महान सामाजिक नेटवर्क उपकरण के रूप में जाना जाता है, समाज में इसकी बुराइयों को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। किशोरों में विशेष रूप से इसका उपयोग से संभावित नुकसान की आशंका होती है। सामाजिक मीडिया के इन नकारात्मक प्रभावों

को अगर समय पर नहीं पहचाना गया और नियंत्रित नहीं किया गया तो यह आपके बच्चों के स्वास्थ्य और सामाजिक कल्याण के लिए जोखिम भरा हो सकता है। युवाओं पर सामाजिक मीडिया के नकारात्मक प्रभाव निम्नानुसार हैं:

**1. सही से गलत प्रयोजन की ओर ले जाना**

बच्चों की आसान सीखने और पकड़ने की योग्यता फिर से सामाजिक मीडिया द्वारा विभिन्न आकर्षक विज्ञापनों द्वारा पॉप अप की जा रही है और गेमिंग जोन की ओर उनका ध्यान भटका रही है। अगर कोई बच्चा अध्ययन सामग्री की खोज करने की कोशिश भी करता है, तो भी विज्ञापन उसका ध्यान भटकाने के लिए काफी होते हैं। साथ ही सामाजिक मीडिया पर निर्धारित आयु सीमा इतनी अस्पष्ट है कि कोई भी बच्चा इंटरनेट की दुनिया की बकवास सामग्री में प्रवेश पाने का मार्ग प्रशस्त कर सकता है, जितना कि अश्लील सामग्री। प्रदर्शित सामग्री की सुरक्षा और सुरक्षा की कुल कमी के साथ, हम कैसे आशा कर सकते हैं कि हमारी संस्कृति सही रास्ते पर आगे बढ़ रही है? बच्चों का मन इन कूड़ा-करकट से मिलावटी हो जाता है; भविष्य के भारत की सीढ़ी होने के नाते, वे निश्चित रूप से हमारी संस्कृति और छवि को सार्वभौमिक रूप से बाधित कर रहे हैं।

**2. साइबर-धमकी या साइबरबुलिंग:-** एक साइबर बुली (बदमाश) विशिष्ट सामाजिक मीडिया उपयोगकर्ताओं को झूठी, शर्मनाक या शत्रुतापूर्ण जानकारी देने के लिए इसका उपयोग करता है। लंबे समय तक साइबर बदमाशी के शिकार लोग अक्सर अवसाद, अलगाव, अकेलापन, तनाव और चिंता में डूबे रहते हैं वह अपने आत्मसम्मान में कमी को महसूस करता है और कुछ तो आत्महत्या तक कर बैठते हैं। साइबरबुलिंग के प्रभावों को कैसे रोका जाए इसके लिए निम्न उपाए किये जा सकते हैं:-

i. उन प्रभावों को समझें जो किशोरों के लिए जोखिम पैदा करते हैं।
ii. सभी सामाजिक मीडिया प्लेटफॉर्म्स से खुद को भी परिचित करें।
iii. सामाजिक मीडिया पर दूसरों का ध्यान आकर्षित करने के लिए किशोर क्या करते हैं, इसका ध्यान रखें।
iv. अपने बच्चे के साथ इस विषय पर बातचीत करें।
v. सामाजिक मीडिया के उपयोग पर कुछ नियम निर्धारित करें।
vi. आपके बच्चे के डिवाइस पर सामाजिक मीडिया उपयोग के निगरानी के लिए ऐप जरुर इसतेमाल करें।

**3. नींद न आना:-** सामाजिक मीडिया आज किशोरावस्था में नींद न आने के प्रमुख कारणों में से एक है। वे लगातार इस बात को लेकर चिंतित रहते हैं कि उनके दोस्त क्या पोस्ट कर रहे हैं और क्या साझा कर रहे हैं। और अगर वे विशेष रूप से सोने के समय या सोने से ठीक पहले ऐसा करते हैं, तो उनकी नींद बाधित होने की बहुत अधिक संभावना है।

यदि उनको रुकने के लिए प्रेरित नहीं किया गया तो किशोर अधिक अवधि तक सामाजिक मीडिया पर सक्रिय रह सकते हैं। इसका अधयन आपको नींद के महत्व और नींद के नुकसान के जुड़े जोखिमों को समझने में मदद कर सकता है।

**4. फेसबुक, इंस्ट्राग्राम, इंस्ट्राग्राम अवसाद:-** फेसबुक, इंस्ट्राग्राम अवसाद एक भावनात्मक असंतुलन है जो सामाजिक मीडिया के उपयोग से जुड़ा है। जब एक किशोर को अपने सामाजिक मीडिया के दोस्तो में हीनता महसूस करते हैं, तो वे अक्सर अवसाद यानी अवसाद में पड़ जाते हैं जिसे आमतौर पर फेसबुक, इंस्ट्राग्राम अवसाद यानी अवसाद कहा जाता है।

ऐसे किशोरों के लिए उनके फेसबुक, इंस्ट्राग्राम या ट्विटर मित्रों द्वारा उनके लिए खड़े होने या उसे स्वीकार किए जाने की आवश्यकता होती है जो ऐसे युवाओ को अवसाद के इस रूप से बचा सकते हैं।

**5. इंटरनेट की लत:-** किशोरों में अनियंत्रित सामाजिक मीडिया के उपयोग से इंटरनेट की लत लग जाती है। बच्चे जितना अधिक समय सामाजिक मीडिया पर बिताते हैं, वे उतनी ही नई कहानियों और विचारों के संपर्क में आ जाते हैं जो वे तलाशना चाहते हैं। यह आदत अंततः एक लत में बदल जाती है। अगर जल्द संभाला नहीं गया तो उनकी स्कूल पढ़ाई, मानसिक स्वास्थ्य और यहां तक कि व्यक्तिगत विकास भी प्रभावित हो सकता है।

**6. आत्म-सम्मान कम होना:-** ज्यादातर किशोर लड़कियां सामाजिक मीडिया पर समय बिताने के बाद मशहूर हस्तियों से अपनी तुलना करना शुरू कर देती हैं और उनकी तरह पतली, सुंदर और अमीर दिखना चाहती हैं। किशोरावस्था में, उन व्यक्तियों को कॉपी करना सामान्य है जिन्हें वे अपना आदर्श मानते हैं और जिसका वे प्रशंसा करते हैं। यह नकल उनके स्वाभिमान और गरिमा को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकती हैं।

अलग-अलग अध्ययनों से पता चलता है कि जो लड़किया सामाजिक मीडिया पर अधिक समय बिताते हैं वह अपने आपको उन मशहूर हस्तियों के समान चित्रित करने के लिए अपने मित्र मंडलियों से अलग हो जाती हैं। और आखिर में होता यह है कि उनके दोस्त उन्हें स्वीकार नहीं करते हैं। और फिर वे धीरे-धीरे अपना आत्म-सम्मान खो देती हैं।

**7. दैनिक गतिविधियों में कमी:-** सामाजिक मीडिया का बहुत ज्यादा उपयोग करने वाले किशोर उन गतिविधियों पर पर्याप्त समय नहीं बिताते हैं जो निश्चित रूप से मानसिक क्षमताओं, कौशल और शारीरिक क्षमताओं को बढ़ाते हैं।

जो लोग रोजाना व्यायाम करते हैं, उनका शरीर एंडोर्फिन छोड़ता है जो कि हमारे मस्तिष्क को सकारात्मक रहने और अवसाद को कम करने का संकेत देता है। इस प्रकार घटी हुई दैनिक गतिविधियाँ एंडोर्फिन के श्रोतों को कम करती हैं और इससे अवसाद एक आम समस्या बन जाती हैं।

**8. एकाग्रता (ध्यान) में कमी:-** आज छात्रों पर सामाजिक मीडिया के नकारात्मक प्रभाव को आसानी से देखे जा सकते हैं। विभिन्न कार्यों, जैसे कि स्कूलवर्क, क्लासवर्क या होमवर्क, किसी भी महत्वपूर्ण चीज़ से निपटने के लिए अधिक एकाग्रता (ध्यान) की आवश्यकता होती है, लेकिन अब किशोरों को सामाजिक मीडिया का उपयोग करने की आदत लग गई है। उनमें से ज्यादातर इसे मल्टीटास्किंग मानते हैं लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है। शोध बताते हैं कि निरंतर सामाजिक मीडिया का उपयोग ध्यान पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है, और यह अध्ययन, सीखने और प्रदर्शन में रुकावट पैदा करता है।

**निष्कर्ष:-** विषय के गहन विश्लेषण के साथ, हम सामाजिक मीडिया को एक ऐसे उपकरण के रूप में मान सकते हैं, जिसके लिए अत्यंत सावधानी से बरतने की आवश्यकता है। अगर सही तरीके से इस्तेमाल किया जाए तो यह बेहद फायदेमंद हो सकता है। निस्संदेह, सामाजिक मीडिया हमारी संस्कृति पर बहुत अच्छा प्रभाव डाल सकता है और हमारी पुरानी परंपरा को अपार खुशी और प्रतिष्ठा के साथ फैलाने में मदद कर सकता है। केवल एक दृढ़ दिमाग, सदबुद्धि अच्छी बुद्धि और उपलब्ध स्रोत के लिए एक सभ्य दृष्टिकोण की आवश्यकता है। इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि सामाजिक मीडिया का भारतीय संस्कृति पर सकारात्मकता के साथ-साथ नकारात्मक प्रभाव भी काफी हद तक दिखाई देते हैं।

♦♦♦

# भारतीय संस्कृति

संजय कुमार,
पी.एस.एस.

**प्रस्तावना:-**

भारत संस्कृतियों से समृद्ध देश है, जहाँ अलग-अलग संस्कृतियों के लोग रहते हैं। हम भारतीय संस्कृति का बहुत सम्मान और आदर करते हैं। संस्कृति सब कुछ है जैसे दूसरों के साथ व्यवहार करने का तरीका, विचार, प्रथा जिसका हम अनुसरण करते हैं। कला, हस्तशिल्प, धर्म, खाने की आदत, त्यौहार, मेले, संगीत और नृत्य आदि सभी संस्कृति का हिस्सा हैं। भारतीय संस्कृति विभिन्नता में एकता का अनूठा संगम प्रस्तुत करती है।

**भारत की विभिन्न संस्कृतियाँ:-**

**भाषा, धर्म और पंथ:-** भारत की राष्ट्रीय भाषा हिन्दी है हालाँकि विभिन्न राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों में लगभग 22 आधिकारिक भाषाएँ और 400 दूसरी भाषाएँ प्रतिदिन बोली जाती हैं। इतिहास के अनुसार, हिन्दू और बुद्ध धर्म जैसे धर्मों की जन्मस्थली के रुप में भारत को जाना जाता है। भारत की अधिकांश जनसंख्या हिन्दू धर्म से संबंध रखती है। हिन्दू धर्म की दूसरी विविधता शैव, शक्त्य, वैष्णव और स्मार्ता है।

**वेशभूषा और खानपान:-** भारत अधिक जनसंख्या के साथ एक बड़ा देश है जहाँ विभिन्न धर्मों के लोग अपनी अनोखी संस्कृति के साथ एकसाथ रहते हैं। देश के कुछ मुख्य धर्म हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, जैन और यहूदी हैं। भारत एक ऐसा देश है जहाँ देश के अलग-अलग हिस्सों में भिन्न - भिन्न भाषाएँ बोली जाती हैं। आमतौर पर यहाँ के लोग वेशभूषा, सामाजिक मान्यताओं, प्रथा और खाने की आदतों में भिन्न होते हैं।

**पर्व और जयंतियाँ:-** विभिन्न सामाजिक कार्यक्रमों सहित हम कुछ राष्ट्रीय उत्सवों को एकसाथ मनाते हैं जैसे गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, गाँधी जयंती आदि। बिना एक-दूसरे में टाँग अड़ाये बेहद खुशी और उत्साह के साथ देश के विभिन्न भागों में विभिन्न धर्मों के लोग अपने त्योंहारों को मनाते हैं।

**निष्कर्ष:-** कुछ कार्यक्रम जैसे बुद्ध पूर्णिमा, महावीर जयंती, गुरु पर्व आदि कई धर्मों के लोगों द्वारा एकसाथ मनाया जाता है। भारत अपने विभिन्न सांस्कृतिक नृत्यों जैसे शास्त्रीय (भरत नाट्यम, कथक, कथक कली, कुच्ची पुड़ी) और अपने क्षेत्रों के लोक नृत्यों के अनुसार बहुत प्रसिद्ध हैं। पंजाबी भाँगड़ा करते हैं, गुजराती गरबा करते हैं, राजस्थानी घुमर करते हैं, आसामी बिहू करते हैं। इसलिए भारत दुनिया भर में अपने विविध संस्कृतियों के लिए प्रसिद्ध है।

♦♦♦

# जीवन का संदेश

राज,
पी.एम.जी. दिशा

लगभग 10 साल का बालक एक मकान का गेट बजा रहा है।
तभी मकान का गेट खुला।
मालकिन- बाहर आकर पूछी क्या है?
बालक- आंटी जी क्या मैं आपका गार्डन साफ कर दूं?
मालकिन- नहीं करवाना...
बालक- हाथ जोड़ते हुए दयनीय स्वर में, प्लीज आंटी जी करा लीजिए न, अच्छे से साफ करूंगा।
मालकिन- द्रवित होते हुए, अच्छा ठीक है, कितने पैसे लेगा?
बालक- पैसा नहीं आंटी जी खाना दे देना..
मालकिन- ओह, आ जाओ अच्छे से काम करना..
(लगता है बेचारा भूखा है पहले खाना दे देती हूं... मालकिन बुदबुदायी)
मालकिन- ऐ लड़के, पहले खाना खा ले, फिर काम करना...
बालक- नहीं आंटी जी, पहले काम कर लूं, फिर आप खाना दे देना...
मालकिन- ठीक है, कहकर अपने काम में लग गई।
बालक- एक घंटे बाद आंटी जी देख लीजिए, सफाई अच्छे से हुई कि नहीं..
मालकिन- अरे वाह, तूने तो बहुत बढ़िया सफाई की है, गमले भी करीने से जमा दिए, यहां बैठ मैं खाना लाती हूँ..
जैसे ही मालकिन ने उसे खाना दिया, बालक जेब से पन्नी निकाल कर उसमें खाना रखने लगा...
मालकिन- भूखे काम किया है, अब खाना तो यहीं बैठ कर खा ले, जरूरत होगी तो और दे दूंगी..
बालक- नहीं आंटी, मेरी मां घर पर है.. सरकारी अस्पताल से दवा तो मिल गई है, पर डॉ. साहब ने कहा है दवा खाली पेट नहीं खाना है।
मालकिन रो पड़ी.. और अपने हाथों से मासूम को उसकी दूसरी मां बनकर खाना खिलाया..
फिर.. उसकी मां के लिए रोटिया बनाई... और साथ उसके घर जाकर उसकी मां को रोटियां दे आयी..
बहन आप तो बहुत अमीर हो.. जो दौलत आपने अपने बेटे को दी है वो हम अपने बच्चों को नहीं दे पाते हैं। ईश्वर बहुत नसीब वालों को ऐसी औलाद देता है।

♦♦♦

# एक देवी

- एडमिरल के. एस. नूर
(पति डॉ. आरती नूर)

शांत शालिनी देवी थी वो
समय की ठोकर खाई हुई
सरकारी दफतर में दिखती
सहमी सी घबराई हुई।

देख के लगता था ऊंचे घर
पली बढ़ी होगी शायद
फूल बिखरते, उसके मुख से
बातें मीठी जैसे शहद।

लेकिन उसके अंतर में
एक हीन भावना दिखती थी,
मगर साथ कुल की मर्यादा
संस्कृति खूब झलकती थी।

सुनते थे उसके अपने
अपनाने से कतराते थे
ग़ैरों को अपना बैठे थे
और उसको ठुकराते थे।

पूरे साल, तो सारे जन
उसको मुंह नहीं लगाते थे,
पर कभी-कभी सब मिलकर एक दिन
उसकी गाथा गाते थे।

उत्सुकता में जाकर एक दिन
मैंने पूछा उसका नाम
बोली "नाम खो गया बेटे!
अब तो बस समझो गुमनाम।

जब अपने ही ना अपनाएं,
उससे बढ़कर क्या अपमान?
भारत की रहने वाली हूँ
"हिन्दी भाषा मेरा नाम!"

♦♦♦

# योग का महत्व

- राजेन्द्र सिंह भंडारी,
परियोजना अधिकारी

खाली इक्कीस को नहीं हर दिन कीजै योग,
हल्का फुल्का तन रहे और काया रहे निरोग।

तुम खानपान से लीजिए अब तो जा के जोग,
भूल के ना कीजियो जो चाहो सो भोग।

परण आज ही लीजियो सीने को तुम थोक
मन तो ललचाएगा तू जाकर इस को रोक।

जो किया नहीं परहेज तो घेर ही लेगा रोग,
खुद ही खुदको डांट लो खुद ही डालो टोक।

ये जीवन इसकी देन है समझो इसे संयोग,
जो सुध ना ली आपने कल को होगा शोक।

बेवा कितने हो गए कितनी ही सूनी कोख,
जिसने मेरी ना सुनी वो चला गया परलोक।

♦♦♦

# अनमोल वचन

संकलनकर्त्ता
- सुदेश शर्मा
(धर्मपत्नी श्री ओम प्रकाश शर्मा)

1. धैर्य और शांति दो शक्तिशाली ऊर्जा हैं।
   धैर्य हमें मानसिक रूप से मजबूत बनाता है,
   और शांति हमें स्वाभाविक रूप से,
   शक्तिशाली बनाती हैं।
2. पराजय तब नहीं होती,
   जब आप गिर जाते हैं।
   पराजय तब होती है,
   जब आप उठने से इन्कार कर देते हैं।
3. सफलता का कोई रहस्य नहीं है
   यह तैयारी, कड़ी मेहनत और
   असफलता से सीखने का परिणाम है।
4. यदि कुछ करना आपके लिए महत्वपूर्ण है
   तो आप कोई रास्ता ढूंड लेंगे।
   अगर महत्वपूर्ण नहीं है,तो आप कोई बहाना ढूंड लेंगे।
5. यदि आप जीतते हैं
   यह निशिचत रूप से महत्वपूर्ण कार्य है
   लेकिन अगर आप हारते हैं तो
   आपको इसे सकारात्मक रूप से लेना चाहिए।
6. जीत और हार मन पर निर्भर हैं,
   मान लिया तो हार
   और ठान लिए तो जीत।
7. गलत लोगों के साथ
   तर्क-वितर्क करने से कहीं बेहतर है
   सही लोगों से समन्वय करना।
   ठीक उसी प्रकार एक सार्थक चुप्पी कहीं बेहतर है
   व्यर्थ के शब्दों से।

♦♦♦

# माँ

- अनिल कुमार
पी.पी.एस.

जब अकेला रहा तो उसकी याद आई
अँधेरे में था तो उसकी याद आई।
जब भूख लगी तो उसकी याद आई
नींद नहीं आई तो उसकी याद आई।
सोचने में कितनी आसान लगती थी ये जिंदगी
जब खुदसे जीना सीखा था तो उसकी याद आई।
तभी तो लगा की माँ इतनी मतलबी कैसे हो सकती है
हमसे भी ज्यादा हमारे लिए कैसे सो सकती है।
लेकिन सच तो ये है की वो माँ ही होती है
जो हमारा पेट भर कर खुद भूखी रह लेती है।

♦♦♦

---

# उसकी अहमियत बताना भी ज़रूरी है

- संजय कुमार,
पी.एस.एस.

उसकी अहमियत है क्या, बताना भी ज़रूरी है !
है उससे इश्क़ अग़र तो जताना भी ज़रूरी है !!
अब काम लफ़्फ़ाज़ी से तुम कब तक चलाओगे !
उसकी झील सी आंखों में डूब जाना भी ज़रूरी है !!
दिल के ज़ज़्बात तुम दिल मे दबा कर मत रखो !
उसको देख कर प्यार से मुस्कुराना भी ज़रूरी है !!
उसे ये बारहा कहना वो कितना ख़ूबसूरत है !
उसे नग्मे मोहब्बत के सुनाना भी ज़रूरी है !!
किसी भी हाल में तुम छोड़ना हाथ मत उसका !
किया है इश्क़ गर तुमने, निभाना भी ज़रूरी है !!
सहर अब रूठना तो इश्क़ में है लाज़मी लेकिन !
कभी महबूब गर रूठे तो मनाना भी ज़रूरी है !!

♦♦♦

# असहनशीलता का राग

- सुदेश शर्मा
(धर्मपत्नी श्री ओम प्रकाश शर्मा)

असहनशीलता राग के बारे में क्या बताएं,
जो इस राह को अपनाए वह अंत में पछताए।
जरा - जरा सी बात पर क्रोध में आ जाए,
झुंझुलाने, आपा खोने की आदत उनकी बन जाए।
एंग्री यंगमेन की छवि जो अपनी बनाए,
शालीनता और सहनशीलता व्यवहार में ना लाए।
लक्ष्य से अपने भटक जाए, फूल भला जाए,
पर फलित कभी ना हो पाए।
जरा-जरा सी बात पर पल भर में रूठ जाए,
अच्छे-बुरे की समझ ना रह जाए।
सामान्य स्थिति में ना वह रह पाए,
मानव नहीं वह अमानव कहलाए।
असहनशीलता का हो जब वातावरण,
कौन खुश रह सकता है ऐसे में।
एक तरफ ऐसी हवा फैल जाए
कि आरोप-प्रत्यारोप का दौर शुरू हो जाए।
चर्चा है आजकल इसी बात की,
जमाना असहिष्णु होता जा रहा है।
कोई देता है वापस तगमा,
तो कोई घर छोड़ जा रहा है।
कोई इस राह को न अपनाए
ताकि उसे कोई कष्ट ना सताए।
कोई ऐसा राग न अपनाए,
है यही विनती हमारी।

♦♦♦

# चंद्रयान

- चन्द्र मोहन,
परियोजना सहायक

चाँद की सतह पे जब गाड़ दिया झंडा
पूरी दुनिया में भारत का डंका बज रहा है
मिली कामयाबी और कर दिया शंखनाद
इसरो ने यान जब चाँद पे उतारा है।

भारत का सामर्थ्य कम ना आंको
बच्चा बच्चा अब इसरो का नाम ले रहा है
नासा-चंसा-जाक्सा-ईसा-रॉसकॉसमॉस देख रहे
विक्रम ने ये पाँव कैसे चाँद पे टिकाया है।

चंद्रयान भेजा और मिली हमें कामयाबी
मिशन गगनयान अब लांच की तैयारी है
ऐसी सफलताएँ देख हो रही जय जयकार
विश्व गुरु बनने की अब फिर से तैयारी है।

चंदा मामा चंदा मामा दूर बहुत बोल लिए
चंदा मामा के अब टूर लगाने की बारी है
बेशक चंद्रयान एक महाअभियान है यारो
चाँद के भी उस पार अब जाने की तैयारी है।

♦♦♦

# सफलता की आधारशिला

संकलनकर्ता
- नवीन चन्द्र, पी.एस.एस.

जीवन एक चमत्कार है- इसकी प्रशंसा कीजिए
जीवन एक प्रतिभा है - इसका सदुपयोग कीजिए
जीवन एक रहस्य है - इसे प्रकट कीजिए
जीवन एक चुनौती है - इसे स्वीकार कीजिए
जीवन एक लालसा है - इसे नियंत्रित कीजिए
जीवन एक खजाना है - इसकी सुरक्षा कीजिए
जीवन एक वरदान है - इसे धारण कीजिए
जीवन एक कला है - इसे सुंदर बनाइए
जीवन एक वास्तविकता है - इसे पहचानिए
जीवन एक अवसर है - इसको निखारिए
जीवन एक गीत है - इसे गुनगुनाइए
जीवन एक यात्रा है - इसे रोमांचित बनाइए
जीवन एक पहेली है - इसे सुलझाइए
जीवन एक व्याधि है - इसका उपचार कीजिए
जीवन एक पाठ है - इससे कुछ सीखिए
जीवन एक घृणा है - इसे दूर कीजिए
जीवन एक शाप है - इसे हटाइए
जीवन एक उपहार है - इसका आनंद मनाइए

♦♦♦

अगर आप तेजी से चलना चाहते है तो अकेले चलिए,
लेकिन अगर आप दूर तक चलना चाहते है तो साथ मिलकर चलिए।

- रतन टाटा

# नारी सशक्तिकरण

- राम बिलास चौधरी,
कनिष्ठ सहायक

महिला है तू नारी है फिर तू क्यों बनी बेचारी है?
तू क्यों करती दुनिया की चिंता, इस चिंता में तो ही तू हारी है।
तू तोड़ समाज के बंधन को, हाथो में जकड़े कंगन को।
राह न तेरी है भटकी सी, तू खुद ही समाज में अटकी सी।
तू क्यों भूलती बार बार यहां, कि तुझसे ही संसार यहां।
साहस से तू आगे बढ़, कुरीतियों से निडरता से लड़।
अकेली है तू सोच ना ये, साहस हर पल साथ तेरे।
तू दुर्गा है तू काली है, तू कहां इनके आगे झुकने वाली है।
यह बस तुझ में समाया डर है यहां, तू बनी ममता की मूरत है यहां।
पर अब खुद की तू पहचान बना, तू भी है कुछ, लोगों को जना।
तुझसे ही जन्में है, भारत के लाल यहां, तू चाहे तो बन जा काल यहां।
इस पितृ समाज से लड़ जा तू, सफलता को लेके अड़ जा तू।
जीवन को जीवन जान ले तू, खुद को भी अब कुछ मान ले तू।
तेरी इस ताकत के आगे, समाज भी डरेगा यहीं।
तुझे रोकने की हिम्मत आगे से ये, करेगा नहीं।
बस तुझे कभी चुप रहना नहीं है, अपने ऊपर दर्द सहना नहीं है।
दुनिया की तू चिंता छोड़, सफलता के पथ पे तू लंबा दौड़।
हासिल कर वो जो तुझे करना है, किसी से नहीं तुझे अब डरना है।
इस सामाजिक दबाव में तुझे नहीं बिखरना है, इसी पल में तो तुझे अब निखरना है।
संघर्ष का अभिप्राय है तू, निडरता और साहस का पर्याय है तू।
बंदिशों को तू सारी तोड़ दे अब, अंधकार को तू छोड़ दे अब।
सबको ताक़त अपनी दिखला दे अब, सफलता का रुख़ अपनी ओर मोड़ दे अब।
तू हंस तू मुस्करा, निम्न मानसिकता को तू ठुकरा।
लोगों के तरीकों से तू बहुत जी चुकी, ये सामाजिक ज़हर बहुत पी चुकी।
अब खुद के लिए कुछ कर ले तू, जीवन को आनंदित होकर जी ले तू।
तू महिला है तू नारी है, कि तू क्यों बनी बेचारी है?
तू क्यों करती दुनिया की चिंता, इस चिंता में तो ही तू हारी है।

♦♦♦

**श्रद्धांजली**

# बिरजू महाराज

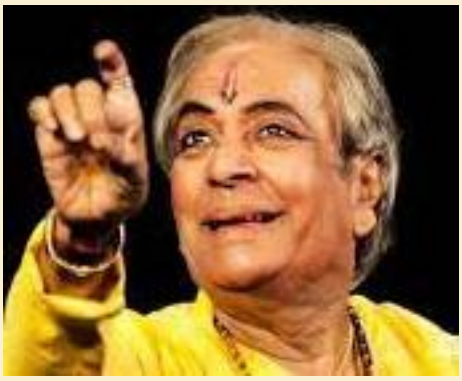

- ओम प्रकाश शर्मा,
हिन्दी परामर्शकार

पंडित बृज मोहन मिश्र (जिन्हें बिरजू महाराज भी कहा जाता है) का जन्म 04 फरवरी,1938 को कत्थक नृत्य के लिए प्रसिद्ध जगन्नाथ महाराज के घर हुआ था, जिन्हें लखनऊ घराने के अच्छन महाराज कहा जाता था, ये रायगढ़ रजवाड़े में दरबारी नर्तक हुआ करते थे। इनका नाम पहले दुखहरण रखा गया था, क्योंकि ये जिस अस्पताल में पैदा हुए थे, उस दिन वहां पर इनके अलावा केवल कन्याओं का ही जन्म हुआ था, इस कारण इनका नाम बृजमोहन रख दिया गया। यही नाम आगे चलकर बिगड़ कर "बिरजू" और उससे "बिरजू महाराज" हो गया।

इन्होने अपने चाचा लच्छू महाराज एवं शंभू महाराज से गायन का प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा अपने जीवन का प्रथम गायन इन्होने सात वर्ष की आयु में दिया। 20 मई,1947 को जब ये केवल नौ वर्ष के ही थे, इनके पिता का निधन हो गया। इसके कुछ वर्षों बाद इनका परिवार दिल्ली में आकर रहने लगा।

ब्रिजू महाराज ने मात्र 13 वर्ष की आयु में ही नई दिल्ली के संगीत भारती में नृत्य की शिक्षा देना आरंभ कर दिया था। इसके पश्चात उन्होंने दिल्ली में ही भारतीय कला केंद्र में शिक्षण शुरू किया। कुछ समय के बाद इन्होंने कथक केंद्र (संगीत नाटक अकादमी की एक इकाई) में शिक्षण कार्य आरंभ किया। यहाँ ये संकाय के अध्यक्ष थे तथा निदेशक पद पर भी कार्यरत रहे। यहाँ से वर्ष 1998 में सेवानिवृति के बाद "कलाधाम" नाम से दिल्ली में ही एक नाटक विद्यालय की स्थापना भी की थी।

इन्होने सत्यजीत राय की फिल्म "शतरंज के खिलाडी" की संगीत रचना की तथा उसके दो गानों पर नृत्य के लिए गायन भी किया। इसके अलावा वर्ष 2002 में बनी हिन्दी फिल्म "देवदास" में एक गाने "काहे छोड़ छोड़ मोहे" का नृत्य संयोजन भी किया। इसके अलावा अन्य कई हिन्दी फिल्मों जैसे "डेढ़ इश्किया", "उमराव जान" तथा संजय लीला बंसाली निर्देशित फिल्म "बाजी राव मस्तानी" में भी कत्थक नृत्य के संयोजन किए।

बिरजू महाराज को अपने क्षेत्र में आरंभ से ही काफी प्रशंसा और सम्मान मिले, जिनमें वर्ष 1986 में "पदम् विभूषण, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार तथा कालिदास सम्मान विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इसके अलावा ही इन्हें काशी हिन्दू विश्वविद्यालय एवं खैरागढ़ विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट की मानद उपाधि से भी नवाजा गया। वर्ष 2016 में हिन्दी फिल्म "बाजीराव मस्तानी" में "मोहे रंग दो लाल" गाने पर नृत्य-निर्देशन के लिए फिल्मफेयर पुरस्कार मिला। वर्ष 2012 में फिल्म "विश्वरूपम" में सर्वश्रेष्ठ निर्देशन के लिए "राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार" से सम्मानित किया गया।

शास्त्रीय कथक नृत्य के प्रतिपादक बिरजू महाराज का 17 जनवरी, 2022 को निधन हो गया। भारत के इस सुप्रसिद्ध कलाकार को अश्रुपूर्ण आँखों से हमारी भावभीनी श्रद्धांजली!

♦♦♦

---

**राजभाषा नियम 3 के अनुसार राजभाषा कार्यान्वयन हेतु क्षेत्रों का वर्गीकरण**

| | | |
|---|---|---|
| "क" क्षेत्र | : | बिहार, छतीसगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, झारखण्ड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड राज्य, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली और अंडमान निकोबार द्वीप समूह संघ राज्य क्षेत्र। |
| "ख" क्षेत्र | : | गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब राज्य, चंडीगढ़, दामन व द्वीप, दादरा व नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र। |
| "ग" क्षेत्र | : | उपरोक्त "क" और "ख" क्षेत्र में शामिल नहीं किए गए अन्य सभी राज्य/संघ राज्य क्षेत्र। |

♦♦♦

**श्रद्धांजली**

# राजू श्रीवास्तव

(जन्म : 25 दिसंबर 1963 - 21 सितम्बर 2022)

- सुनीता अरोड़ा,
सह निदेशक

राजू श्रीवास्तव भारत के प्रसिद्ध हास्य कलाकार थे वह मुख्यत: आम आदमी और रोज़मर्रा की छोटी- छोटी घटनाओं पर व्यंग करने के लिए जाने जाते थे।

श्रीवास्तव 1993 से हास्य की दुनिया में काम कर रहे थे। उन्होंने कल्याण जी आनंद जी, बप्पी लाहरी एवं नितिन मुकेश जैसे कलाकारों के साथ भारत व विदेश में काम किया है। वह अपनी कुशल मिमिक्री के लिए जाने जाते हैं। उनको असली सफलता ग्रेट इंडियन लाफ्टर चैलेंज से मिली। इस शो में अपने कमाल के प्रदर्शन की बदौलत वह घर-घर में सबकी जुबान पर आ गए। उन्होंने बिग बॉस 3, में हिस्सा लिया और 2 महीने तक घर में सबको गुदगुदाने के बाद 4 दिसम्बर, 2009 को वोट आउट कर दिए गए।

2010 में, श्रीवास्तव अपने शो के दौरान अंडरवर्ल्ड डॉन दाऊद इब्राहिम और पाकिस्तान पर व्यंग भी किया करते थे लेकिन उन्हें पाकिस्तान से धमकी भरे फोन आए और चेतावनी दी कि वे इन पर व्यंग न करे।

राजू श्रीवास्तव मनोरंजन उद्योग में 1980 के दशक के अंत से एक्टिव थे, लेकिन वह 'द ग्रेट इंडियन लाफ्टर चैलेंज' के पहले सीजन में भाग लेने के बाद लोकप्रिय हुए। उन्होंने 'मैंने प्यार

किया', 'बाजीगर', 'बॉबे टू गोवा' और 'आमदनी अठन्नी खर्चा रुपैया' में एक्टिंग की। श्रीवास्तव जी ने बिग बॉस 3 (Bigg Boss 3) में भी भाग लिया। बाद में उन्होंने कॉमेडी शो, कॉमेडी का महा मुकाबला में भाग लिया। 2013 में, राजू ने अपनी पत्नी के साथ नच बलिए सीजन 6 में भाग लिया। समाजवादी पार्टी (SP) ने 2014 के लोकसभा चुनाव के लिए राजू श्रीवास्तव को कानपुर से मैदान में उतारा। लेकिन 11 मार्च 2014 को श्रीवास्तव ने यह कहते हुए टिकट वापस कर दिया कि उन्हें पार्टी की स्थानीय इकाइयों से पर्याप्त सहयोग नहीं मिल रहा है। उसके बाद, वह 19 मार्च 2014 को भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो गए. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उन्हें स्वच्छ भारत अभियान का हिस्सा बनने के लिए नामित किया।

सीने में दर्द की शिकायत के तुरंत बाद, उन्हें 10 अगस्त 2022 को दिल का दौरा पड़ा, जब वे जिम में व्यायाम कर रहे थे। उनकी एंजियोप्लास्टी हुई और उन्हें वेंटिलेटर पर रखा गया। उनके उपचार के दौरान उनके मस्तिष्क में सूजन देखी गई थी और उनका इलाज भी न्यूरोलॉजिस्ट द्वारा किया गया। जब से उन्हें दिल का दौरा पड़ा, तब से उनकी हालत गंभीर बताई गई और 21 सितंबर 2022 को दिल्ली एम्स में इलाज के दौरान उनकी मृत्यु हो गई। राजू श्रीवास्तव के मौत की खबर आने के बाद पूरे देश में शोक की लहर दौड़ गई। हास्य एवं कमेडी की दुनिया के बेताज बादशाह को नम आंखों से हमारी भावभीनी श्रद्धांजली।

♦♦♦

भारत का वजूद है हिन्दी,
हिन्दी देश के लिए उपयोगी,
हर भारतीय के दिल में मौजूद है हिन्दी
एक सहज अभिव्यक्ति है हिन्दी।

**राजभाषा कार्नर**

# सी-डैक, नोएडा में राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन: रिपोर्ट- 2022-23

- नवीन चन्द्र,
पी.एस.एस.

प्रगत संगणन विकास केन्द्र (सी-डैक), भारत सरकार के इलेक्टॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के तहत एक वैज्ञानिक संस्था है। सी-डैक आज देश में सूचना, संचार प्रौद्योगिकियों एवं इलेक्ट्रॉनिक्स के प्रमुख अनुसंधान एवं विकास संगठन के रूप में उभरा है, जो वैश्विक विकास के संदर्भ में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकीय क्षमताओं को सशक्त बनाने पर कार्य कर रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में निरंतर नए कीर्तिमान स्थापित करने के साथ-साथ सी-डैक, नोएडा संघ सरकार की राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी सक्रिय रूप से कार्य कर रहा है।

इस दौरान इस केंद्र में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी आदेशों का दृढ़तापूर्वक अनुपालन सुनिश्चित और कर्मचारियों को हिंदी में सरकारी कामकाज निष्पादित करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु हिंदी में मूल टिप्पण एवं आलेखन योजना में प्रतिभागिता करने के लिए प्रेरित किया गया । नियमित आधार पर हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन करके कर्मचारियों को हिंदी में सरकारी कामकाज करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। कर्मचारियों में हिंदी के प्रति जागरूकता को बढ़ाने के लिए सी डैक मुख्यालय, पुणे के सौजन्य से प्रति माह “ऑनलाइन राजभाषा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता” का आयोजन किया गया और इसमें अधिक से अधिक कर्मचारियों की भागीदारी सुनिश्चित की गई। वर्ष 2022-23 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय) नोएडा द्वारा इस केंद्र को राजभाषा शील्ड और प्रशस्ति पत्र प्रदान करके सम्मानित किया गया है।

हिन्दी दिवस 2022 के अवसर पर कार्यकारी निदेशक महोदय द्वारा इस केन्द्र की गृह पत्रिका ”अभिव्यक्ति” के 14वें अंक का विमोचन किया गया। इस पत्रिका का डिजिटल संस्करण सी-डैक की वेबसाइट www.cdac.in पर भी अपलोड किया गया है। कोरोना महामारी से बचाव संबंधी सरकारी दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए 14-28 सितम्बर, 2022 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। इस आयोजन के अंतर्गत विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं का ऑनलाइन/ऑफलाइन मोड में सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। जिनमें 43 कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भागीदारी की। इन प्रतियोगिताओं के विजेता/पुरस्कृत प्रतिभागियों का विवरण नीचे दिया गया हैः

इसके अलावा सी-डैक कॉर्पोरेट, पुणे द्वारा अंतर सी-डैक स्तर पर ऑनलाइन मोड में आयोजित की गई विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं में भी इस केंद्र के 24 विजेता प्रतिभागियों ने भाग लिया और 08 कर्मचारियों ने पुरस्कार हासिल करके इस केन्द्र को गौरवान्वित किया।

**केन्द्र स्तरीय प्रतियोगिता**

| प्रतियोगिता का नाम | विजेता का नाम एवं पदनाम |
|---|---|
| **वीडियो प्रस्तुति प्रतियोगिता** | |
| प्रथम पुरस्कार (संयुक्त रूप से) (संयुक्त प्रविष्टि) | श्री आशुतोष कुमार, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी |
| | श्री सुदीप राय, वरिष्ठ परियोजना अभियंता |
| | श्री रितेश कुमार सिंह, परियोजना अभिंयता |
| द्वितीय पुरस्कार | श्री दीपक कुमार आर्य, प्रधान तकनीकी अधिकारी |
| तृतीय पुरस्कार संयुक्त रूप ) (से | श्री अमिय मोहंती, परियोजना अभियंता |
| | श्री नितेश कुमार, कार्यालय सहायक |
| **पॉवर प्रेजेंटेशन (पीपीटीज) प्रतियोगिता** | |
| प्रथम पुरस्कार | श्री भूपेन्द्र कुमार, संयुक्त निदेशक |
| द्वितीय पुरस्कार | श्री दीपक कुमार आर्य, प्रधान तकनीकी अधिकारी |
| **हिन्दी निबन्ध लेखन प्रतियोगिता** | |
| प्रथम पुरस्कार | श्री रवि कुमार सिंह, पी.एस.एस. |
| द्वितीय पुरस्कार | श्री भुबन दास, पी.एस.एस. |
| तृतीय पुरस्कार | सुश्री मिताली जैन, पंजाबी अनुवादक |
| **पोस्टर प्रस्तुति** | |
| प्रथम पुरस्कार | श्री दीपक कुमार आर्य, प्रधान तकनीकी अधिकारी |
| द्वितीय पुरस्कार | श्री आशुतोष कुमार, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी |
| तृतीय पुरस्कार | श्री सुदीप राय, वरिष्ठ परियोजना अभियंता |
| **घोष वाक्य/ब्रीद वाक्य** | |
| प्रथम पुरस्कार | श्री रिषभ सिंह, परियोजना अभियंता |

| | |
|---|---|
| द्वितीय पुरस्कार | श्री अमिय मोहंती, परियोजना अभियंता |
| **ड्राइंग/चित्रांकन प्रतियोगिता** | |
| प्रथम पुरस्कार | श्री आशुतोष कुमार, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी |
| द्वितीय पुरस्कार | सुश्री ललिता रावत, डाटा इन्ट्री ऑपरेटर |
| **स्वरचित कविता प्रतियोगिता** | |
| प्रथम पुरस्कार | सुश्री कांति सिंह सेंघर, प्रधान तकनीकी अधिकारी |
| द्वितीय पुरस्कार | श्री देव कुमार मिश्रा, वरिष्ठ सहायक |
| तृतीय पुरस्कार | सुश्री हिमानी गर्ग, परियोजना अभियंता |
| **शुद्ध हिन्दी : किसमें कितना है दम प्रतियोगिता- 2 व्यक्ति 2 मिनट केवल हिंदी के संग** | |
| प्रथम पुरस्कार | श्री नितेश कुमार, कार्यालय सहायक |
| | श्री राजेश नेगी, कार्यालय सहायक |
| द्वितीय पुरस्कार | श्री देव कुमार मिश्रा, वरिष्ठ सहायक |
| | श्री आशीष असावा, परियोजना अधिकारी |
| तृतीय पुरस्कार | सुश्री पारूल भारद्वाज, पी.एस.एस. |
| | सुश्री कुमारी नीता, वरिष्ठ परियोजना अभियंता |

**कॉर्पोरेट स्तरीय प्रतियोगिता**

| **क्र.सं.** | **प्रतियोगिता** | | **विजेता** |
|---|---|---|---|
| 1 | निबंध लेखन | द्वितीय | श्री रवि कुमार सिंह, पी.एस.एस. |
| 2 | पी.पी.टी. प्रस्तुति | तृतीय | श्री दीपक कुमार आर्य, प्रधान तकनीकी अधिकारी |
| 3 | वीडियो प्रस्तुति | प्रोत्साहन पुरस्कार (संयुक्त प्रविष्टि) | श्री आशुतोष कुमार, प्रधान तकनीकी अधिकारी,<br>श्री सुदीप राय, वरिष्ठ परियोजना अभियंता,<br>श्री रितेश कुमार सिंह, परियोजना अभिंयता |
| | | प्रोत्साहन पुरस्कार | श्री दीपक कुमार आर्य, प्रधान तकनीकी अधिकारी |

♦♦♦

# विभिन्न गतिविधियों की चित्रमय झलकियां

दिनांक 01.02.2023 को आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), नोएडा की 44वीं बैठक में उपस्थित सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुख।

दिनांक 23.08.2023 को आयोजित नराकास, नोएडा की 45वीं बैठक में वर्ष 2022-23 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के लिए राजभाषा शील्ड प्राप्त करते हुए सुश्री सुनीता अरोड़ा, सह निदेशक एवं श्री ओम प्रकाश शर्मा, हिन्दी परामर्शकार।

हिन्दी पखवाड़ा 2022 पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर कार्यकारी निदेशक के साथ विजेता प्रतिभागी।

हिन्दी वाद विवाद प्रतियोगिता में प्रथम विजेता टीम का पुरस्कार कार्यकारी निदेशक से प्राप्त करते हुए सुश्री पारूल भारद्वाज एवं सुश्री कुमारी नीता।

अंतर सी-डैक प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका के निर्वहन के लिए कार्यकारी निदेशक से स्मृति चिह्न प्राप्त करते हुए सुश्री प्रीति राजदान, वरिष्ठ निदेशक।

अंतर सी-डैक निबंध प्रतियोगिता के विजेता श्री रवि कुमार सिंह, पी.एस.एस. कार्यकारी निदेशक से स्मृति चिह्न एवं प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए।

# बच्चों की फुलवारी

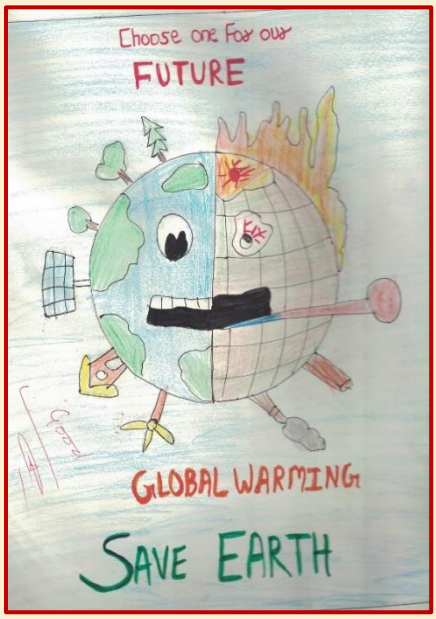

**अनुष्का**
कक्षा दसवीं
सुपुत्री नवीन चन्द्र

**माही भारद्वाज**
कक्षा तृतीय
सुपुत्री काजल

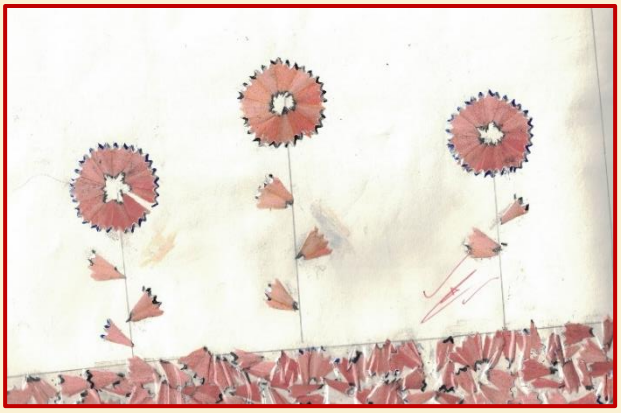

**अनन्या**
कक्षा चौथी
सुपुत्री नवीन चन्द्र

# श्रद्धांजली

## स्व. ललित कुमार शर्मा

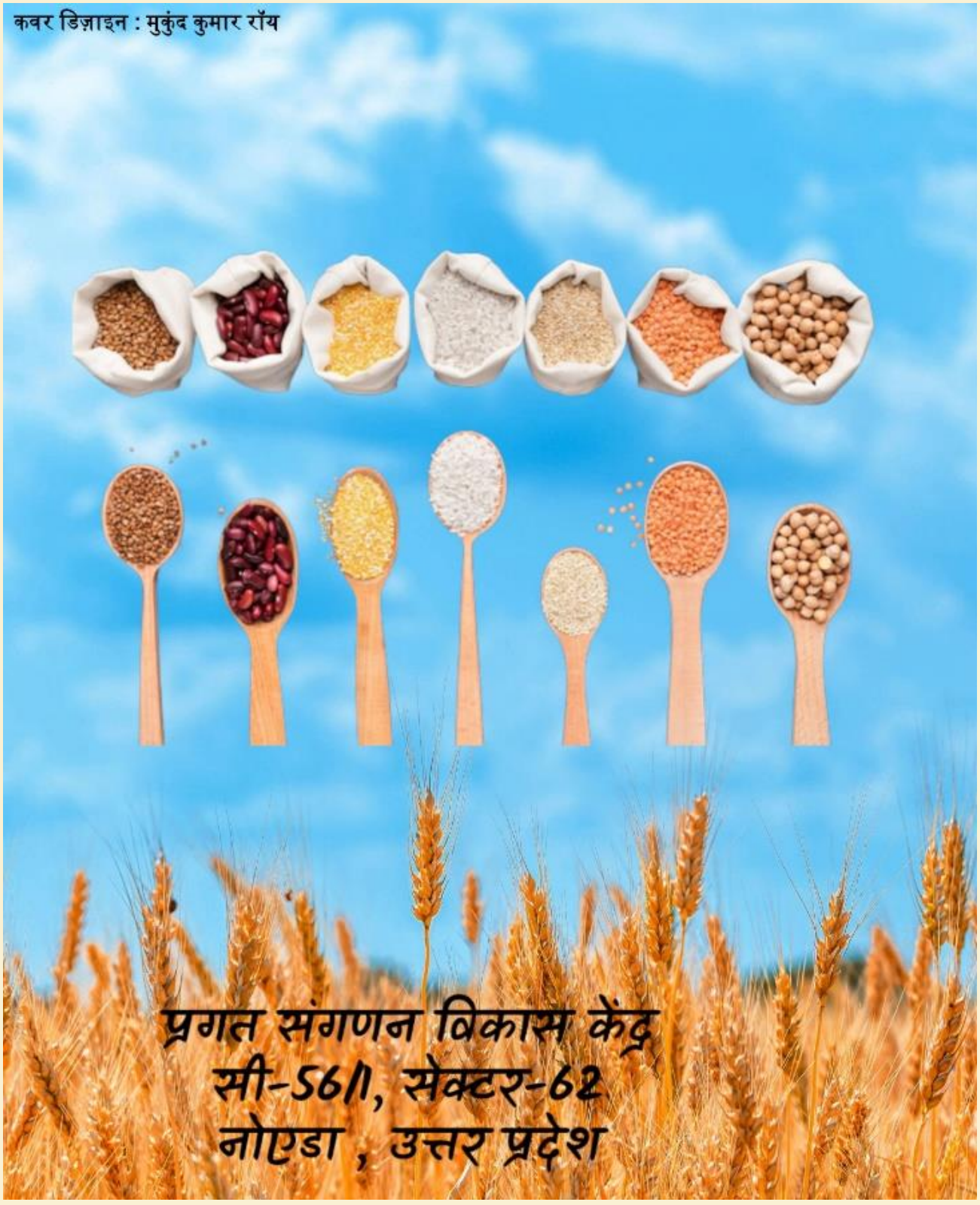
कवर डिज़ाइन : मुकुंद कुमार रॉय
प्रगत संगणन विकास केंद्र
सी-56/1, सेक्टर-62
नोएडा , उत्तर प्रदेश